



फ़ारसी लिपि में उपलब्ध मानस की पाण्डुलिपियों का अध्ययन

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की एम० फिल० उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबन्ध

१९७८

प्रस्तुतकर्ता

अब्दुल अजीज़, एम० ए० (अंग्रेज़ी), एम० ए० (हिन्दी)

निर्देशक

डा० शैलेश जैदी

हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

CHECKED-2002

gvt



DS226

प्राकृष्य

तुलसी हिन्दो के सर्वोष्ठ भक्त कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। 'रामचरित-मानस' तुलसी को ऐशोकालको कृति है, जो न केवल विद्वानों में अपितु जन-साधारण में भी समान रूप से रस का संचार करता है।

'मानस' को लोकप्रियता, पठन-पाठन तथा उपयोगिता से प्रेरित होकर इस पुण्य ग्रन्थ को जितनी पाण्डुलिपियाँ तैयार हुईं, हिन्दो के किसी अन्य ग्रन्थ को नहीं हुईं। मानस के सम्पादन में कुछ विद्वानों के स्वाध्याय, लान और साहित्यिक ईमानदारी से उत्कृष्ट योग दिया है। मूल रूप से सर्व श्री विद्यानन्द त्रिपाठी, विश्वनाथ प्रसादसिंह, प्रज्ञता प्रसाद गुप्त, शम्भु नारायण बीड़े, भावानन्दसिंह बत्रा, नन्द दुलारी बाबूजी एवं जोताराम चतुर्वेदी का सम्पादन कार्य विशेष स्तुत्य है। फिर भी इस दिशा में कार्य करने की गुंजायश आज भी बनी हुई है। कारण यह है कि मानस का सम्पादन अभी तक नागरी लिपि में उपलब्ध प्रतिमाँ, प्रतिलिपियाँ के प्रकाश में हो किया गया है। मानस का जो एक पाण्डुलिपियाँ नस्तालीक़ (फ़ारसी) लिपि में विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित हैं जिनका उपयोग मानस के सम्पादन में नहीं हो सका है। इसी विचार से मैंने फ़ारसी लिपि में उपलब्ध मानस की पाण्डुलिपियाँ के अध्ययन का यह प्रयास किया है।

मानस को अ, इ, ए केवल तीन फ़ारसी लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ, जो अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की नीलाना जाड़ाव लाइब्रेरी में हैं, मैंने अध्ययन में रखे हैं। उन पाण्डुलिपियाँ के अतिरिक्त भी नस्तालीक़ में मानस की जो एक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं जिनके अध्ययन से ही संकलित है कुछ और भी स्वल्प परिणाम निकाले जा सकें। यदि क्वसर भिन्नता तो भविष्य में इन पर भी विचार करने का प्रयत्न करूँगा।

प्रस्तुत अध्ययन मानस के पाठ-पंक्षीय की दिशा में किया गया एक प्रयास है। यदि इस कार्य से मानस के अध्ययन का कुछ नया मार्ग प्रकट हो

हो सका तो ये स्वयं की कृतकृत्य समझूंगा ।

पुस्तक अध्ययन की छः अध्यायों में विभक्त किया गया है जिसका सविष्ट विवरण इस प्रकार है :-

प्रथम अध्याय में मानस की फारसी लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की अपेक्षा तथा उसके प्रति उदासीनता का संकेत करते हुए साहित्य क्षेत्र में व्यापक दृष्टि के साथ तटस्थ निर्णय लेने पर बल दिया गया है ।

द्वितीय अध्याय में आधारभूत प्रमुख प्रतियों का विवरण दिया गया है जिनके आधार पर मानस का सम्पादन होता रहा है । इन प्रतियों की प्रमाणिकता तथा उपयोग - विधि का विवरण देने का प्रयास किया गया है। उ, ङ, तथा स तीन फारसी लिपि में उपलब्ध मानस की पाण्डुलिपियों के आधार पर मानस के पाठ में संशोधन की आवश्यकता का संकेत किया गया है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत मानस की लिखित पाण्डुलिपियों को उ, ङ, स, द्वारा संकेतित किया गया है । इनका सविष्ट विवरण, कोटी स्टेट के साथ दिया गया है ।

चतुर्थ अध्याय के निम्न पाठानुसंधान पर प्रकाश डालते हुए कुछ उदाहरणों को लेकर अर्थ संशोधन सम्बन्धी तटस्थ निर्णयों पर बल दिया गया है ।

पंचम अध्याय में मानस के पृथक-पृथक सौपानों के आधार पर पाठ-भेदों में मानस की उ, ङ, स, प्रतियों का अध्ययन किया गया है ।

अंत में निष्कर्ष - स्वयं अध्ययन से प्राप्त परिणामों का संकेत किया गया है ।

बहु पुस्तक के अन्त में दो परिशिष्ट भी दिए गये हैं । प्रथम परिशिष्ट में उन पाठान्तरों के स्थान दिया गया है, जो लेखक की दृष्टि में मानस का मूल अर्थ प्रतीत होते हैं । दूसरे परिशिष्ट में उपलब्ध प्रमाणिकता की स्थान दिया गया है । अन्त में पुस्तक अध्ययन से सम्बन्धित सहायक ग्रन्थों की सूची दी गई है ।

प्रस्तुत कि गौध - पुस्तक को इस रूप में प्रस्तुत करने में मुझे गुरुदेव
श्री श्री गुरुदेव ने जी स्नेहपूर्ण मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ है उनके लिए उनका
आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता होगी । कारण यह है कि आभार
व्यक्त करते में एका नहीं हो सकता ।

मिनीत

अब्दुल अजीज

{ अब्दुल अजीज }

एम०ए० { अंग्रेजी } , एम०ए० { हिन्दी }

दिनांक अगस्त 1978

शोधार्थी , हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय, अलीगढ़

१- प्रस्तुत अध्ययन का आवश्यकता और उसकी उपयोगिता ।	- १-४
२- रामचरितमानस के उपलब्ध संस्करण और उसकी सम्पादन विधि ।	- ५-१४
३- मानस की विवेक्य पाण्डुलिपियाँ का परिचय ।	- १५-२१
४- पाठानुसंधान तथा अन्य संशोधन सम्बन्धी कतिपय मुद्दाय ।	- २२-३३
५- विवेक्य पाण्डुलिपियाँ के बाधार पर रामचरितमानस का पाठ-पैर :-	-
प्रथम शीपन (बालकाण्ड)	- ३४-५३
द्वितीय शीपन (अयोध्या काण्ड)	- ५४-६३
तृतीय शीपन (कारण्य काण्ड)	- ६४-६५
चतुर्थ शीपन (शिविका काण्ड)	- ६६-६८
पंचम शीपन (सुन्दर काण्ड)	- ६९-७६
षष्ठ शीपन (लंका काण्ड)	- ७७-९३
सप्तम शीपन (उत्तर काण्ड)	- ९४-१००
६- निष्कर्ष	- १०१-१०२
परिशिष्ट -	-
१- विवेक्य पाण्डुलिपियाँ की कौटो प्रतियाँ	- १०३-१०५
२- पाठानुसंधान	- १०६-११८
३- प्रतिलिपि	- ११९
४- सहायक ग्रन्थों की सूची	- १२०

प्रथम अध्याय



प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता
वीर उसको उपयोगिता

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता और उसकी उपयोगिता

रामचरितमानस के पाठ का अध्ययन सामान्य रूप से नागरी और कयो लिपियाँ में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ के आधार पर किया गया है। मध्ययुगीन हिन्दो साहित्य को प्रचुर सामग्री नस्तालीक़ (फ़ारसी लिपि) कारी में प्रकाशित एवं हस्तलिखित रूप में विश्व के अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकालयों में उपलब्ध है। वस्तुतः मध्ययुगीन हिन्दो साहित्य का वैज्ञानिक सम्पादन इन हस्तलिखित रूपों प्रकाशित ग्रन्थों का उपयोग किए बिना पूर्णतः सम्भव नहीं है। मलिक मोहम्मद जायसी के साहित्य में हिन्दो शायकों ने इस प्रकार की सामग्री का पर्याप्त उपयोग किया और नस्तालीक़ लिपि में प्राप्त पाण्डुलिपियाँ के आधार पर पदमावत अठरावट, आज़िरी कलाम तथा चित्ररत्नावादि ग्रन्थ प्रकाश में आए। जायसी के अतिरिक्त अन्य सूफ़ी कवियों की रचनाओं का सम्पादन करते समय भी इस पद्धति का उपयोग किया गया, किन्तु हिन्दो के वैष्णव भक्त कवियों की काव्य कृतियों का सम्पादन करते समय नस्तालीक़ लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ को और ही उदासीनता से चरते गये।

विश्व में अनेक पुस्तकालय ऐसे हैं जिनमें मध्ययुगीन हिन्दो साहित्य की सामग्री नस्तालीक़ लिपि में सुरक्षित है। इंडिया वाकिंग सन्धन, ब्रिटिश म्यूज़ियम, कुतुबख़ानएबाम अजुमन तरकी उर्दू पाकिस्तान, एवं पंजाब पब्लिक लाइब्रेरी लाहौर आदि में मध्ययुगीन हिन्दो साहित्य को पर्याप्त सामग्री सुरक्षित है। भारतीय पुस्तकालयों में बीताना आज़ाद लाइब्रेरी, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, बुदावतस लाइब्रेरी फटना, राजा स्टेट लाइब्रेरी रामपुर, स्टेट ऐन्ड्रस लाइब्रेरी (कुतुबख़ान-ए-आसफ़िया) हैदराबाद तथा सातारख़ान पुस्तकालय हैदराबाद विशेष उल्लेखनीय हैं।

मध्ययुगीन हिन्दो काव्य साहित्य की दृष्टि से अलीगढ़ मुस्लिम

विश्वविषयको को पीलाना वाजाद लाहरो सवाकिक महत्वपूर्ण है ।

डा० माताप्रसाद गुप्त ने मूर वागर का उत्पादन करने हेतु मुस्लिम विश्व-विषयको की एक दुर्लभ पाण्डुलिपि को भाग्यशक्ति प्रसिद्ध पुस्तकालय में बनाई थी किन्तु उनका अस्मात् निष्पत्ती हो जाने के कारण यह कार्य पूर्ण रूप से तैयार हो जानेपर भी अभी प्रकाश में नहीं आ सका । डा० आनन्द प्रकाश बोधिया ने भी 'कैलाश' के ग्रन्थ को टोकार्वा के संदर्भ में यहाँ के पुस्तकालय में खोजा जा लाया । रामचरितमानस के पाठ का अध्ययन करने की दृष्टि से भी मुस्लिम विश्वविषयको को पाण्डुलिपियाँ अपनी महत्व रखती हैं ।

पैरो दृष्टि : जब ^{२३}पाण्डुलिपियाँ पर पड़ी तो मैं उनके आधार पर मानस का पाठ संक्षिप्त तैयार करनेका निश्चय किया । यद्यपि यह कई हो परिणाम और अध्ययन का कार्य था किन्तु धीरे-धीरे इस कार्य को समाप्त करने के पश्चात् मुझे साप्रतीत हुआ कि यदि अन्य पुस्तकालयों में उपलब्ध मानस को नस्तालीक़ में लिखा हुई प्रतियाँ भी आधार बनाई जायें तो एक महत्वपूर्ण पाठ प्रकाश में आ सकता है ।

नस्तालीक़ लिपि के प्रति हिन्दी विद्वानों को बढ़ते हुई उदासी-नता मध्ययुगीन साहित्य के अध्ययन एवं शोध को दिशा में एक स्वस्थ चिह्न नहीं है । लिपि के आवरण मात्र से किताबों की कृति का साहित्यिक महत्व पटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता । नस्तालीक़ लिपि में लिखी हुई हिन्दी की साहित्यिक कृतियाँ हिन्दी का हो बाहर रहती । फ़ारसी काव्य देवनागरी लिपि में लिखने मात्र से हिन्दी अथवा संस्कृत की निधि नहीं बन सकता । वस्तुतः जिस युग में, जिस देश में, जिस लिपि का प्रचार और प्रसार होता है, उस युग और देश का साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उसी प्रचलित लिपि में सुरक्षित किया जाता है । मध्ययुग में नस्तालीक़ लिपि भारत की राजकाय लिपि थी । विशेष रूप से उसी भारत में उस लिपि का प्रचलन अभी जाति और वर्ग के लोगों में था । यही कारण है कि मध्य युग में हिन्दू धर्म से

संबंधित हिन्दी और संस्कृत के ग्रन्थ भी नस्तालीक़ में लिखे गये।

साहित्य जनजीवन की वस्तु है और जनजीवन के साथ एक स्वर होकर ही वह विकास की ओर बढ़ता है। यही को सोमाजी है साहित्य को सोमारे कहीं बढ़ो और ऊँची होती है। साहित्य यही है उसका सत्य, शिव एवं सुन्दर अवश्य प्राप्त करता है किन्तु यही को संकोणितार्थों की बढ़कर संकोणी ही जाना नहीं जानता। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य विभिन्न कर्मा और सम्प्रदायों का विचारधारा से चिह्नित एवं विकसित होकर समृद्ध हुआ है, किन्तु उसको सुनियार्थ मानवीयमूल्यों पर ही आधारित है। फलस्वरूप यही का शुभल पक्ष साहित्य-निधि तो बना है किन्तु कृष्ण पक्ष की विशुद्ध साहित्य ने स्वीकार नहीं किया। नस्तालीक़ लिपि में उपलब्ध अनेक वैष्णव कवियों की रचनाएँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि नस्तालीक़ कारा^{में} वैष्णव यही की पवित्रता की कोई ठेग नहीं पहुँची अपितु वह ही माध्यम बनाकर जनजीवन में प्रविष्ट होने में सफल हुआ है।

नस्तालीक़ में सुरक्षित हिन्दी को साहित्यिक कृतियों के सम्पादन का कार्य आज बहुत आवश्यक हो गया है। ऐसा न होने की स्थिति में हिन्दी के एक विशाल भंडार के बंधकार में रह जाने की संभावना बनो रहती है। युग की आवश्यकता की उपभूति हुए यही रामचरितमानस की नस्तालीक़ पाण्डुलिपियों का अध्ययन प्रारम्भ किया। नस्तालीक़ कारा^{में} के साथ लिपि-कारा^{में} में 'ज़ेर', 'ज़्वर', 'पैश' आदि एराध स्वर चिह्न लाने की परंपरा सामान्य रूप से नहीं मिलती। इसी ग्रन्थ के अध्ययन में कठिनाई तो अवश्य होती है किन्तु केवल इस कठिनाई को ध्यान में रखकर इस कार्य की करने की ओर प्रेरित न होना भी उपयुक्त नहीं है। वास्तव में इस प्रकार के प्रयासों से सम्बन्धित-साहित्य की जान हो पहुँच सकता है। यही इस अध्ययन से जो तम्य प्रकाश में आए हैं उन्हें यद्यपि अद्भुत तो नहीं कहा जा सकता किन्तु मानस

के अध्ययन क्षेत्र में, उनके प्रकाश में कुछ नवीन दिशाएं व्यक्त मिलती हैं ।
 इस दृष्टि से यह कार्य महत्वपूर्ण एवं उपादेय भा कहा जा सकता है ।

द्वितीय अध्याय



राजपरिचर्या के उपलब्ध संस्करण
और उनकी संपादन विधि

रामचरितमानस और भारतीय जन-जीवन

रामचरितमानस वस्तुतः मानव मूर्त्यो को एक नैसर्गिक उत्कृष्ट, चिरस्थायी एवं अनुपम उपलब्धि है जो न केवल भारतीय समाज के सभी वर्गों द्वारा अपितु विदेशों में भी सम्मानित, समादृत होकर यथोचित स्थाति प्राप्त कर चुका है। लोक भाषा कवियों में रचित यह महाकाव्य लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण, भारतीय संस्कृति के समष्टि रूप का दर्पण एवं भक्तों के लिए ब्रह्मानन्द का अमर सागर है। भारतीय संस्कृति का जितना स्पष्ट दर्शन इस महाकाव्य में होता है वह अन्यत्र किसी ग्रन्थ में दुर्लभ है। संभवतः यही कारण है कि यह ग्रन्थ भारतीय जन-जीवन में व्याप्त हो गया और उसके पाठ्यन से जन-जन में राम रम गये।

रामचरितमानस के उपलब्ध संस्करण :

‘मानस’ के अब तक पचासी संस्करण प्रकाश में आ चुके हैं। विवेच्य विधाय का प्रणयन करने से पूर्व मानस के कुछ प्रमुख संस्करणों का उल्लेख करते हुए संपादकों की दृष्टि पर विचार करना यहाँ कीर्तित जान पड़ता है।

- १- रामचरितमानस - संपादक प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र काशिराज
संस्करण १९६२, रामनगर दुर्ग, वाराणसी।
- २- रामायण तुलसीकृत - (सार्ता काण्ड सवित्र), लेखक दुर्गाप्रिय, कैदार
प्रभाकर शापाखाना काशी (संवत् १९१६ वि०)।
- ३- तुलसी ग्रन्थावली (तीन भागों में) - प्रो० रामचन्द्र शुक्ल, लाला भावानंदोंन
लाला बालू प्रवरत्नवास द्वारा संपादित, नागरी
प्रचारिणी सभा, काशी (सं० १९८०)
- ४- तुलसी ग्रन्थावली (भाग १, ३६ १, २), साहित्य कुटीर प्रकाश
सन् १९४६ ई० - संपादक माता प्रसाद गुप्त।

- ५- तुलसी ग्रन्थावली - संपादक माताप्रसाद गुप्त, हिन्दुस्तानी रेकॉर्डिंग,
इलाहाबाद ।
- ६- रामचरितमानस - रामनरेश त्रिपाठी कृत टोका सहित,
हिन्दा मंदिर, प्रयाग (सं० १९६२) ।
- ७- रामचरितमानस - विद्यानंद त्रिपाठी द्वारा संपादित भारतीय भण्डार,
काशी, (सन् १९३७) ।
- ८- रामचरितमानस - पं० पुष्पाकर द्विवेदी, बाबू राधाकृष्ण दास,
डा० रामसुन्दरदास, बाबू कार्तिक प्रसाद तथा बाबू
अमोर सिंह द्वारा संपादित, इंडियन प्रेस, प्रयाग
(सन् १९०२) ।
- ९- रामचरितमानस - रामकिशोर वकोत द्वारा संपादित,
नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ (सन् १९२५)
- १०- रामचरितमानस टोका - महावीर प्रसाद मात्सोय बैतखीडियर प्रेस,
प्रयाग, संवत् १९८२ ।
- ११- रामचरितमानस - स्वामी अथर्वशारदादास परमहंस, त्रिवेणी बांध
गुफा, दारगंज, प्रयाग, संवत् १९८६ ।
- १२- रामचरितमानस - (चिदात्त-तिलक सहित) संपादक श्री कालचरण
पुस्तक भंडार, पटना-४, सं० २०१६ ।
- १३- रामचरितमानस - (टो० रामनरेश त्रिपाठी) प्र० संवत् १९६२ वि०
राजकमल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
- १४- रामचरितमानस - मानस बालक पोयुषा, संपादक अमोनन्दन शरण,
गोला प्रेस, गौरखपुर, सं० २०१७
- १५- तुलसी ग्रन्थावली - तीसरा संस्करण, संपादक रामचन्द्र कुबल आदि,
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं० २००४
- १६- रामचरित मानस - गीता प्रेस, गौरखपुर (सं० १९६०)

नोट :- गोता प्रेस, गोरखपुर से रामचरितमानस के प्रकाशन के अतिरिक्त कल्याण पत्रिका के अन्तर्गत विज्ञान मानसार्थक भी प्रकाशित होते रहे हैं। ये मानसार्थक सं० १९६५ से २००१ तक ७६५०० प्रतियाँ के बाठ संस्करण हुए चुके हैं। नवी संस्करण १५००० प्रतियों का बावण १९६५ आस्त १९३५ में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक सच० पो० पौद्गार जी० सी० एल० गोस्वामी ए० ए० शास्त्री जी० हैं। प्रिन्टर् प्रकाशक फारुखदास बालान गोता प्रेस, गोरखपुर। पृ० ६२६ टोका उल्लिखित पूर्ण।

१७- तुलसी ग्रन्थावली - प्रथम खण्ड - (रामचरितमानस) - मूल सम्पादक रामचन्द्र गुप्त, भावानन्दोन्न, ब्रह्मदास, प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा, मुद्रक शुभाय बाजपेयी नागरी मुद्रण, वाराणसी, सं० २०३०।

मानस के सम्पादन में संपादकों की दृष्टि :

रामचरितमानस का मौलिक, प्राभाषिक एवं ठोक पाठ प्रस्तुत करने के लिए ग्रियर्सन ने लेकर जब तक जोरक विद्वानों ने प्रयास किया। विभिन्न सम्पादकों के विभिन्न संस्करणों एवं विभिन्न प्रतिलिपिकारों का विभिन्न मानस का प्रतिलिपियों के पाठों में अंतर मिलता स्वाभाविक हो है। समय - समय पर विद्वानों ने विभिन्न पाठ-पैदा को सहायता से मानस (ग्रन्थ) का सम्पादन किया है और निरन्तर ही उनके इन प्रयासों द्वारा तुलसी साहित्य को फलपुष्ट सेवा हुई है।

इतना सब कुछ होते हुए भी मानस के मूल पाठ की समस्या अब भी चुनक नहीं पाई है। इतने विभिन्न पाठ-पैदा के बीच पाठक किस प्रकार सन्धि रचयिता के स्वरूप के पाठ तक पहुँचे ?

‘मानस’ के सम्पादन में किन विद्वानों के प्रयास विशेष उल्लेख्य हैं उनमें रामचन्द्र शुक्ल, ताता माताजीन, बाबू प्रवरत्नदास, नन्ददुलारी बाबूजी, प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, बीर डा० माताप्रसाद गुप्त प्रमुख हैं । ‘मानस’ के पाठ की प्रस्तुत करने में प्रायः सम्पादकों ने निम्नलिखित दृष्टि-कीर्ण अपनाया है ।—

- अ- सम्पूर्ण ग्रन्थ के लिए किसी एक प्रति का पाठ लेकर अधिक से अधिक मुद्रा का मार्ग करते हुए ।
- ब- किन्हीं विशेष काण्डों के लिए किन्हीं विशेष प्रतियों के पाठ और शेष के लिए किसी अन्य प्रति का सम्पादित संस्करण का पाठ लेते हुए ।
- स- सम्पूर्ण ग्रन्थ के लिए एक से अधिक प्रतियों का सम्पादित संस्करणों के पाठ लेकर जहाँ पर जो पाठ ठीक होता है उसकी ग्रहण करते हुए ।
- द- सम्पूर्ण ग्रन्थ के लिए समस्त बख्शिय और कंसदिय का विश्लेषण करके निकाले हुए व्यापक विद्वानों का सुधारण करते हुए ।⁷⁸

डा० माताप्रसाद गुप्त ने उपर्युक्त चारों विधियाँ पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए अपने संपादन में चौथी विधि का सुधारण किया है । अतः यहाँ ^{पुनरावृत्ति} की आवश्यकता नहीं ।

‘मानस’ के सम्पादन में किन प्रतियों का सम्पादकों ने उपयोग किया है, उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

- १- ई० १७२१ वि० की प्रति - यह प्रति कुना भारत कता भवन काशी में सुरक्षित है । इसका कभी-कभी काण्ड छाप्य है । स्थान - स्थान पर संशोधन की स्वच्छन्दतापूर्वक किया गया है ।

- १- तुलसी ग्रन्थावली (भाग ६-१, खण्ड-२) संपादक माता प्रसाद गुप्त, हिन्दुस्तानी रकैडमी - इलाहाबाद, १९०६ के बाजार पर

- २- सं० १७६२ वि० की प्रति - यह प्रति नागरी प्रचारिणी सभा काशी के भूतपूर्व पुस्तकाध्यक्ष स्वर्गीय पं० संतु नारायण चौधरी के संग्रह में थी । प्रस्तुत प्रति उपर्युक्त सं० १७२१ वि० की प्रति की प्रतिलिपि प्रमाणित ही चुकी है ।
- ३- सं० १६६१ वि० की बास काण्ड की प्रति - यह प्रति भावणार्जुन जीव्या में सुरक्षित है । यह प्रति १६६१ वि० की मानी जाती है । इसे वास्तव में '६' की संख्या की '६' में परिवर्तित करके कवि के जीवन काल को बताई गई है । इस प्रति में भी पाठ-संश्लेष स्वच्छ-व्यतापूर्वक किया गया है ।
- ४- जीव्या काण्ड की सुप्रसिद्ध राजापुर की प्रति - इस प्रति के अंत में कोई प्रशिका नहीं मिलती ।
- ५- सं० १७१० वि० वाली सच्ची प्रति की इस समय काशी नरेश के सरस्वती मंदार में है ।
- ६- मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामावली श्री रामकुलाम की के शिष्य हस्तलिखित की प्रति की प्रतिलिपि, जिसे क० पं० मुवाकर द्विवेदी के पिता ने प्रस्तुत किया था ।

यह बात अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि जब तक जितने भी मानस के संस्करण प्रकाश में आए, उन सब में प्रायः उपर्युक्त प्रतियाँ जवाब इनपर आधारित प्रतियाँ का ही उपयोग किया गया है । इन प्रतियों के अतिरिक्त मानस के संपादकों ने किन अन्य प्रतियों का उपयोग किया है उनका संक्षिप्त परिष्कारात्मक विवरण प्रस्तुत कर देना भी आवश्यक जान पड़ता है -

- ७- रघुनाथ दास की प्रति - जो इस समय व्याप्य है किन्तु इसी के आधार पर सं० १६२६ में काशी से ग्रन्थ का एक संस्करण प्रकाशित हुआ था । भागवतदास सत्रो के संस्करण की तुलना में पं० संतु नारायण चौधरी ने अपनी

‘रामचरितमानस’ के पाठ-पैर’ शीर्षक पर महत्वपूर्ण छंद इसी संस्करण के बाजार पर प्रकाशित कराया था । किन्तु इस प्रति का कोई कौटो-स्टीट बिच को कभी प्रकाशित नहीं हुआ ।

८- बदन पाठक की प्रति - यह भी व्याप्य है किन्तु इसके बाजार पर सं० १६४६ वि० में काही है ‘रामचरितमानस’ का एक और संस्करण प्रकाश में आया जिसके बाजार पर चीन्हे जो ने पाठ-पैर का उल्लेख किया ।

९- सं० १७०४ वि० की प्रति - श्री श्री काशिराय के संग्रह में है ।

१०- कीचवराम की प्रति - जो अब व्याप्य है किन्तु इस पर वापुस सं० १६५३ वि० में और पुनः सं० १६६५ वि० में श्री बंटेस्वर प्रेस, बम्बई है ‘रामचरित मानस’ के संस्करण प्रकाशित हुए थे ।

११- बालकाण्ड की एक प्रति - यह सं० १६०५ वि० की है और हिन्दू बना, गुंजरा बापशास्त्र कि जीनपुर के पुस्तकालय में है ।

१२- सुन्दर काण्ड की एक प्रति - श्री डा० गुप्त जी की बहीरिन्पुर परगना गुंजरा कि जीनपुर के स्वामीय फं फंकाय उमा से प्राप्त हुई की ।

१३- लंकाकाण्ड की दो प्रतियाँ - प्रस्तुत प्रतियाँ श्री डा० माता प्रसाद गुप्त की स्वामीय फंकाय उमा से प्राप्त हुई ।

१४- वरुणकाण्ड की एक प्रति - श्री मिर्जापुर निवासी श्री हरिदास पठाण के पास है ।

किसी बात की अधिक स्पष्ट करने के लिए यहाँ मानस के मुख्य संस्करणों का उल्लेख किया जा रहा है -

१- पुष्पीग्रन्थावली प्रथम खण्ड (रामचरितमानस) सं० २०३०

प्रस्तुत संस्करण के वक्तव्य में संपादक मंडल (नानरी प्रचारिणी सभा, काशी) ने जिन प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ का उपयोग किया है -

- (१) रावापुर का हस्तलिखित कपीआकाण्ड जी गीस्वामी के हाथ का लिखा माना जाता है ।
- (२) कपीआ की प्रति (बालकाण्ड) जी गीस्वामी जी के परतीआस के ११ वर्षी पोढ़ी की लिखी हुई है ।
- (३) काशिराज की प्रति ।
- (४) सा० इक्कनलाल का इपाया लोणीवाला संस्करण जी मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी पं० रामकुआम द्विवेदी की प्रति के आधार पर रखा था ।
- (५) बदल्लिम का संस्करण जी बि० सं० १८६३ में कलकत्ते में रखा था ।
- (६) डेढ़ सौ वर्षी की लिखी एक हस्तलिखित प्रति ।

उपर्युक्त के अतिरिक्त पाठ-पेर्वा के लिए अन्य प्रतियाँ एवं संस्करणों का मिलान भी किया गया है । कुछ ठगुर्वा के रूप लिए करने का यत्न भी किया गया है। प्रामाणिक प्रतियाँ के आधार पर संस्करण की प्रकाशित करना और साथ ही अन्य प्रामाणिक , अग्रामाणिक, नवीन संस्करणों के आधार पर पाठ-पैर किये गए हैं ।

२- धानवर्गिक (प्रथम खण्ड) - गीरतपुर १९६५ भाषण , अस्त १९३८

प्रस्तुत संस्करण की प्रकाशित करने में भी (१) जी कपीआ की के भाषण पुंज का बालकाण्ड जी सं० १९६१ का लिखा माना जाता है (२) रावापुर का कपीआ काण्ड जी जी गीस्वामीजी के हाथ का लिखा कहा

जाता है (३) हुल्लि का मुम्बर काण्ड जी सं० १६३२ का लिता है और गीस्वामी जी के हाथका लिता माना जाता है (४) शेष बारी काण्डा जी श्री भागवतदास जी की प्रति कैवाचार पर पाठ संदीप्त और रावापुर को प्रति में प्राप्त व्याकरण के अनुसार फं० श्री विष्णुनारायण जी गीस्वामी और नन्दबुधारे बाबूजी नेरुंकरण की अपने योग्य बनाया । प्रस्तुत संस्करण में श्री उपाधक ने मानस के पाठान्तरी पर पर्याप्त प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है ।

पुस्तो ग्रन्थावली (भाग १, कण्ड २) :

डा० पाता प्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ में कौन पाठ कैदी के बीच कौन सा पाठ ग्रहण किया जाय उस पर विचार किया गया है । सम्पूर्ण ग्रन्थ के लिए समस्त बलिष्ठदिय और बन्तदिय का विरले-पाण करके निकाले हुए व्यापक विद्वान्ता का सुधारण करते हुए पाठ ग्रहण करना ।

“बलिष्ठदिय है तात्पर्य है वह प्रकाश जी पाठ समस्या पर विभिन्न प्रतियोगी है प्राप्त होता है । अन्तर्धादय है तात्पर्य है वह प्रकाश जी पाठ समस्या पर कवि की विचारधारा, प्रयोग का आवश्यकता तथा कवि को माना और शास्त्रिक प्रयोगवादि को प्रवृत्तियों से पड़ता है ” ।^२

जाने बतकर डा० गुप्त ने इस प्रकार पाठ ग्रहण करने में उत्कर्षता को आवश्यकता बताई है । यदि ऐसा न किया गया तो उपाधक अपने पाठ

१- पुस्तो ग्रन्थावली भाग १, कण्ड २ (सं० पाताप्रसाद गुप्त) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, बसावाबाद, पू० सं० ६

२- वही, पू० सं० ७

का आरोप कवि के स्वयं रचित पाठ से विन्य कर देना और ऐसी स्थिति में वह पाठ कवि का मौखिक पाठ न होकर संपादक का अपना कृत हो पाठ ही सकता है ।

प्रस्तुत संस्करण के पाठ ग्रहण करने हेतु संपादक ने चार शाखाओं का विवरण (जिसकी चर्चा पहले हो चुकी है) करते हुए प्रत्येक शाखा की संकेताक्षर से विज्ञान का यत्न किया है । प्रत्येक स्थिति के लिए स्वीकृत पाठ उक्त शाखा का संकेताक्षरदेते हुए दिया गया है । और क्वो-कुस पाठ प्रत्येक का निरूपण करते हुए चौकीर कोष्ठकों में दिया गया है । ग्रन्थ में प्रत्येक प्रकार - विन्यास पर भी संक्षेप में विचार किया गया है ।

उपर्युक्त संस्करणों पर दृष्टिपात के परभाव एवं निष्कर्षपर पहुंचा जा सकता है -

‘पाठा’ के संपादन में जो पाठ प्राचीन और प्रामाणिक है उन्ही की संस्करण में रहने का सातार प्रयत्न होता रहा है । इतना ही नहीं विविध प्रतिलिपियाँ, संस्करणों में प्राप्त पाठ-वैधों पर भी पर्याप्त विचार विमर्श किया गया है ।

गोस्वामी जी ने (प्राचीन वैदिकान्तरी लिपि के, जसा हिन्दी भाषा के लेखकों को शैली के अनुसार) स) ण, छ, टा, प, य, ह - के बदले क्रम से ण, न, स, ष, क, य, री, इन वर्णों का प्रयोग किया है । बहुत ही संस्करणों में देखा हो मिलता है किन्तु कहीं-कहीं बदली का भी यत्न किया गया है । ऐसी दशा में पाठ-वैधों में भी प्रभाव पड़ा है । पाठ-वैधों के अतिरिक्त लिखने कोशिली, अक्षरों के रूप, वर्णों, दीर्घों की संख्या आदिमें बड़ा अन्तर है । मुख्य रूप से प्रकाशित संस्करणों में जितने भी लक्ष्य लक्ष्य हैं उन्हें तत्सम रूप देने का प्रयत्न होता रहा है । प्राचीन प्रतियाँ में वर्ण एक स्थान पर कई - कई दीर्घ मिलते हैं, प्रकाशित संस्करणों में ही कुछ प्रतियाँ

(उत्स्कर्णा) में वीर्ही की संस्था बल - बल दे दी गयी है । ऐसी दशा में वीर्ही की संस्था में विभिन्नता देखने में आती है।

कहीं कहीं मूल शब्द के किसी अकार पर अनुस्वार का चिह्न लगाकर उसे धातुनासिक बनाया गया है । जैसे राय, सुभाय, नदी आदि के ध्यान पर रायं, सुभायं, नदीं । कहीं - कहीं 'य' के स्थान पर 'उ' मिलता है । यथा राय है राउ सुभाय है सुमाउ आदि । कुछ शब्द ऐसे हैं जिनसे धातुनासिक और अनुनासिक दोनों प्रकार के प्रयोग प्राचीन पीछियाँ में मिलते हैं - ते - तै, बाढ़ - बाड़ि, पूक - पूँक, बिरसि - बिरँसि, बाबा - बाँबा आदि। इसी प्रकार वर्तमान, आज्ञा, विधि तथा भविष्यकाल को श्रियावाँ के प्राचीन पीछियाँ में दो प्रकार में रूपान्तरित है । यथा करह - करै (करता है या करे) करउ - करों । उच्छरी, करउं - करों (मैं करता हूँ या करें), करिहूँ-करिहीं (मैं करूँगा) इत्यादि । इनके मूल रूप क्रमशः करह, करउ, करउं और करिहूँ या करिहीं - ऐसा प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'मानस' के छह पाठ-नेत्र, शब्द-भेद आदि भेदों के बीच पाठक को पाठ ग्रहण करना होता है । पाठानुसंधान का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना अपरिहार्य है । इस दिशा में जिस शब्द का भेद रूप पीछियाँ अपना प्रतिस्विकर्षी में प्राप्त हो वेसा ही रहा जाय तो प्राचीनता के साथ पीछितता को देखो । अपनी ओर से संशोधन करना न केवल पुस्तिकार की कृति में निरावार हस्तक्षेप करना अपितु वैज्ञानिकता और सत्य से दूर रहना भी है ।

द्वितीय अध्याय

मानव को विविध पाण्डुलिपियाँ
का परिचय

फ़ारसी लिपि में उपलब्ध मानस की प्रतियाँ की उपेक्षा

हिन्दी साहित्य के अनेक प्राचीन ग्रन्थ फ़ारसी लिपि में, भारत के इस्लामी पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। दुर्भाग्यवश इस और बहुत कम ध्यान दिया गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं। पहला एक है अधिक भाषाओं और लिपियों के ज्ञान का अभाव और दूसरा शीघ्र की दृष्टि एवं दूरदर्शिता की उपेक्षा।

राजपरितोषमानस की फ़ारसी लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ, रायपुर, पटना, बंशीपुर तथा मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में संग्रहीत हैं। अब तक मात्र नागरी लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की बाजार बिक्री मानकर पाठानुबंधन का कार्य किया गया है। मानस की फ़ारसी लिपि में उपलब्ध प्रतियाँ की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः इस दिशा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

यद्यपि नागरी लिपि में उपलब्ध मानस की पाण्डुलिपियाँ पर बहुत कुछ कार्य हो चुका है किन्तु ऐसा भी नहीं कि यह कार्य सम्पूर्णता की प्राप्ति हो चुका हो। ऐसी स्थिति में अनुबंधनकर्ता की उन दिनें कुछ कठारों का संकलन करना अनिवार्य होगा जहाँ से अब तक हिन्दी साहित्य को अमूल्य पाण्डियाँ प्रकाश में नहीं आई हैं। इस दिशा में उपर्युक्त पुस्तकालयों से अच्छी उपलब्धता की आशा है। यदि इस और ठोस कदम उठाया गया तो निश्चय ही हिन्दी साहित्य के विकास में सहायता मिलेगी।

फ़ारसी लिपि में उपलब्ध हिन्दी साहित्य के अनेक ग्रन्थ प्राप्त किये जा सकते हैं। ऐसी दृष्टि में अनुबंधनकर्ता की अपने ज्ञान का विकास करना अत्यंत आवश्यक होगा। अनुबंधनकर्ता की अनेक भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है। अन्यथा उनके कार्य-क्षेत्र की सीमा संकुचित हो रहेगी। यहाँ

स्थिति । चन्दो वाचित्य के प्रति में भी है ।

विशेष पाण्डुलिपियाँ का परिचय :

प्रस्तुत विषय में संबंधित फ़ारसी लिपि में उपलब्ध मानस का तीन महत्वपूर्ण प्रतियाँ के पाठ पर विचार किया गया है । इन प्रतियों की बी, ब, तथा घ, संकेताक्षरों की प्रतिरूपित किया गया है । यहाँ इनका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

‘ब’ प्रति -

यह प्रति संपूर्ण है (केवल प्रारंभ के संस्कृत कीलाचरण अर्थात् संस्कृत के अक्षरों (श्लोकों) की छोड़कर जी फ़ारसी लिपि में मानस की स्थिति प्रति में नहीं मिलती)। इस प्रति के कई ही सुन्दर और आकर्षक कार्यों में लिखा गया है। अतः पाठ ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होती । इसका माप मोटा तथा देखा है । आकार $11\frac{1}{2} \times 4$ इंच है । सभी काण्ड पूर्ण हैं । बालकाण्ड में 200 पृष्ठ, अर्थात् काण्ड में 144 पृष्ठ, अरण्य काण्ड में 34 पृष्ठ, किष्किंदा काण्ड में 12 पृष्ठ, सुन्दर काण्ड में 39 पृष्ठ, लंका काण्ड में 64 पृष्ठ और उत्तर काण्ड में 72 पृष्ठ हैं । लिपिकार का हाथ बहुत सघा हुआ है और काटघोट की सर्वथा अज्ञान है । प्रत्येकपृष्ठ पर 20, 21 या 22 पंक्तियाँ हैं । प्रति की दीवारों में कहीं - कहीं छेदों का स्थान है । प्रति के अंतिम भाग में पूर्ण पुष्पिका जो हुई है जी इसी प्रकार है -

‘इति श्री रामायन सुखीदास तन्मात्र कुलः शुभ के हाथ निवाहु श्रीराम श्रीराम की मातृ साधन कवी दीपन १८८६ कदस्तुत चन्दोकर कीम कुशात तन्मात्र कुलः ’ ।

उप्युक्त पुष्पिका के प्रकार में पाण्डुलिपि का लेखन काल १८६३ विक्रमी और लिपिकार का नाम चन्दोकर कुशात होने का स्पष्ट संकेत मिलता है । इस प्रकार प्रस्तुत लिपि में देवनागरी अर्थात् देवी में प्राप्त मानस की अनेक

पाण्डुलिपियाँ को जपेगा कहीं अधिक प्राधान्य और महत्त्वपूर्ण है ।

प्रारंभ -

पैरि सुमिरत सुवि धीय मननायक करिवर सदन ।
 करहु कहुष धीय सुदिरास सुम गुन सदन ।
 मुक हीरि बाबाल पैगुषी निरिवर सदन ।
 बाधुप्या सी क्यास दरहु कल कलित दल ।
 नील वरीरु ह स्याम तरुन वरुन बारिब सदन ।
 करहु सी कम उर बाप सदां होर सागर सदन ।

अस -

दीहा :
 नौ सम दोन न दोन हित पुन समान रघुबीर ।
 आ बिचारि रघुबीर मनि हरहु बिषम मित मोर ।
 कामिहि नारि मियारि जियि लोभी प्रिय जियि दाम ।
 तिम रघुनाथ निरंतर प्रिय लागैहु मोहि राम ।

प्रति के अक्षिप पानि पुष्ठी के कोस काण्ड का वणि मिस्तता है की इस प्रकार है -

प्रारंभ -

वयं कस्य काण्डे स्थितौ श्री कवित नमः
 पुनः पुनः नै कवनं पुनः दैत राम पद नैह ।
 कवित प्रेम पवित गुरुवर ग्राहित संदह ॥

अस -

बसै राख यनि मन सहित पोत बजाय निशान ।
प्राप्त पत्र ते फिर कबहुँ काय नार तेरान ॥

बे प्रति -

प्रस्तुत प्रति का आकार $11\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$ है। प्रस्तुत प्रति का रंग जो अत्यंत सुन्दर एवं आकर्षक है। पाठ ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होती। प्रति का कागद मोटा तथा दृढ़ है। स्थान - स्थान पर कागद की दोमकी नैसा लिया है। प्रस्तुत प्रति में ऐसा प्रतीत होता है कि इसे किसी अन्य प्रति से चिलान करके देखा गया है। यही कारण है कि इसमें स्थान - स्थान पर नोट लाए गये हैं। कहीं - कहीं छद्मों के खंभे भी दे दिए गये हैं। प्रति में चारों काण्ड पूर्ण हैं। पुष्पिका का अंत में अभाव है किन्तु पाण्डुलिपि १६वीं श्लोक विष्णु की ओर जान पड़ती है।

प्रारंभ - श्रीगणेशाय नमः

श्री वात्सला

शेख मुनिरत धिय शीघ्र मननायक करिवर नदन ।

करहु करहु शीघ्र मुनिरास सुम गुन सदन ।

मुकह ही बाबात पंगव करहु गिरिवर नदन ।

बापानी गुंगा पाय ले

बापु कुमा शी दयात प्रबहु सकल कलित दहन ।

हुँद हुँदु सम देह उपा रमन करुना अवन ।

बापानी फूल बनकर बनमा

बापु दोन पर नैह करहु कुमा मदन मयन ।

अंत - दीक्षा :

मौ सम दोन न दोन हिय तुम उमान रघुबीर ।

अ विचार रघुवंश मनि करहु किसम भी मोर ।

५५ दीक्षा

कामिनी नारि फियारि विमि लीमिनी प्रिया विम दाम ।

तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिया लागी मम राम ।

प्रति -

प्रस्तुत प्रति मुस्लिम विश्वविद्यालय के क्वार्टर म्यूजियम से संबंधित है जो मौलाना आजाद लाइब्रेरी, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में है। प्रस्तुत प्रति का आकार 15×10 इंच है। इसका कागज मोटा तथा बेहो है। उल्लिखित प्रतियाँ में 'ब' तथा 'क' को जैदा यह प्रति का लेख कम सुन्दर है। मुख्य रूप से इसके अंतिम काण्डों का लेख बहुत लोच कर लिखा गया है। अतः पढ़ने में या पाठ ग्रहण करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। 'ब' तथा 'क' को जैदा यह प्राचीन में कम मान्य होती है। किन्तु इसे भी बीचों-बीच विभक्तियों से पूर्व का समझना उचित जान पड़ता है। सभी काण्ड पूर्ण हैं। अन्त में पुष्पिका का अभाव है।

प्रारंभ -

राम राम विधि जानकी लखन दाहिनी ओर ।
 ध्यान सकल कल्याण सब तुझी सतर तीर ।
 वैरि सुभिरत विधि होय गन नायक करिवर बन ।
 करहु कृपुण सोय बुद्धिरास सुभ गुन सवन ।
 मुक होहि बाबाल पंग ब्रह्म गिरिवर गहन ।
 बासु कुमा सो दयाल द्रवहु सकल कलमिल दहन ।
 मोल सरौरुह स्याम तरुन अरु बाजिज नयन ।
 करी सो मम उर धाम सदा होर सागर सवन ।
 कुंज रूंदु सम दैह करहु कुमा पदम मयन ।
 कंदी गुरु पद कंज कुमा पिंडु नर रूप हरि ।
 महा मोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर ।

कंदी

अंत -

प्रस्तुत पाण्डुलिपि का अंतिम भाग दूसरी पाण्डुलिपियाँ से भिन्न करने पर स्पष्ट नहीं हो पाता मुख्य रूप से उत्तरकाण्ड का अंतिम भाग

बीर अधिक लोंचकर लिखा गया है किसी पाठ ग्रहण करने में कठिनाई है ।
 विवेच्य 'बे', 'रे' तथा 'से' पाण्डुलिपियों के अध्ययन में सतीता से काम
 लिया गया है । अन्यथा कहीं-कहीं पाठ कुछ का कुछ मोही सकता था ।
 उदाहरण के लिए फ़ारसी लिपि में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका कुछ का कबल कुछ
 पाठ ही सकता है - जैसे :

ب - बल, बलि	سین - सील, सेल
سرس - सरस, सरिस	دکول - दूल, कूल
دکن - का, कू	پدم - पदम, पदुम
ملن - मलिन, मिलन	رس - रस, रिष
تن - तन, तिन	تم - तम, तिमि
جگ - जा, जु जु	پنسا - पिंसा, संसा

आदि ।

उपर्युक्त शब्दों के अतिरिक्त स, श, य, ब के अध्ययन के लिए
 भी सतीता की आवश्यकता है । मानस की इन पाण्डुलिपियों के अध्ययन में
 भाषा (लोक भाषा तमिली) का यदि ध्यान रखा जाय तो त्रुटियों की
 संभावना कम ही जाती है । अथो के लक्ष्य शब्दों में 'क' स्थान तथा ण, छ,
 दा और ज इन वर्णों का प्रयोग नहीं हुआ है । 'क' के स्थान में 'रि', 'ण'
 के स्थान में 'न', 'श' के स्थान में 'स', 'दा' के स्थान में 'ह', 'ज्ज', 'कल',
 अथवा 'ण' और 'ज' के स्थान में 'ग्य' का प्रयोग होता है ।

उपर्युक्त तीनों पाण्डुलिपियों में कहीं - कहीं शब्द-भेद उकारान्त
 शब्दों की ओर अकारान्त करके लिखे जाने के कारण भी हो गये हैं । उदा-
 हरणस्वरूप रामु, लल्लु, पातु पितु, मनु का राम, लल्लन, पात, पित और
 मन आदि । अतः प्रस्तुत अध्ययन में जिस प्रति में जैसे भी लिखा है उसे वैसा ही
 पढ़ने का यत्न किया गया है ।

मानस के अब तक जितने भी साहित्यिक संस्करण देखने-पढ़ने की मिले हैं उन सबको ध्यान में रखते हुए मानस-पठ-भेदों की वास्तविकताम रूप में प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है। अध्ययन धीपानी के आधार पर किया गया है। मानस पाठ-भेदों की रखते समय केवल उन अक्षरों की ही रखा गया है जिनमें भेद है। कहीं-कहीं पर पुरी को पुरी अक्षरों लिखने की आवश्यकता केवल इसलिए ही पड़ी है क्योंकि पुरी अक्षरों में ही पाठ भेद पिला है।

विविध प्रतियों में अनेक स्थल ऐसे हैं जो मानस के कपाडम में अक्षर रूप से जुड़े हुए हैं और उनका भाषा और शैली मानसकार की शैली से भिन्न नहीं हैं। ऐसे स्थलों की प्रदिष्टता कहना उचित नहीं जान पड़ता। फलस्वरूप इन्हें पाठान्तर के रूप में स्वीकार करते हुए परिशिष्ट में दे दिया गया है। जहाँ प्रदिष्टता होने को प्रतीति हुई है उन स्थलों की प्रदिष्टता शोभा के निमित्त परिशिष्ट में स्थान दिया गया है।

मानस-पाठ भेदों के अध्ययन में नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से प्रकाशित तुलसी ग्रन्थावली (१० २० ३०३ मुख्य आधार रही हैं। पाठ-भेद को समझने के लिए निम्न उदाहरण काफी होगा।

१। ४। २। १० में प्रथम अंक सीपन का धातक है, द्वितीय अंक तुलसी ग्रन्थावली को पृष्ठ संख्या, तृतीय अंक दाहि की संख्या और चतुर्थ अंक बाहि से पूर्व अंक को अष्ट अक्षरों संख्या।

चतुर्थ अध्याय



पाठानुसंधान तथा व्यंशिका
संबन्धी कतिपय सुझाव

पाठानुसंधान तथा अन्य संशोधन संबंधी कतिपय पुष्पाव

पाठ की समस्या मुख्य रूप से साहित्य क्षेत्र में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण समस्या है। पाठ का शुद्ध रूप निधारण करने के लिए जिस अव्यवसाय और ईमानदारी की ज़रूरत है, वह प्रत्येक शोधार्थी में नहीं होती। फलस्वरूप बहुत पाठ साधारण पाठनक की एक गलत दिशा में डाल देता है।

जो रचनाएँ कवि या लेखक के जीवन काल में प्रकाशित होती हैं उनमें पाठानुसंधान की आवश्यकता नहीं पड़ती, किन्तु प्राचीन साहित्य लेखक जैसा कवि के हाथ की लिखी हुई प्रतियाँ के अभाव में पाठ शीघ्र का विषय बन जाता है। फिर भी जिन रचनाओं की ज़्यादा प्रतिलिपियाँ प्राप्त हैं उनके मूल पाठ का निधारण कष्ट होते हुए भी तटस्थ लिपियाँ के आधार पर किया जा सकता है। हिन्दुओं के प्राचीन साहित्य के संबंध में इस विज्ञान की उपयोगिता का प्रश्न आज सर्वमान्य है। मनुष्य के उत्पादन में भी पाठ की ज़्यादा समस्याएँ हैं और इस दिशा में ज़्यादा उत्साह प्रयास भी हुए हैं।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि वैज्ञानिक पद्धति पर पाठ निधारण जैसा अन्य-संशोधन का कार्य बहुत कम हुआ है। यह कार्य ज़ीरो, फ्रेन्च आदि पश्चिमी साहित्य में बहुतता से देखने में आता है। हिन्दुओं के क्षेत्र में कुछ अल्पव्यय प्रयत्न मात्र हो देखने की मिल सकती हैं। फिर भी वासुदेवशरण कृपास तथा डा० माता प्रसाद गुप्त द्वारा किये गए ये प्रयास सराहनीय हैं।

डा० माता प्रसाद गुप्त ने पाठानुसंधान की दिशा निर्देशन में वैज्ञानिक पद्धति का अनुकरण किया है। उनके यहाँ सामग्री चयन, पाठ चयन, पाठ-सुधार उच्चतर बातचीत, सामग्री की बहिरंग रूप तथा अंतरंग परोक्षा,

पाठ विकृतियाँ और उनके प्रकार, पाठानुसंगति के प्रकार, पाठ संबंध तथा उनके प्रकार, संबंध-विचारणा प्रणाली आदि पर वैज्ञानिकता की क्षाप है।

यहाँ यह कहना अनुचित न होगा कि साहित्य में वैज्ञानिक प्रक्रिया, से 'मानस' तो क्या हिन्दो के किसी भी प्राचीन ग्रन्थ का संपादन ठीक - ठीक नहीं हो सका है। वैज्ञानिक प्रक्रिया शब्द पर अधिक ध्यान देता है, किन्तु साहित्यिक प्रक्रिया शब्द पर ध्यान देते हुए भी जहाँ पर विशेष दृष्टि रखता है। अतः शब्द और जहाँ की दोनों पर दृष्टि रखते हुए ही प्राचीन ग्रन्थों का संपादन सिद्ध हो जाएगा। वैज्ञानिक प्रक्रिया में इतना ही संभव हो सकता है कि किसी शब्द को, हस्त-लेखी में न मिलने पर जहाँ बल्ले बदला न जा सके।

उपयुक्त वाधार पर निष्कर्ष रूप में किसी रचना का पाठा-नुसंधान उस रचना विशेष का काल, उसकी (रचयिता की) काव्य प्रणाली उस युग की विचारधारा, लेखन प्रणाली, भाषा, लिपि, आदि का गहन अध्ययन में समोच्च होना चाहिए। अतः उत्पन्न कीलकालीन विकास का प्रयत्न ही अनुसंधानकर्ता का प्रमुख ध्येय है।

मेरे उक्त मानस की फ़ारसी लिपि में उपलब्ध तीन पाण्डु-लिपियाँ रही हैं जिनके प्रकाश में मैं ने यथा स्थान शब्द और जहाँ दोनों की ध्यान में रखते हुए मानस के पाठ में संशोधन की आवश्यकता की स्वीकार किया है। फ़ारसी लिपि में मानसकी और भी अनेक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं जिनका पूरा - पूरा उपयोग किया जा सकता है। मैं ने केवल एक दिशा देने का प्रयास किया है। अन्य पाण्डुलिपियाँ का उपयोग करके और भा स्वस्थ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। विवेच्य पाण्डुलिपियाँ के वाधार पर शब्द और जहाँ की दृष्टि में रखते हुए कतिपय पाठ भेदों को उपयुक्तता का यहाँ संकेत किया जा रहा है। किन्तु इन पाठ भेदों को अंतिम नहीं कहा जा

सकता । पाठ संहिता की संभावनाएं इसके बाद भा बनो रहती हैं ।
कारण यह है कि प्रस्तुत कार्य केवल तीन पाण्डुलिपियाँ के प्रकाश में हो
किया गया है ।

२।६।५।३,४ जंबी संत 'अंजन' करना ।

दुल प्रदुष्य बोध क्कु करना ॥

विद्वरत एक मान हरि लें ।

मिलत एक 'दुल दारुन' देख ॥

भार्या सौन्दर्य को दृष्टि से विवस-निधि, निधि-बाधर,
नोर-हीर, संत-अंत का प्रयोग अधिक उपयुक्त जान पड़ता है । अ.ब.स
तोनी ही पाण्डुलिपियाँ में 'अंजन' के स्थान पर 'अंतन' का पाठ मिलता
है ।

कवि संत और अंत कीर्ति के चरणों को बंदना करता है ।
संत - अंत कीर्ति ही दुल देने वाले हैं किन्तु उनमें कुछ भेद निहित है ।
एक (संत) विद्वरत समय प्राण हर लेते हैं और दूसरे (अंत) मिलते हैं तो
दारुण दुल होता है । पाण्डुलिपि 'स' में दुल दारुन' के स्थान पर
'दारुन दुल' का पाठ मिलता है । अंज करनी में देता जाय तो 'दुल
दारुन' से तात्पर्य ऐसा दुल जो अंतरत दर्द, टोस का अनुभव करार
किन्तु 'दारुन दुल' जो दुल कुछ दारुणों के लिए हृदय की दर्द में डुबी कर
पिलो न ही बार । अंतों को भेट से दारुणमात्र के लिए भी दुल ही सकता
है और लम्बे समय के लिए भी । अतः 'अंतन' और 'दारुन दुल' के पाठ
को स्वीकार करना अधिक संगत जान पड़ता है । सुखी ग्रन्थावली में पाठा-
नुसंधान हेतु जिन प्रतियाँ का उपयोग किया गया है उनमें ६,७ तथा सं०
३० प्र० प्र० में भी 'अंतन' पाठ मिलता है । इसी प्रकार ६ तथा ३० प्र०
प्रतियाँ में 'दारुन दुल' का पाठ भी उल्लेख है ।

१।२८।५६।२ सतों सपुष्पि रघुबोर प्रभाऊ ।

भय कस प्रभु सन कोन्ह दुराऊ ॥

ऊ. व. स तो ही हो पाण्डुलिपियाँ में प्रभु के स्थान पर 'सिव' का पाठ उपलब्ध है। 'सिव' शब्द सतो के प्रसंग में ही लय को और इंगित करता है।

सतो जो ने भी रघुनाथ जो के प्रभाव की समझ कर डर के मारे 'सिव' जो ही ^{पाठ} प्रसूति पायी। इस दृष्टि से 'प्रभु' शब्द के स्थान पर 'सिव' का पाठ ग्रहण करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। कारण यह है कि 'प्रभु' शब्द रघुबोर अर्थात् भी राजा का ही वही वाच्य है। फलस्वरूप इससे अर्थ सौन्दर्य का जनम होता है।

२।१७४।६३।१ नर अहार रमनाचर 'करहीं' ।

कपट वेण बिधि कौटिक 'करहीं' ॥

'वे' तथा 'वे' पाण्डुलिपियाँ में 'करहीं' के स्थान पर 'करहीं' तथा 'करहीं' के स्थान पर 'धरहीं' का पाठ मिलता है। ऊ. व. प्रतियों के अनुसार पाठ का निश्चरण निम्न रूप में होगा।

नर अहार रमनाचर 'करहीं' ।

कपट वेण बिधि कौटिक 'धरहीं' ॥

यहाँ वन में उपस्थित बाघादी का वर्णन किया जा रहा है। वन में निशाचर (राजाध) मनुष्यों का आहार करते हैं जिसके लिए करोड़ों विधियाँ वे कपट वेण धारण करते हैं।

प्रथम ज्ञाती में 'धरहीं' पाठ करने की स्थिति में 'नर अहार' का अर्थ मनुष्यों का आहार करने वाले करना पड़ता है। वस्तुतः पाठ की त्रुटि के कारण ही यह स्थिति बनती है। 'धरहीं' के स्थान पर 'करहीं'

पाठ मान ली है वही सीधा-सादा और स्पष्ट हो जाता है। फलस्वरूप 'करहो' पाठ हो उचित जान पड़ता है। इसी प्रकार दूसरी जगहों में 'परहो' का स्पष्ट अर्थ है - 'धारण करते हैं'। वेणु के साथ 'करहो' अव्यय अनुपयुक्त प्रतीत होता है। कारण यह है कि वेणु किया नहीं जाता वेणु धारण किया जाता है।

२।२६।२३० 'सम्य लोके सब' लोकमति चाहत भवति भान ॥

अ. स पाण्डुलिपियाँ हैं 'सम्य लोके' के स्थान पर 'सबहि लोक' तथा न में 'सम्य लोक सब' के स्थान पर 'सबहि बिलोक्त' का पाठ मिलता है।

सुल्लो ग्रन्थावली के पाठानुसार अर्थ यह इस प्रकार होगा -

सम्य का विचारकरते हुए सभी लोकपाल पहरा कर भागना चाहते हैं।

'ज' के अनुसार अर्थ -

सभी को धिपति की देखकर सभी पहराकर भागना चाहते हैं।

'लोक' का अर्थ 'प्रजा' करने की स्थिति में अर्थ इस प्रकार होगा - सम्पूर्ण प्रजा और सारी प्रजापालक पहराकर भागना चाहते हैं।

'व' का अर्थ -

लक्षण के शीघ्र ही भी हुए शब्दों की सुनकर सभी लोक राम (लोकमति) को और देखनेलाते हैं और पहराकर भाग जाना चाहते हैं।

'लोकमति' का अर्थ राजा करने की स्थिति में अर्थ इस प्रकार होगा - सभी राजा परस्पर एक दूसरे की देखते हैं और पहराकर भाग जाना चाहते हैं।

मेरी विचार में 'सबहि लोक' का पाठ अधिक उपयुक्त है। 'सब' 'सब' और 'लोक' 'लोक' की पुनरावृत्ति है इसमें जो ध्वनि शोन्ध्य और आलेकारिक कटा दोलती है वह अन्य पाठों में नहीं मिलती।

२।२६।३१७ -

तैठ बिलीकि रघुवर भरत प्रीति कृप अपार ।

भर मान'मन'तन' कवन सहित बिराग बिचार ॥

अ, ब, स तीनों ही पाण्डुलिपियों में 'मन' के स्थान पर 'तन' तथा 'तन' के स्थान पर 'मन' का पाठ मिलता है। अतः अ, ब, स में क्रम ही जाता है 'तन - मन'। देखा जाय तो उपर्युक्त दोहों में 'मन-तन' अथवा 'तन - मन' के पाठ ग्रहण से कहीं भी कोई अंतर (फेद) नहीं जान पड़ता किन्तु पाठ भेद फिर भी बना रहता है।

भाषा, प्रयोग और सौन्दर्य का दृष्टि से यदि विचार किया जाय तो क्रम दोषा उपस्थित हो जाता है। इस दृष्टि से 'तन-मन-कवन' (अर्थात् अ, ब, स प्रतियों का पाठ) ग्रहण करना अधिक उपयुक्त जान पड़ता है क्योंकि इस पाठ से क्रम दोषा हट जाता है।

३।२७।१का ६ -

मिला खुर बिराध मग जाता ।

'बाधत हो रघुबोर निपाता' ॥

'अ' में बाधत हो रघुबोर निपाता' के स्थान पर 'गरजत' और कठोर बिगाता' तथा अ, ब, स में 'गरजत घोर कठोर रिहाता' का पाठ मिलता है।

'ब' के खुधार कहीं लीगा -

रास्ते में जाते हुए बिराध राधास मिला जी घोर, कठोर,
मैन करता हुआ विषा फीला रहा था।

ब, स के खुधार कहीं लीगा -

रास्ते में जाते हुए बिराध राधास मिला जी घोरमैन करते हुए
अत्यधिक शीघ्र ही रहा था।

तुलसी ग्रन्थावली के पाठानुसार बिराघ की मार्ग में देखते ही श्रीराम ने उसका वध कर दिया। यह बात कुछ उपयुक्त नहीं प्रतीत होती। जबकि गौतम, कौटिल्य और तथा विष्णु से भरी हुए बिराघ का श्रीराम द्वारा मारा जाना संगत जान पड़ता है। फलस्वरूप प्रति का पाठ ही अधिक उपयुक्त ज्ञेयता है।

४। ३२। १५- कर्तुं प्रवर्तते चत मारुतं जहं तर्हं पेष बिलाहिं ।

जिमि कपूत के ऊपये कुल सदमं नखाहिं ॥

अ. व. में 'चत मारुत' के स्थान पर 'मारुत चते' का पाठ मिलता है। अ. की दृष्टि से दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता किन्तु शब्दों के क्रम पर विचार किया जाय तो 'मारुत चते' अधिक उपयुक्त है।

दूसरी अक्षरालि में 'के उपये कुल सदमं' के स्थान पर 'के' में के ऊपये कुल की धरमं तथा 'ब' में 'कुल ऊपये संपत्ति धरमं' का पाठ मिलता है।

अ. की दृष्टि से दूसरी अक्षरालि पर विचार किया जाय तो तुलसी ग्रन्थावली तथा प्रति 'अ' के अ. में कोई विशेष अन्तर नहीं किन्तु 'ब' का पाठ स्वाकार कर लेने से अ. सौन्दर्य बढ़ जाता है। 'ब' के अनुसार अ. इस प्रकार होगा -

जिस प्रकार कपूत के कुल में जन्म लेने से उस कुल को संपत्ति तथा धर्म प्राप्त हो जाता है। यह अ. अधिक संगत जान पड़ता है।

तुलसी ग्रन्थावली में दिए गये पाठ-पेस इस प्रकार -

१. १. ३। ४. ५. ६. ६. ७ - बह मारुत , - बहमारुत ।

४।३१७।२६।६- हम सोता के सुधि 'लोन्ही बिना' ।

नाहं जेहं जुबराज प्रबोना ॥

अ तया व पाण्डुलिपियाँ में 'लोन्ही बिना' के स्थान पर पाठ 'निन लोन्हा' मिलता है । यह अधिक शुद्ध ज्ञान पड़ता है क्योंकि दूसरी अध्यातो में तुकान्त प्रबोना आया है जो अ तया व दोनों ही पाण्डुलिपियाँ में है । 'व' के पश्चात् 'ह' के स्वर को आसीप होने के कारण लय भंग हो जाती है । अतः यदि दोनों तुकान्त क्रमशः 'लोना' तथा 'प्रबोना' का पाठ किया जाय तो लय में निश्चार आ जाता है । तुलसी के यहाँ सारा काव्य गोतिम्य है । भक्तवर्ता के लिए गोतिम्य काव्य में छूँकर तन्मयता से पाठ करना और उससे ज्ञानन्द प्राप्त करना भी एक लक्ष्य है इस दृष्टि से 'लोन्ही बिना' के स्थान पर 'निन लोना' का पाठ हो अधिक संगत बैठता है ।

४।३१७।२६।१०- अ कहि रे लखन 'सिंधु तट जाई' ।

बैठे कपि अब दम उखाई ॥

'व' प्रति में लखन के स्थान पर 'बचन' तथा 'ह' में 'लखन' के स्थान पर 'सकल' का पाठ मिलता है । लखन-सिंधु से तात्पर्य है लखनसागर अर्थात् वह सागर जिसमें लखन की प्रधानता हो । प्रत्येक सागरमें लखन घुसा आसक्त रहता है फिर केवल सिंधु में ही लखन मिलनलिप्ता जाय तो उचित नहीं होगा । इस दृष्टि से यदि लखन शब्द को हटा भी दिया जाय तो अंग ग्रहण करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होगी । लखन शब्द इस स्थान पर भर्ता का हो भी सही ज्ञान पड़ता है । यदि 'बचन' और 'सकल' का पाठ ग्रहण किया जाय तो अंग इस प्रकार होसकता है -

है, सुयोग्य युवराज हम लोग सोता को लीज लिये बिना नहीं लौटेंगे । ऐसे बचन कहकर आया ऐसा कहकर सभी बानर सिंधु तट पर कुश विद्या कर बैठ गए । 'बचन' और 'सकल' शब्द भर्ता के नहीं मालूम होते । किंतु

‘सकल’की अपेक्षा ‘कवन’ अधिक संमत प्रतीत होता है ।

५।३२६।८।६ - ‘करि’ सीछे रूप गयेउ पुनि तख्वा
वन ओक जोता रह जख्वा ॥

‘व’ तथा स’ पाण्डुलिपियाँ व’ ‘करि’ के स्थान पर ‘धरि’ का पाठ है । देखा जाय तो ‘सिंगार करना’ और ‘रूप धारण करना’ का प्रयोग हो उचित है । अतः यहाँ ‘करि’ के स्थान पर ‘धरि’ का पाठ ग्रहण करने में बाधा-हीनत्व का दाव नहीं होगा । ‘धरि’ के संघर्ष व’ की निम्न प्रकार से हो सकता है -

‘फिर वही पहले जैसा सक - सरीखा रूप धारण कर वहाँ गये जहाँ ओक वन में सीछा जो रहता था ।’

६।३८।१७।३- गुन सबैल सकल ‘उर बासी’ ।
‘हुषि नल तैज धी गुन रासी’ ॥

अ, ब, तथा स ताना पाण्डुलिपियाँ व’ ‘उर बासी’ के स्थान पर ‘गुन रासी’ तथा ‘हुषि नल तैज धी गुन रासी’ के स्थान पर ‘सत्य सिंधु प्रभु सब उर बासी’ का पाठ उपलब्ध है । अतः अ, ब, स प्रतियाँ के अनुसार पाठ का नियरिण निम्नलिखित रूप में होगा -

गुन सबैल सकल गुन रासी ।

सत्य सिंधु प्रभु सब उर बासी ॥

क्यों होगा - ‘है सर्वज्ञ’ (सब कुछ जानने वाले) सकल गुणों की राशि, सत्य के सिंधु, उनके प्रयत्न में बात करने वाले राम, पुनिर -

उपर्युक्त कौन जागे जाने वाली कुवातियों के साथ हो पूर्ण होता है -

मेघ कहते निज पति - अनुसार ।

दूत पठाव बालि कुमार ॥

‘ मैं बहुत विचारकरके के पश्चात् अपनी बुद्धि के अनुसार कहता हूँ कि बालि कुमार काय को दूत बनाकर भेजा जाय ।

उपर्युक्त ६।३५।१७।३ में पाठ-^{मेघ}हीते हुए जो अर्थ मैं कोई विशेषा अन्तर नहीं पढ़ता है । तुलसी ग्रन्थावलो तथा क, ब, स के पाठ में राम के गुणों का वर्णन हुआ है । किन्तु कलागत धीन्य की दृष्टि से क, ब, स प्रतियाँ का पाठ ही श्रेष्ठ मान पढ़ता है ।

तुलसी ग्रन्थावलो में पाठ-मेघ इस प्रकार मिलता है -

गुन सर्वज्ञ सकल उरबासी, रासी ~~कालवदकालवदकालवदक~~ १,२,३,४,५-
उरबासी, ६,८ - गुनरासी, १,२,३,४,५, - बुधि बल तैव की गुनरासी,
६,७ - सत्य चिंतु प्रभु सब उरबासी, १० ४,५,६ - गुन सर्वज्ञ सकल उर बासी,
वि०, का० गो० - गुन सर्वज्ञ सकल उर बासी । बुधि बल तैव की गुन रासी,
स० प्र० प्र० गुन सर्वज्ञ सकल गुन रासी। सत्यचिंत प्रभु सब उरबासी ।

६।३७।५।१- दैति पवन-धुत कटक बिहाला ।

‘श्रीकृत अनु धाँके काला’ ॥

‘ब’ में ‘श्रीकृत अनु धाँके काला’ के स्थान पर ‘श्रीकृत धाँके बिधि काला’ तथा ‘स’ में ‘धाँके श्रीकृत अनु काला’ का पाठ उपलब्ध है । ‘ब’ तथा ‘स’ प्रतियाँ के अनुसार अर्थ होगा -

‘ब’ : सारी सेना को व्याकुल देखकर पवनपुत्र अनुमान ऐसे दीढ़े और शीघ्र से मरा हुआ सपने के लिए दीढ़ा ही ।

‘स’ : सारी सेना को व्याकुल देखकर पवनपुत्र अनुमान ऐसे दीढ़े और स्वयं शीघ्र से मरा हुआ काल ही दीढ़ा ही ।

विचार किया जाय तो तुलसी ग्रन्थावली तथा पाण्डुलिपि 'घ' में पाठ-भेद होते हुए भी जहाँ पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता । हाँ जहाँ की नवीनता की दृष्टि से 'घ' का पाठ सख्त हो जनो और आकृष्ट करता है ।

७।४२४।१५- ब्रह्मानन्द मान कपि सबके प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्हें गर पास बाट बोति ॥

अ, ब, स तीनों ही पाण्डुलिपियाँ 'घ' दिवस तिन्हें के स्थान पर 'दिवस-निधि' का पाठ उपलब्ध है । अ, ब, स तथा स प्रतियाँ के अनुसार उपर्युक्त दोहे का जहाँ इस प्रकार किया जा सकता है । -

सबो जानर ब्रह्मानन्द मैं मग्न हैं । प्रभु के चरणों मैं सबका प्रेम है । जात को जात मैं दिन-रात कैसे कट गए उन्हें पता न चला और हः महाने बोत गए ।

केवल दिनों के बोलने के अतिरिक्त रात्रि का जहाँ ग्रहण किया जाय तो उपर्युक्त जान पड़ता है । इस संदर्भ में 'दिवस-निधि' के पाठ पर भी विचार किया जा सकता है ।

कहीं-कहीं प्रिन्ट में आवधानों के कारण भी नागरी प्रचारिणों समा द्वारा संपादित तुलसी ग्रन्थावली में पाठ-भेद की प्रतीति होती है । ऐसी अवस्था में भी पाठकों को उचित पाठ ग्रहण करने में कठिनाई हो सकती है । उदाहरण के लिए निम्न अदाँलियाँ की लिया जा सकता है -

७।४५४।६०।१- बिनु संतोष काम न' नसाहीं ।

काम अत पुन सपनेहुं नाहीं ॥

अ, ब, स तीनों पाण्डुलिपियाँ में 'काम न' के स्थान पर 'न काम'

का पाठ मिलता है । ' काम न' के पाठ में लय का दोष वा जाता है ।
 इस स्थिति में न काम' का पाठ ग्रहण करना उचित होगा । किन्तु
 देखा जाय तो उपर्युक्त अधुषाणियाँ में इन अधुषाणियों के उत्प-कौर (पाठ-
 भेद) से अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । ऐसी त्रुटियों का संभावना प्रिंट
 के कारण भी हो सकता है । ऐसे उदाहरण भी कई स्थलों पर मिल सकते
 हैं ।

पंचम अध्याय



विविध पाण्डुलिपियों के आधार पर
रामचरितमानस का पाठ-पै

रामचरितमानस

प्रथम उपास

क्रम सं०	पंक्ति सं०	नागरी प्रचारिणी उभा का पाठ
१-	१।३।०।१	‘जी’ ^१ पुमिरत सिधि होइ मननायक करिवर बदन ।
२-	१।४।२।१	गुरु ^२ पद मुहु मंजुल रज ^३ अंज ।
३-	१।४।२।५	साधु ^४ चरित ^५ पुम ^६ चरित ^७ कपासु ।
४-	१।४।२।१०	मुनत ^८ सुलभ ^९ मुद फल देनो ।
५-	१।४।२।११	तोरथ ^{१०} साज ^{११} उमाज पुकरमा ।
६-	१।५।३।१२	साक बनिक ^{१२} मनि मन गुन ^{१३} जी ।
७-	१।५।४।१	मे बिनु काज ^{१४} दाहिने ^{१५} बारं ।
८-	१।६।५।३	बंदों संत ^{१६} अज्जन ^{१७} चरना ।
९-	१।६।५।४	मित्त एक ^{१८} दुल दारुन ^{१९} देई ।
१०-	१।६।५।७	लहत पुज ^{२०} अवलोक ^{२१} बिभूती ।
११-	१।६।६।८	कासो फा पुरसरि ^{२२} कबिनासा ^{२३} ।
१२-	१।६।६।१०	संत संत गुन ^{२४} ग्रहहि ^{२५} फय परिहरि बारि विकार ।
१३-	१।७।७।५	वैष्ण प्रताप ^{२६} पुजिअहि ^{२७} तेऊ ।
१४-	१।८।८।२	हंसहि बक ^{२८} गादुर ^{२९} बातकही ।
१५-	१।८।८।८	कवि न होउं नहि ^{३०} बसुर ^{३१} प्रबोनु ।
१६-	१।८।८।११	सत्य कही लिखि ^{३२} कागर ^{३३} कोरे ।

१- अ, ब, स - जेहि	६- व - अंतन
२- अ, ब, स - पद रज मुहु मंजुल	१०- स - दारुन दुल
३- अ - सरिस	११- व - परलोक
४- अ, स - सरिस	१२- अ, ब, स - मननासा
५- अ, ब, स - सकल	१३- अ, ब, स - ग्रहहि
६- अ, ब, स - राज	१४- अ, स - पुजियत
७- अ - बानिक गुन , व - मनि गुन मन	१५- अ, ब, स - दादुर
८- अ, ब, स - दाहिने	१६- स - बदन
	१७- अ, ब, स - कागद

- १७- १।८।१०।१ 'रहिमह'^१ रघुपति नाम उदारा ।
 १८- १।८।१०।८ कैहि न सुअंग 'बड़प्पन'^२ बावा ।
 १९- १।९।१०।११ (माल करनि कलिमल हरनि तुलसी क्या 'सुनाय'^३ को ।
 (गहि कूर कविता सरित को ज्यौ सरित बावन 'पाय' को^४ ।
 २०- १।९।११।८ स्वाती 'भारद'^५ कहहि सुमाना ।
 २१- १।९।१२।७ समुधि बिबिध 'बिनता' अव^६ मोरा ।
 २२- १।१०।१२।८ एतहु पर 'करिहहि' तै अंका^७ ।
 २३- १।१०।१३।६ 'बैहि' कहना करि कोन्ह न कोहु ।
 २४- १।१०।१३।१० तैहि का बल 'सुगम'^८ 'बैहि' माई ।
 २५- १।१०।१४।३ 'पुरहु'^{१०} सकल मनोरथ मोरे ।
 २६- १।१०।१४।६ प्रनवी सबनि कष्ट 'बल'^{११} 'स्थागे' ।
 २७- १।११।१४।१४ करहु कृपा हरि अ कहुँ पुनि पुनि 'कहाँ'^{१२} निहोरि ।
 २८- १।११।१४।१५ बाल बिय पुनि गुरुनि तलि मो पर होहु 'कृपाल'^{१३} ।
 २९- १।११।१५।१७ ('होउ'^{१४} 'पसै' मोहि पर अकुला ।
 ('करहु'^{१५} क्या मुद माल मूला ।।
 ३०- १।१२।१७।१ प्रनवी 'परिज'^{१६} 'सल्लि' बिदेहु ।
 ३१- १।१२।१७।७ 'जो'^{१७} 'अतरेउ' भूमि भट टारन ।

- | | |
|---------------------------------|-------------------|
| १- अ - पहिमा | १०- अ, स - पुरवहु |
| २- अ, ब, प - बड़प्पन | ११- अ - सब |
| ३- अ - ब - रघुबीर | १२- अ, स - करउ |
| ४- अ - पातको | १३- स - दयाल |
| ५- अ - भारदा | १४- अ, ब, स - लीउ |
| ६- अ, ब, स - बिबिध बिनता | १५- अ, स - करउ |
| ७- अ - जै करहि अंका, ब - करिहहि | १६- अ, व - पुरजा |
| तै अंका, स - जै करिहहि अंका | १७- अ - ली |
| ८- अ, स - तैहि | |
| ९- अ, ब - सुलम | |

- ३२- १।१२।१८।१ कपिपति ^१राक्ष^१ निखावर राजा ।
 ३३- १।१२।१८।२ जयम सरोर राम ^२जिन्ह^२ पाये ।
 ३४- १।१३।१८।११ गिरा जय जल बोधि जय ^३देसियल^३ भिन्न न भिन्न ।
 ३५- १।१३।१९।३ महामय ^४जहि^४ जयत महेसू ।
 ३६- १।१३।१९।५ जान बादि कवि नान ^५प्रभाऊ^५ ^५क्यैउ^५ सुद^५ ^५उल्टा^५ ^६नाऊ^६ ।
 ३७- १।१३।२०।३ कस्त पुनत ^७सुभक्त^७ ^७मुठि^७ नाके ।
 ३८- १।१४।२१।७ नाथ रूप ^८गुन^८ ^८कथ^८ कहानो ।
 ३९- १।१४।२१।९ तुलसी ^९भोतर^९ बाहरहुं^९ ^९जो^९ बाहरसि उजियार ।
 ४०- १।१४।२१।१ नाम ^{१०}जोहं^{१०} ^{१०}जपि^{१०} ^{१०}आहिं^{१०} जोगो ।
 ४१- १।१४।२२।६ राम ^{११}भगत^{११} ^{११}जग^{११} बारि प्रकारा ।
 ४२- १।१४।२२।९ ^{१२}नाम^{१२} ^{१२}पेन^{१२} ^{१२}पौयूण^{१२} ^{१२}हुद^{१२} ^{१२}तिन्हहुं^{१२} ^{१२}किर^{१२} ^{१२}मन^{१२} ^{१२}मोन ।
 ४३- १।१५।२५।२ नाम ^{१३}गरोब^{१३} ^{१३}जौक^{१३} ^{१३}निखाजे ।
 ४४- १।१५।२५।५ (^{१४}राम^{१४} ^{१४}भक्त^{१४} ^{१४}कुल^{१४} ^{१४}रावनु^{१४} मारा ।
 (^{१५}सोय^{१५} ^{१५}वसित^{१५} ^{१५}निज^{१५} ^{१५}सुर^{१५} ^{१५}पगु^{१५} धारा ॥
 ४५- १।१५।२५।६ गावत ^{१६}गुन^{१६} ^{१६}सुर^{१६} ^{१६}मुनि^{१६} ^{१६}वर^{१६} ^{१६}बानो^{१६} ।

१- स - भातु

१०५ अ - जाहि

२- ख - जि, व-जिह

११- व- गति

३- ज, व, स - कहिअत

१२- अ- राम

४- अ - जिह, व-स - जेहि

१३- ज, व, स - सुप्रेम

५- अ, व, स - प्रताप

१४- अ, व, स - नद

६- अ, व, स - जापु

१५- व, स- जौक गरोब

७- अ, व, स - सुभिरत

१६- अ, व - सकुल रन

८- अ, व, स - गति

१७- व, स - सिया

९- अ - बाहर भोवरहुं

१८- अ- गुन सुर नर मुनि बानो,

१९- अ- का सुर मुनि बिलानो

४६-	१।१५।२५।८	नाम ^१ प्रसाद ^१ 'सोच' नहिं सपने ।
४७-	१।१५।२६।२	सुक ^२ सनकादि ^२ 'साधु' पुनि जोगो ।
४८-	१।१५।२६।५	'पापे' ^३ जल ^३ अनुपम ^३ ठाऊ ^३ ।
४९-	१।१६।२६।६	'नामु राम' ^४ की कलस्तरु ^४ कति कल्याण निवा ^४ ।
५०-	१।१६।२८।१	'भायं कुभाय' ^५ जल ^५ बालसू ^५ ।
५१-	१।१६।२८।१२	उपल ^६ किये जलमान ^६ 'वेहि' सचिव कुमति कपि भा ^६ ।
५२-	१।१७।२६।३	'मति' ^७ 'मोरि' ^७ मति स्वामि सराहा ।
५३-	१।१७।३०।२	सुनहु सकल सज्जन ^८ 'सुनु' मानो ^८ ।
५४-	१।१७।३०।५	(तैहि ^{१०} 'सुन' जागबलि ^{१०} पुनि पावा ।
		('तिन्ह' ^{११} पुनि भरदा ^{११} प्रति गावा ॥
५५-	१।१७।३०।६	'समुझो' नहिं तसि बालमा तब ^{१२} जति ^{१२} रहै ^{१२} क्यैत ।
५६-	१।१८।३१।६	रामकथा ^{१३} 'कति पन्नग भरनो' ^{१३} ।
५७-	१।१८।३३।२	सो सब ^{१४} 'हेतु कहव' ^{१४} 'मै गा' ।
५८-	१।२०।३७।३	उपमा ^{१५} 'बोच' ^{१५} 'बलास मनोरम' ।
५९-	१।२३।४२।१	कारति ^{१६} उरित ^{१६} बहू ^{१६} रितु ^{१६} 'रुनो' ।
६०-	१।२३।४२।४	गोणम ^{१७} 'दुसह' ^{१७} राम बन गमनु । पंथ ^{१८} कथा ^{१८} 'तेर' ^{१८} जातम पवनू ॥

१- स - प्रताप

२- ज, स - सिद्ध

३- ज, व, स - पायो

४- ज, व, स - राम नाम

५- ज - भाय कुभाय,

व, स - भाउ कुमाउ

६- व - जियि

७- ज, स - मनि

८- ज, व, स - मोरि

९- व - म जानी

१०- ज - सौ, व - तै

११- व - तैहि

१२- ज - समुझैउ नहिं बालापनी तब जति

व - समुझि परै नहिं बालपन तब मै

१३- ज - कति पातक हरनो, स- जा पातक हरनो

१४- ज - कहत, कथा, व- कहव, कथा,

स - कहव, कथा

१५- स - बिमल

१६- स - पुरो

१७- स - बिणाम, १८- स - दुव

- ६१- १।२३।४३।२ कदुभुत 'सलित' सुनत गुनकारो ।
 ६२- १।२३।४३।५ काम 'कीह' मद 'मीह' नसावन ।
 ६३- १।२४।४५।७ 'करगत' वेद तत्त्व सब तोरे ।
 ६४- १।२४।४५।८ कहत सौ मीहि लागति 'भय' लाजा ।
 ६५- १।२५।४७।६ रावक्या 'कालि' 'कराला' ।
 ६६- १।२५।४८।६ मृग बधि 'बधु' 'सहित' प्रभु आर ।
 ६७- १।२६।५०।२ भरि लीन हवि 'सिन्धु' 'निशारा' ।
 ६८- १।२७।५२।२ तब लगि 'बैठि' 'वहाँ' बट द्वाही ।
 ६९- १।२७।५२।६ पुनि पुनि हृदय विभारि करि धरि जोता 'कर' रूप ।
 ७०- १।२७।५४।४ आगे रामु सहित 'को' 'भ्राता' ।
 ७१- १।२७।५४।८ बंदत चरन करत 'प्रभु' 'सेवा' ।
 ७२- १।२८।५६।२ भयक्स 'प्रभु' 'सन' कोन्ह दुराऊ ।
 ७३- १।२८।५६।५ मन महुं रामहि सुमिरि 'सयानो' ।
 ७४- १।३०।६०।३ जानैउं 'सतो' 'जातपति' जागे ।
 ७५- १।३०।६२।५ 'जाहव' बिनु बोले न संदेहा ।

१- स - ललित

१०- अ,स - की, व-कर

२- अ,स - प्र-ध, व- कीह

११- अ,स- सिय

३- स - लीम

१२- स - सुर

४- अ,व,स - करतल

१३- सिय अ,व,स तानाँ मैं

५- अ - अति

१४- स - भानो

६- अ,व - कलियाल

१५ - स- उमा

७- स - कुज

१६- व - बिनु बोले जाहव न संदेहा,

८- । - मधु

स - जाहव न बिनु बोले संदेहा

९- अ - रहीं बैठ, अ,स-बैठ रहीं

नोट :- पांडुलिपि 'स' मैं ये पंक्तियाँ -

१।३०।६२ - दशा सकल सुर कैव न्योत पठार ।

सुर,सब लोक लोक तैं आर ।। भा प्राप्त होता है जो
'अ' तथा 'व' मैं नहीं है ।

- ७६- १।३१।६३।५ 'प्रभु' ^१ कंभानु उभुभि उर दहैऊ ।
 ७७- १।३२।६७।७ 'सैल' सुलभन गुता तुम्हारी ।
 ७८- १।३२।६८।२ नारदहू यह 'भेद' ^२ न जाना ।
 ७९- १।३३।६९।२ मिलिहि कहि उमहि 'तव' ^३ संख्य नाहीं ।
 ८०- १।३३।६९।५ 'मो' ^४ कहि सैव सयन हरि करहीं ।
 ८१- १।३३।६९।६ 'जानु' ^५ कूषानु सब रच साहीं ।
 ८२- १।३३।६९।- 'जो' ^६ अहि हसिणा करहि, नर बिबेक अभिमान ^७ ।
 ८३- १।३५।७४।६ 'बैलगाति' ^८ महि परे पुताई ।
 ८४- १।३५।७५।४ मिलिहि ^९ कहि अब 'सप्त' रिणोसा ।
 ८५- १।३५।७५।- किरहिं महि धरि हृदय हरि सकल 'लोक' ^{१०} 'आराम' ^{११} ।
 ८६- १।३६।७६।६ तुम्ह जिनु आ ^{१२} 'प्रनु' ^{१३} को निरवाहा ।
 ८७- १।३६।७८।८ 'बाहिब' ^{१४} सदा सिवहि भरतारा ^{१५} ।

१- क- पाति

६- ज,ब,स- तुम्हहिं अब

२- ब- समल

१०- ब-लोक

३- ब- मरम

११- ब-अभिराम, स- बिआम

४- ब- कहु

१२- ब- प्रन

५- ज,ब,स - जो

१३- क-बाह्त सदा सिवहि भरतारा,

६- ज,ब,स - भानु

ब-बाह्त पाति सुंकर आबकारा

७- क- जो आ संका करहिं नर, जड़

स- बाहै सिवहि सदा भरतारा ।

बिबेक अभिमान, ब,स- जो आ

हसिणा करहिं नर, जड़ बिबेक

अभिमान

८- ब,स- बैलगाति

नोट :- १।३६।७८-तब रिणि तुरत गौरि पंह गयेऊ ।

देव दया मन किसलय भयेऊ ॥

यै पंक्तियाँ 'ज' 'बे' तथा 'स' तानाँ पांडुलिपियाँ नै प्राप्त होती हैं जो
 संपादित 'सुलभो गुणावलो' नै नहीं हैं ।

- ८८- १।३८।८३।८ 'प्रस्तुति'^१ गुरन्ह कोन्हि^२ 'अति'^३ हेतु ।
 ८९- फ्राटेउ बिगान 'बान'^४ 'करव'^५ केतु ॥
 ९०- १।३८।८३।- संभु बिरोध^६ न^७ 'कुसल'^८ 'मीहि'^९ बिहसि कहै आमार ।
 ९०- १।४०।८७।२० प्रभु वासुतोषा कृपाल 'खि'^{१०} 'अबला' निरलि बीले रहो ।
 ९१- १।४२।९१।४ 'बुदिनु' बुनक्तु सुधरी सोनार^{११} ।
 ९२- १।४२।९१।७ हरण^{१२} 'पुनि' सब 'सुर' समुदाई ।
 ९३- १।४२।९१।८ मंगल^{१३} 'सकल' दलहु दिशि साये ।
 ९४- १।४४।९७।- दुत सुत जो लिता 'लितार'^{१४} हमरे जाय जई पाउब तहां ।
 ९५- १।४४।९८।७ देखैउ 'रघुकुल'^{१५} 'कमल' पतंगा ।
 ९६- १।४५।९९।७ बिबिध^{१६} 'प्राति' केठो जैनारा ।
 ९७- १।४६।१००।५ बहुरि^{१७} 'पुनोसन्ह' उमा बोलताई ।
 ९८- १।४६।१००।७ जादविका जानि 'भ' ^{१८} 'भामा' ।
 ९९- १।४६।१०१।२ 'भवहि'^{१९} 'सगरवा' जानि भवानों ।
 १००- १।४७।१०२।१ 'बहु' बिधि संभु सायु समुकाई^{२०} ।

१- अ, ब, उ के अस्तुति

१०- अ, स- कलस

२- अ, स- अर, ब-तीहि

११- अ, ब, स - लताट

३- अ, स- बारि

१२- स - रबिकुल

४- अ, स- नर

१३- अ, स - प्राति

५- ब - नहिं

१४- स - मल्ल

६- ब - मय

१५- स - सिध

७- अ, न- संकर

१६- अ, ब, उ - सिवहिं

८- अ - सुधरी बुदिन बुनक्तु समुदाई

१७- अ - सावहिं बहुरि संभु समुकाई,

९- अ- सब पुनि । स- पुनिबर

स - एहि बिधि संभु सायु समुकाई ।

- १०१- ११४८।१०५।५ 'सार^१' दाहनादि सप्त स्वामी ।
 १०२- ११४९।१०६।१ जी जोह व्यापक 'विमु^२' कहि ।
 १०३- ११५०।१०६।३ वै 'न^३' दास राम प्रभुताई ।
 १०४- ११५१।११४।५ कहिहीं देति प्रीति^४ 'अवि' तीरा ।
 १०५- ११५२।११६।७ हरषा विष्णाद जान 'जाना^५' ।
 १०६- ११५३।११६।२ रघुवर^६ 'क' उर अंतरजायो ।
 १०७- ११५४।१२१।३ मत हमार का सुनिहि 'सयानी^७' ।
 १०८- ११५७।१३०।२ जानित ह्य'गय' 'सेन समजा ।
 १०९- ११५८।१३२।५ करहु कृपा 'हरि^८' होहु सहाई ।
 ११०- ११५९।१३४।२ तहं केहे^{१०} 'महेश' 'गन दीऊ ।
 १११- ११६१।१४०।३ परम पुनीत^{११} 'प्रबंध' 'बनाई' ।
 ११२- ११६२।१४३।८ संत^{१२} 'समा' 'नित सुनिहि पुराना ।
 ११३- ११६३।१४४।५ 'निजानंद^{१३}' 'निरुपाधि कृपा ।
 ११४- ११६३।१४६।३ ती^{१४} 'प्रसंग' 'होइ यह अर देख ।
 ११५- ११६५।१५०।५ प्रभु परंतु 'गुठि' 'होत^{१५}' 'ठिठार' ।

१- स - सादर

२- ज - जज, स-प्रभु

३- ज, स- पुनि

४- व - रुवि

५- व, स- विजाना

६- ज, व, स - सब

७- व - भवानी

८- ज, व - गज

९- व - बहु, स- हरि

१०- व - संभु

११- ज, व - सबहिं सुखदाई, स-विचित्र सुहाई

१२- व - समा

१३- ज, व - चिदानंद, स - नितानंद

१४- ज, व, स- प्रसन्न

१५- व- गुनि मीरि

- ११६- १।६५।१५१।- तर्हकरि भोग 'क्विसाल'^१ तात गरं कहु भाल पुनि।
 ११७- १।६६।१५३।६ प्रजापाल जति 'बैद विधि'^२ कतहुं नहां जय लिय।
 ११८- १।६६।१५४।५ विजय हेतु 'कटक'^३ बाई।
 ११९- १।६६।१५८।८ परम भतुर 'न कहै निज'^४ नामा।
 १२०- १।६६।१५८।३ सुन्दर 'जुआ जीव'^५ परहेला।
 १२१- १।६६।१६१।५ 'जीसि तीसि'^६ 'होहि'^७ वरन नमामो।
 १२२- १।६६।१६२।१ हरिनिज किनपि^८ प्रयोजन नाहो।
 १२३- १।६६।१६२।४ { अब जो 'तात'^९ 'दुरायो' तीसो।
 { 'दारुन दोष'^{१०} 'छे'^{११} 'अब'^{१२} मोला।
 १२४- १।६६।१६२।५ तिमि तिमि नृपहि^{१३} उपज^{१४} 'विस्वासा'।
 १२५- १।७०।१६३।२ तप बल धिष्णु भर^{१५} परि^{१६} 'जाता'।
 १२६- १।७१।१६६।४ जान उपाय^{१७} निधन^{१८} तब नाहो।
 १२७- १।७१।१६८।३ 'मन क्रम'^{१९} 'कवन भगत तै मोरा'।
 १२८- १।७७।१८३।३ दैवत 'नोम'^{२०} 'रूप सब पापो'।
 १२९- १।७८।१८३।- स्त्रिया पर 'जति'^{२१} 'प्रोति तिन्ह के पापहि कवनि निति'।
 १३०- १।७८।१८४।३ तै जानेहु निविहर^{२२} 'सब'^{२३} 'प्रानो'।

१- अ, व, स - धिलास

१०- व, स- कट्टे जति

२- अ, व, स - विविध विधि

११- अ - होहि

३- व - नृप कटक

१२- अ, व - जा, स- घुर

४- स - निज लोन्ह न

१३- अ, व - नास

५- स - रूप

१४- अ - मन तन

६- अ - जीरि सीस

१५ - अ - नाहि

७- व - तब

१६- अ, स- बहु

८- अ - नृपति, स- कपट

१७- अ, व - सम

९- अ, स- बात

- १३१- १।७८।१८४।४ अतिसय दैति की को गलानी^१ ।
 १३२- १।७८।१८४।७ गति^२ तहाँ जहाँ^३ सुर पुनि फारो ।
 १३३- १।७८।१८५।१ बैठ सुर सब^४ करहि बिपारा ।
 १३४- १।७८।१८५।२ कोउ कह पयनिधि कस प्रभु सौँ ।
 १३५- १।७८।१८५।३ प्रभु^५ तहाँ प्रगट सदा तैहि रोतो ।
 १३६- १।७८।१८५।६ कैसकाल^६ दिसि बिहनु माहो ।
 १३७- १।७८।१८६।१ भूमि उखित^७ मन कहु^८ बिप्राया ।
 १३८- १।८०।१८६।३ बनवर^९ देह धरो^{१०} हिति^{११} माहो ।
 १३९- १।८०।१८६।४ रहे निज-निज कोकरु^{१२} धि^{१३} ली ।
 १४०- १।८०।१८६।१ धे गलानि^{१४} मोरे सुत नाहो ।
 १४१- १।८०।१८६।३ (निज दुल सुत^{१५} सब^{१६} गुरहि^{१७} सुनारउ^{१८} ।
 (कहि वसिष्ठ^{१९} बहु^{२०} विधि^{२१} समुकारउ^{२२} ।
 १४२- १।८०।१८६।४ पुत्र^{२३} काम^{२४} सुम अज करावा ।
 १४३- १।८०।१८६।६ प्रगटे^{२५} अगिन^{२६} चरु^{२७} कर लोन्है ।
 १४४- १।८०।१८६।१ तब^{२८} अदृश्य भजे पावक^{२९} सकल^{३०} सभाहि^{३१} समुकार ।
 १४५- १।८०।१८७।१ तबहि^{३२} राय^{३३} प्रिय नारि बीलाई ।

१- अ,स- हानो

२- अ- तहाँ तहाँ

३- अ- निज

४- अ- सौँ

५- अ,स- जहाँ

६- अ- दैति सकल

७- अ- मन की, व,स- मानूँ

८- अ- बनवर, व,स- बनवर

९- अ- हिति, व,स- हन,क-रुनि

१०- व- रुधि

११- अ- गलानि अ,व,स लोनाँ वै

१२- अ- अगव - अगव कहि

१३- अ- सुनार

१४- अ,स- सब

१५- अ- समुकार

१६- अ,स- काव

१७- अ,व- अगिन

१८- अ,का- चारु

१९- व,स- अदृष्ट पावक भजे

२०- अ- गुरहि, २१- अ,व- राउ

- १४६- १।८०।१६०।३ 'कैके' ^१ कहं गुप से दजेऊ ।
- १४७- १।८१।१६१।- जा निवास प्रभु 'प्रगटे' ^२ बसित लोक विधामो
- १४८- १।८१।१६२।१ मे प्रगट कुमाला परनदयाला ^३ कीसल्या हितकारा ।
- १४९- १।८१।१६२।३ (कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरो केहि बिधि करी ^४ अंत ^५ ।
(माया गुन जानातीत जमाना नैद पुरान ^५ भर्ता ^५ ।
- १५०- १।८१।१६२।४ (करुना तुं जागर सब गुन जागर केहि गावहिं भुति ^६ संत ^६ ।
(सौ मम हित लागो ज अरु लागो मर प्रगट ^७ भोक्त ^७ ।
- १५१- १।८१।१६२।७ (माता पुनि बोलो सौ मति डोलो तजहु तात यह ^८ रूप ^८ ।
(कोजे धिबु लोला अति प्रिय सोला यह तुल परम ^९ अनु-प ^९ ।
- १५२- १।८१।१६२।६ (पुनि बचन बुजाना रोदन ठाना होइ बालक ^{१०} गुरभूष ^{१०} ।
(यह बरित जे गावहिं हर पावहिं ती न परहिं ^{११} भवभूष ^{११} ।
- १५३- १।८२।१६३।४ चाहत ^{१२} उठन ^{१३} 'करत' ^{१३} अति धोरा ।
- १५४- १।८२।१६३।७ गुरु बसिष्ठ ^{१४} कह ^{१४} गजेउ हंकारा ।
- १५५- १।८२।१६३।२ (गुपन बृष्टि ^{१५} अंकास ^{१५} ते होई ।
(ब्रह्मानंद मान सब ^{१६} कोई ^{१६} ।
- १५६- १।८१।१६४।५ हरि ^{१७} आरतो नैदावरि ^{१७} करहों ।
- १५७- १।८२।१६४।- गृह गृह जाज बधाव सुम ^{१८} 'प्रगटेउ' ^{१८} सुखमार्कंद ^{१८} ।

१- अ, स - कैके

२- अ, ब, उ - प्रगटेउ

३- अ - दा दयाला

४- अ, ब, उ - अंत

५- अ, ब, उ - भर्ता

६- अ, ब, उ - संता

७- अ, ब, उ - भोक्ता

८- अ - रूप

९- अ - अनुपा

१०- अ, स - गुरभूषा

११- अ, स - भवभूषा

१२- अ - उठइ

१३- अ - करत

१४- अ, ब, स - जी

१५- अ, स - तब नाम,

१६- अ - लीई

१७- अ - आरति न्यौदावरि

१८- अ, ब, स - प्रगट भजेउ सुखकंद

- १५८- १।८२।१६५।१ सुन्दर सुत जन्मल मे 'जीऊ'^१ ।
 १५९- १।८३।१६६।३ सुनु गिरिजा अति दुहु पति 'पीरो'^२ ।
 १६०- १।८३।१६६।६ यह सुम भरित 'जान' मे 'सीई'^३ ।
 १६१- १।८३।१६७।३ (करि पूजा भूपति का 'माता'^४ ।
 (धरिज नाम जो मुनि गुनि 'राखा'^५ ।
 १६२- १।८३।१६७।७ जाके 'सुमिरत'^६ तै रिपु नासा ।
 १६३- १।८३।१६७।८ गुरु कसिष्ठ तैहि 'राखा'^७ लक्ष्मिन नाम उदार ।
 १६४- १।८३।१६८।२ मुनि'का का 'सरक' सिव प्राना ।
 १६५- १।८४।१६९।४ नामि गंभीर जान 'जिहि'^८ देखा ।
 १६६- १।८४।२००।४ जीव बराबर 'सब'^९ के राखै ।
 १६७- १।८५।२००।८ ले उखंग कबहुं क 'हलरावै'^{१०} ।
 १६८- १।८५।२००।८ सुत सनेह का 'माता'^{११} बाल भरित कर गान ।
 १६९- १।८५।२०१।५ गै जानो 'सिसु' पहि'^{१२} भयभोता ।
 १७०- १।८५।२०१।८ 'दैतरावा' मातहि निज'^{१३} अद्भुत रूप अखंड ।
 १७१- १।८५।२०२।८ यह जनि कतहुं कहसि 'सुन'^{१४} माई ।
 १७२- १।८६।२०३।६ भोजन करत 'बील' का 'राजा'^{१५} ।

१- ज, व, स - सीऊ

९- ज, व - स, किन

२- ज, व - तीरो, स-पीरो

१०- ज, व - का

३- व, स - जानि है

११- ज - बलरावै, व-कलरावै

४- ज - माता, व- मातै

१२- ज - मात सब, व, स - मात तब

५- ज - राखा

१३- ज, स - सुत पै, व- सुत पहि

६- ज, व - सुमिरा

१४- दैतरावै माता हितु

७- ज, व - राखै

व- दैतरावा निज मातहि

८- ज - जन, धन, व-जन जा

१५- व, स- तै, १६- व - बीलाखं

नोट- पृष्ठ ८४ दाहिना १६६ के पूर्व निम्न पंक्तियां नहीं मिलती परन्तु 'ज', 'व', 'स', 'ता' की पंक्ति लिप्यादि सुरक्षित है ।

'गोल काज बलव है नैन बिछाला । बिषट प्रकुटि लटकन बर माला ॥

- १७३- १।८६।२०४।२ तै जन 'बंघित'^१ किर विधाता ।
 १७४- १।८६।२०४।४ बलम माल विधा^२ सब^३ पाई ।
 १७५- १।८६।२०५।१ बंधु सडा 'संग'^३ तैहि बीताई ।
 १७६- १।८६।२०५।३ जै 'मृग'^४ राम बान के मारे ।
 १७७- १।८६।२०५।५ करहि कृपानिधि सीछि 'संजीगा'^५ ।
 १७८- १।८७।२०६।७ 'रहुं' फिसि देती पद जाई^६ ।
 १७९- १।८७।२०६।८ करि मञ्जवा 'सरजू' जल^७ 'गर भूप दरबार ।
 १८०- १।८७।२०६।३ गगहु भूमि पै 'धन'^८ कीडा ।
 १८१- १।८८।२०८।७ हृदय हरण^९ 'माना' 'गुनि' जानी ।
 १८२- १।८८।२०८।१ दीडा^{१०} 'सोपे' भूप रिणिहि सुत^{१०} 'बहु' विधि के असीस ।
 १८३- १।८८।२०८।४ मोहि 'मिति'^{११} पिता तजै भगवाना ।
 १८४- १।८८।२०८।७ विषयनिधि^{१२} 'कहु'^{१२} विधा दोन्हां ।
 १८५- १।८८।२१०।४ किनु^{१३} 'फर'^{१३} बान राम तैहि मारा ।
 १८६- १।८८।२१०।१० धुवा कल^{१४} 'करि' रघुकुल नाथा ।
 १८७- १।८९।२१३।२ चारु बजारु विचित्र^{१५} 'आरौ'^{१५} ।
 १८८- १।८९।२१५।३ कुशल प्रश्न कहि^{१६} 'बारहि' बारा^{१६} ।

१- व,घ - बंघक

६- ज,स- मानेसि

२- ज - बहु पाई, व-सब जाई

१०- ज - सोपे भूप सो रिणिहि सुत,

३- ज,व - सब

क- सोपे भूपति रिणिनि सुत

४- व - संग

११- ज,व,स - स्ति

५- व - सब जीडा

१२- व,स- बहु, व-कंस

६- ज,स - रहि विधि देती प्रभु पद जाई, १३- व - फल

व - रहि फिसि देती प्रभु पद जाई । १४- ज, स - गुनि

७- ज,स - सरजू जल, व- सरजू सलिल

१५- ज,व,स - आरौ

८- व - निधि

१६- व,स- बारम्बारा

- १८६- १।६१।२१६।-दीहा - फल राखेउ मनु साखि जू^२ 'जि' और संजान ।
 १८७- १।६४।२२५।८ फिर बिदा बालक^३ 'वरिवाह' ।
 १८८- १।६५।२२७।१ सकल सोधि करि 'वाह'^३ 'नहार' ।
 १८९- १।१०१।२४४।१ कटि तूनार^४ 'पोत पट' 'बांधे' ।
 १९०- १।१०३।२४८।७ भर मोहक सब^५ 'लूनाहा' ।
 १९१- १।१०३।२४९।३ पति हमार 'जि' 'देहि सुहाई' ।
 १९२- १।१०५।२५२।७ बंदि 'पितर सब' 'सुकुल संभार' ।
 १९३- १।१०६।२५८।८ तम निमेषा जू^६ 'सब' 'तम जाहो' ।
 १९४- १।१०७।२६०।२ होहु सका^७ 'मुनि' 'आयेस मोरा' ।
 १९५- १।१०८।२६३।३ तसिन्ह उखित हरणों^८ 'जति' 'रानी' ।
 १९६- १।१०८।२६३।८ साता गमनु 'समोपहि'^९ 'कोन्हा' ।
 २००- १।११०।२६७।४ हरि पद बिमुख^{१०} 'परा' 'गति बाहा' ।
 २०१- १।१११।२७१।६ बोलै परसु धराहि^{११} 'अमाने' ।
 २०२- १।१११।२७१।७ कबहुं न^{१२} 'यिस तुम्ह' 'कोन्हा गीसाई' ।
 २०३- १।११२।२७२।५ 'बालक' बोलि^{१३} 'बधा' 'नहिं तोहो' ।
 २०४- १।११३।२७७।३ जो लरिआ कहु^{१४} 'अगरि' 'करहों' ।

१- अ, व, स - जोत

६- अ, व - मुनि

२- व - सुदाई

१०- व, स - सब

३- व, स - राम

११- अ, व, स - रामपहि

४- व, स - पोताम्बर

१२- अ, व, स - परम

५- अ, व, स - नरनाहा

१३- अ, व, स - अभिमाने

६- व, स - जति

१४- अ, व, स - आ रिख

७- अ, स - पितर गुर, व- बिप्र गुर

१५- व - बाल बिलौकि, व, स-बालक जानि

८- अ, व, स सत

१६- अ, स - अवरज, व- अगुन

- २०५- १।११६।२८५।८ 'अमभ्य'^१ कुटिल महीप डेराने ।
 २०६- १।११८।२६१।१ पुनि पाती 'पुल्लै'^२ दौड भ्राता ।
 २०७- १।११९।२६२।२ जिन्हकै 'अ' 'पुताप के बागै ।
 २०८- १।११९।२६२।५ हारै सकल 'बोर' बरिजारा ।
 २०९- १।१२१।२६७।२ बिधु बदनो मूग 'बालक'^३ लीचनि ।
 २१०- १।१२२।३०१।१ रय रव 'बाजि' र्हि 'बहुं' जीरा ।
 २११- १।१२२।३०२।५ भूँड कोलाहत ह्य 'गय' 'जा' गाये ।
 २१२- १।१२४।३०६।३ 'धै' 'बकसोस' जावकन्हि दोन्हा ।
 २१३- १।१२५।३०८।४ सुत 'हिय' 'लाह' दुसह दुल पैटे ।
 २१४- १।१२६।३१२।७ गनी जनक के 'गनकन्ह' 'जीह' ।
 २१५- १।१२६।३१२।८ कहहिं ज्योतिषी 'अर' 'बिधाता' ।
 २१६- १।१२७।३१४।७ तिन्है दैसि सब पुर 'पुरनारी'^{१०} ।
 २१७- १।१२७।३१५।५ जु मन धी करहिं 'पुर' 'सेवा' ।
 २१८- १।१२७।३१५।८ पुलक गात लीचन सजल उमा 'सकै' पुरारि'^{११} ।
 २१९- १।१२८।३१६।८ प्रमु मनउहि लालीन मनु चलत 'बाल' 'द्वि' पाव ।
 २२०- १।१२८।३१७।५ 'पुर' 'तेनप' 'उर' बसुत उकाहू ।^{१२}

१- अ, ब - अतिभय

६- ब - उर

२- ब - हरषी

१०- अ, ब, स - गुन गन

३- ब - पुन्य

११- ब - बूढ़

४- अ, स - मूय

१२- स - पुरनारी

५- अ, ब, स - सावक

१३- अ, ब, स - सुख

६- अ, ब, स - बाजहिं दिसि

१४- अ, ब, स - सखि त्रिपुरारि

७- अ, ब, स - गज

१५- ब - बाजि

८- ब, स - बूढ़

१६- अ - तहस नैन, ब, स - पुर तेनहि

- २२१- १।१२६।३१६।३ पंच उबद^१मुनि^१ मंगल गाना ।
 २२२- १।१३०।३२०।६ सकल ब्रह्म^२ मांति^२ 'सम'^२ सानु समान ।
 २२३- १।१३१।३२३।३ सबहि मनहि मन^३किर^३ प्रनामा ।
 २२४- १।१३१।३२३।५ मुनि^४ओस^४ धुनि^४ मंगल मूला^४ ।
 २२५- १।१३२।३२४।७ पद्महि^५ वेद^५मुनि^५ मंगल बानो ।
 २२६- १।१३३।३२५।६ जनक^६पमान^६ ज्ञान^६ कितारे ।
 २२७- १।१३३।३२५।७ नै^७ सहित सब रोति निभैरो ।
 २२८- १।१३४।३२६।११ कर जोरि^८ जफु^८ बहोरि^८ बंधु^८ सनेत^८ कोसलराय^८ ती ।
 २२९- १।१३४।३२६।१२ सनम^९ राजन^९ रावरी^९ हम कड़े^९ अब सब बिधि भये ।
 २३०- १।१३४।३२६।१३ १ दारिका^{१०} परिवारिका^{१०} करि^{१०} पालिओ^{१०} करुना^{१०} कह^{१०} ।
 अपराधु^{१०} बमिनी^{१०} बोलि^{१०} फर बहुत ही दूठयो^{१०} कह^{१०} ।
 २३१- १।१३५।३३०।दोहा^{११} जार^{११} मतिवर^{११} निकर^{११} तब^{११} कोसिकादि^{११} तपसोल ।
 २३२- १।१३५।३३१।५ पाछ^{१२} ओस^{१२} महीसु^{१२} जईदा ।
 २३३- १।१३५।३३१।६ कनक^{१३} ज्ञान^{१३} मान^{१३} ह्य^{१३} गय^{१३} स्यंदन ।
 २३४- १।१३५।३३१।दोहा^{१४} येहि^{१४} अनु^{१४} सुनु^{१४} मुनिराज^{१४} तब^{१४} कृपा^{१४} कटाका^{१४} फसाउ^{१४} ।
 २३५- १।१३५।३३३।३ कहं^{१५} कहं^{१५} जावत^{१५} को^{१५} बरातो ।

१- व- धुनि

६- व,स - जनबंध , व- सम्बंध

२- व,स - सब

१०-व,व, - करुनामयो

३- व,व,स- कोन

११- व,व, - कहं

४- व,स - जाओस धुमंगल मूला

१२- व- कोसलादि

५- व - धुनि

१३- व,व, -महीष

६- व,स - ज्ञान ज्ञान

१४- व,व,स -गज

७- व - वेद

१५- व,व,स - प्रभाउ

८- व,व,स - कोसलराउ

१६- व, व- सुने

- २३६- १।१३७।३३३।५ पटल जाक जौक 'सुसारा' ^१ ।
 २३७- १।१३८।३३४।२ 'चलिहि' ^२ बरता सुनत सब रानी ।
 २३८- १।१३८।३३५।- रूप 'सिन्धु' ^३ सब बंधु लखि हरणि उठै रनियासु ।
 २३९- १।१३९।३३६।३ भाइन्ह सोहत 'उबटि' ^४ जन्खार ।
 २४०- १।१४०।३४०।- कीसलपति समथो 'सज्ज' ^५ सममाने सब भाति ।
 २४१- १।१४१।३४२।६ सुनि 'बर' ^६ बचन प्रेम सु पोनी ।
 २४२- १।१४१।३४३।५ सब 'सिधिय' ^७ तव दरसन जुगामो ।
 २४३- १।१४२।३४४।१ भेरि संस पुनि ह्य 'गय' ^८ गावे ।
 २४४- १।१४२।३४४।३ पुरजा जावत 'जकनि' ^९ बराता ।
 २४५- १।१४२।३४४।- सुर ब्रह्मादि 'सिहाहि' ^{१०} सब सुख पुरो निहारि ।
 २४६- १।१४२।३४६।४ हरद 'दुब' ^{११} दधि पल्लव फूल ।
 २४७- १।१४२।३४६।५ जन्मत 'जंकर' ^{१२} रोधन लागी ।
 २४८- १।१४३।३४६।२ करहि निहावर 'जानित' ^{१३} भातो ।
 २४९- १।१४३।३४६।४ पुनि पुनि 'सोय' ^{१४} राम बचि देतो ।
 २५०- १।१४३।३४६।५ सलो सोय मुड 'पुन-पुनि' ^{१५} बाहो

- १- अ, ब, - सुवारा ६- ब, त - पुनी
 २- ब, त - चला १०- ब - सिद्ध
 ३- अ, ब, त - सोल ११- ब, त - दुध
 ४- ब - सुरत १२- ब, त - कुंकुम
 ५- अ, ब, त - जनक १३- अ, ब, त - नाना
 ६- अ - ज्ञ १४- अ, ब, त - सिया
 ७- ब - बिधि १५- ब, त - देहन
 ८- अ, ब, त - गज १६-

नोट :- निम्न पंक्तियों में 'अ' तथा 'स' के वीं मिलनो है किन्तु 'बे' के वीं इनका आलोप हो गया है -

१।१४३।- 'सिधिका सुभा जोहार उपारो ।

देखि दुलहि निन्ह होहि सुहारी ॥

- | | | |
|------|-------------|--|
| २६३- | १।१४५।३५३।१ | बिनतो को ^१ उर जति ^१ अरुण ^१ । |
| २६४- | १।१४५।३५३।२ | { नेगु मागि मुनिनायक ^२ ला ^२ हा ^२ ।
(जासिरबाद बहुत बिधि ^३ दो ^३ हा ^३ । |
| २६५- | १।१४५।३५३।३ | उर थरि रामहि ^४ सोय ^४ समैता । |
| २६६- | १।१४५।३५४।१ | सब बिधि सबहि ^५ समदि ^५ नरनाहू । |
| २६७- | १।१४५।३५४।२ | सबके ^६ उर ^६ अंडु कियो ^६ वासू । |
| २६८- | १।१४५।३५४।३ | रानी सब प्रमुदित ^७ मुनि ^७ करनो । |
| २६९- | १।१४६।३५५।१ | कहि न सकहि ^८ सत ^८ सारद ^८ तेषू । |
| २७०- | १।१४६।३५६।१ | जटित ^९ कनक पान पला ^९ आयै । |
| २७१- | १।१४६।३५७।१ | मुनि तिय तरो लात ^{१०} पग ^{१०} धूरा । |
| २७२- | १।१४७।३५७।१ | तै बिरेवि जनि पारहि ^{११} लै ^{११} । |
| २७३- | १।१४७।३५७।२ | दाहा- राम प्रतीना मातु सब कहि बिनात ^{१२} वर ^{१२} ज्यन । |

१- व, स - राज	७- व - सुख, व, स- मुनि
२- व, स - लोन्हे	८- व - मुक्ति
३- व, स - दोन्हे	९- व, स - जड़ित
४- व, स - सिया	१०- व - पग
५- व - दोन्हे, व, स - समुक्ति	११- व, स - सी बिरंजि नाहं पार्व ती
६- व, स- उर	१२- व, स- मृत

नोट :- १।१४६।अपु।प :

• बूध तरिक्को पर पर बाई ।

रत्न नयन पलक को नाई ॥

उपयुक्त दोनों पंक्तियों 'अ' 'उ' पांडुलिपियाँ मैं जैसा कि को तैसा मिलता है किंतु 'अ' पांडुलिपि में 'वधु लरिणि' के पश्चात् 'पर परवाई' का आलोप है तथा 'राखिह नमन पलक का नई' का पाठ मिलता है ।

- २७४- १।१४७।३५८।दोहा -प्रातः^१ श्रिया^१ करि तात पहिं बारबारिउ भाउ ।
 २७५- १।१४७।३५९।४ सुतन्ह सपैत पुजि^२ पद^२ लागे ।
 २७६- १।१४८।३६०।४ दिन दिन^३ सयगुन^३ भूपति भाऊ ।
 २७७- १।१४८।३६०।८ (आ कहि राउ सखिस्त पुत^४ 'रानी'^४ ।
 (परेउ बरन फुल आव न बानी ॥
 २७८- १।१४८।३६१।२ 'सुनि सुनि'^५ 'सुखु पनहि पन राज'^५ ।
 २७९- १।१४८।३६१।६ रघुबीर भरित अपार बारिधि पारु^६ कीब कीने^६ लख्यो^६ ।

- १- ब,स - कृत्य ४- ब,स - नारी
 २- ब,स - पग ५- दूबरो पंक्ति में 'ज' 'परेउ बरन फुल आव न बानी,'
 ३- ब,स - सयगुन ब, स - 'बरनन परेउ नयन भरि बारी' ।
 ५- ब - सुनि-सुनि , ६- ब - भयो

नोट :- 'कहाँहं बसिष्ठु घरम इतिहासा । १।१४७।३५९।५
 पुनहिं महीस सखिस्त रनिवासा ॥'

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'ज', 'स' में मिलती हैं किन्तु 'ब' में इनका जालीप हो गया है । इस प्रकार 'ज', 'स' तथा 'ब' तीनों में 'कविकुल जीवन पावन जाना' के साथ दूबरो पंक्ति 'बरन पुनोत हेतु निज जानो' का पाठ मिलता है और 'राम सोय खु मंगल खानी' तथा 'तेहिं ते में कहु कहा बखानी' ॥ दोनों पंक्तियाँ का जालीप है ।

रामचरितमानस

द्वितीय सोपन

क्रम सं०	संदर्भ सं०	नागरो प्रचारिणा उभा का पाठ
२८०-	२।१५२।२।८	जीवन जम 'लाहु कि' ^१ 'लेह' ।
२८१-	२।१५२।३।६	'गोहि सम बहु अनुभूत न दुजे । सब पायैउ रज पावन पुजे' ^२ ।
२८३-	२।१५२।४।१	बीते राउ 'रहहि' ^३ 'मुहु बानी ।
२८४-	२।१५४।१४।२	जाहि 'नैस' ^४ 'देहि जुवराज ।
२८५-	२।१५७।१६।५	'ब्यासा' सुनिज लहिज नी दोन्हा' ^५ ।
२८६-	२।१६१।२६।४	सुनि 'मुहु' ^६ 'जन भुप 'लिय' ^७ 'सोह' ।
२८७-	२।१६४।३७।४	भुप र प्रीति कैयो 'कठिनाई' ^८ ।
२८८-	२।१६५।३६।५	'समाधानु करि सो' ^९ 'सब हा का ।
२८९-	२।१६७।४४।३	गह मनि 'मनु' कनिक फिरि ^{१०} 'पाई' ।
२९०-	२।१६८।४७।७	सब बिधि 'आहु' ^{११} 'आथ दुराज ।
२९१-	२।१६८।४७।८	निज प्रतिबिम्ब 'बहु' ^{१२} 'गहि जाई ।
२९२-	२।१६९।५७।२	कानन 'का' ^{१३} 'राम कर काजू ।

१- अ,उ - लाम किन , क- सुफल कर

६- अ,ब - लिय

२- अ - गोहि सम भयो अनुभूत न दुजे ।

७ - अ, - मन, उर

सब पायैउ मन पावन पुजे ॥

८- अ,उ - निहुराई

ब - गोहि समान अनुभूत न दुजा ।

९- अ - सावधान मन कर,

सब पायैउ प्रभु पद रज पूजा ॥

१० - समाधान सो कर

स - गो सम भयो न होई दुजे ।

१०-अ - कनिक बहुरि जिय

सब पायैउ पद पावन पुजे ॥

११-अ,ब,स - आन

३- अ - बिहसि

१२-अ - अ,ब, - मुहु

४- अ,ब, उ - नरैस

स - निरखि

५- अ - बाबासाल हमहि बिधि दोन्हा । १३- अ - गदा

ब - बाबासाल हमहि बिन्हा दोन्हा ।

- २६३- २।१६६।५७।५ जी नहिं^१ लगिह^१ कहै हमारे ।
 २६४- २।१७०।५१।८ 'पिटा'^२ सौच जनि राखै राज ।
 २६५- २।१७१।५३।८ जानहु^३ अनु^३ तारे ।
 २६६- २।१७१।५४।३ 'मनहु' पुगो जुनि^४ केहरि नाहु ।
 २६७- २।१७१।५५। दोहा राजु देन कहि दोन्ह वसु मोहिने^५ सौ दुत लै ।
 २६८- २।१७४।६३।१ (नरकहार रक्तावर^६ 'चरहो'^६ ।
 (कपट वेष विधि कोटिक^७ 'करहो'^७ ॥
 २६९- २।१७४।६४।३ तज बहत^८ मुनि स्वापि^८ 'सुनेहो' ।
 ३००- २।१७६।६०।६ लागिहि^९ नाति^९ 'कातर न मोहो' ।
 ३०१- २।१७७।७०।८ (तात प्रेम का जनि^{१०} 'कदराहु'^{१०} ।
 (समुक्ति हृदय परिनाम^{११} 'उलाहु'^{११} ।
 ३०२- २।१७७।७०। दोहा लेहु^{१२} लाभ तिनह^{१२} जम कहि^{१२} नतरु^{१२} जम का जाय ।
 ३०३- २।१७७।७२।१ 'लागि जम जमना^{१३} कराई'^{१३} ।
 ३०४- २।१७६।७७।१ सौक^{१४} 'जनित^{१४} उर दारुन दाहु' ।
 ३०५- २।१८०।७६।७ 'लोग^{१५} बिकल मुरु^{१५} क्षित नर नाहु' ।

१- व - मानहु

१०- व - कदराऊ

२- अ, व, स - रहि

११- व - प्रमाऊ

३- अ, व - मातु

१२- व - लेहु लाभमय जम कह

४- व - जा सहमा करि

१३- व - लागत जम जमना कदराई ।

५- अ, व, स - सौच

१४- व - बिकल

६- अ, व, - करहो

१५- अ, व, स - सौक

७- अ, व - ह करहो

८- व - मोहि परम

९- व - ताप

- ३०६- २।१८३।८७।८ सुमिरत जाहि मिटहि^१ म^१ भाव ।
 ३०७- २।१८३।८७।८ दोहा सुद सच्चिदानन्दमय^२ के^२ मानुषल केतु ।
 ३०८- २।१८४।८६।३ लोयन लाहु^३ रुमहि^३ विधि^३ दोन्हा ।
 ३०९- २।१८४।८६।४ तरु^४ सिंगुपा^४ मनीहर जाना ।
 ३१०- २।१८६।८५।२ तात धरप^५ म^५ तुम्ह सब सीधा ।
 ३११- २।१८७।८७।६ प्र^६ जाह कर्ह मानु बिहाई ।
 ३१२- २।१८७।८७।७ आम^७ के^७ न^७ मूमि पहरा ।
 ३१३- २।१८६।१०२।१ (उतरि ठाढ़ भजे पुरसरि^८ रैता^८ ।
 (लोय राम गुह लान समेता^{१०} ।
 ३१४- २।१८६।१०२।२ प्रमुहि^{११} सपुन^{११} केहि नहि कहु दोन्हा ।
 ३१५- २।१८६।१०२।६ वाजु दोन्हा विधि^{१२} बनि भलि पूरी^{१२} ।
 ३१६- २।१८६।१०३।६ तोहि सेवहि^{१३} सबसिधि^{१३} कर जोरो ।
 ३१७- २।१८२।११०।१ सुनत तोर बासो^{१४} नर नारो ।

१- ज, ब, - म

६- ब - उतरि परे पुरसरि के रैता

२- ब - राम

१०- ब - राम लान गुह लोय समेता

३- ज, ब, स - लोयन लाम

११- ब - राम सकीच

४- ब - केहि, स- बड़

१२- ज - वाजु दोन्हा विधि बड़ फल पूरो ।

५- ब- सुपात

ब - सब विधि दोन्हा मोहि भलि पूरो ।।

६- ज, ब, स - म

ग - वाजु दोन्हा विधि निधि भरि पूरा ।।

७- ज, ब, स - प्रभा

१३- ब - विधि

८- ब - मूमि पत

१४- ब, स - सुनि तोर- बासो

- ३१८- २।१६२।११८ 'होहिं' ^१ 'उनीह बिकल नरगारी ।
- ३१९- २।१६३।११३।८ मानत 'भूमि' भूरि ^२ 'निज भागा ।
- ३२०- २।१६३।११४।८ दीहा एक दैवि बट बाहिं भलि 'डासि' ^३ 'पुडुल तुन पात ।
- ३२१- २।१६४।११६।१ सोभा बहुत 'धौरि' ^४ 'भलि 'धौरि' ^५ ।
- ३२२- २।१६४।११७।८ भई मुदित 'सब' ^६ 'ग्राम बूटो ।
- ३२३- २।१६६।१२२।८ राम ललन 'पथि' ^७ 'क्या सुहाई ।
- ३२४- २।१६६।१२३।१ आगे रामु ललु 'बने' ^८ 'पाई ।
- ३२५- २।१६७।१२४।८ 'विरहित' ^९ 'केर' ^{१०} 'मुदित' ^{१०} 'मन चरहां ।
- ३२६- २।१६७।१२५।४ तब मुनि 'जाग्रम' ^{११} 'दिर सुहाए ।
- ३२७- २।१६८।१३०।६ धु पराव 'विष्ण' ^{१२} 'तै' ^{१३} 'विष्ण' ^{१३} 'भारो ।
- ३२८- २।२००।१३३।२ ललन दोल 'पथ' ^{१४} 'उतर' ^{१५} 'कराए' ^{१५} ।
- ३२९- २।२००।१३३।७ जील किरात 'वैष्ण' ^{१६} 'सब' ^{१७} 'जार ।
- ३३०- २।२०४।१३७।८ गुंज मंजुतर ^{१८} 'मंजुतर' ^{१८} 'भेनो ।
- ३३१- २।२०४।१४३।५ 'तरफराहिं' ^{१९} 'भग यलहिं न धीरे' ^{१९} ।

१- क,ब,स - धौनि

२- ब - भूरि - भूरि

३- ज तथा स - मै इसदीहे का आलोप है,

ब - डारि

४- ब - धौरि

५- ब - धौरा

६- ब - मन

७- ब, स - सिय

८- ज - सिख, ब - मुनि, स - तेहि

९- ब - रहित

१०- ब - प्रमुदित

११- क,ब,स - जासन

१२- ब - दुल

१३- ब - दुल

१४- ब - मत

१५ ब - किनारा

१६- ब - दैति

१७- स - धरि

१८- ब - गुंज मंजुल

१९- क,ब,स - तरफराहिं

- ३३२- २।२०४।१४४।६ अरुह पंद^१मनु^१ 'अवसर बुका ।
 ३३३- २।२०५।१४६।७ जायेउं^२कुसल कुंवर^२ 'परुंवाई ।
 ३३४- २।२०५।१४७।५ अवध^३प्रवेसु^३ 'कोन्ह जंषियारी ।
 ३३५- २।२०८।१५३।६ तलकत^४विद्याम मोह मन^४ 'माया ।
 ३३६- २।२११।१८४।१ मुरुक्षित जाति पदो^५ 'फहंपाई^५ ।
 ३३७- २।२११।२६४।२ परी बरन तन^६का^६ 'कियारो^६ ।
 ३३८- २।२१२।१६४।४ 'जीं जमि त मळ काहे न बांफा^७ ।
 ३३९- २।२१२।१६४।६ 'गति अति तीरि^८ 'मातु जेहि लागी ।
 ३४०- २।२१२।१६६।१ मुह प्रसन्न मन^९ 'रंगु^९ 'न रोणू ।
 ३४१- २।२१३।१६७।१ दोहा^{१०} 'जे परिहरि हरि हर बरन मजहिं भूतगन घोर^{१०} ।
 ३४२- २।२१३।१६६।६ करत निलाप^{११} 'बहुत^{११} 'रहि मांती ।
 ३४३- २।२१४।१७०।१ परम^{१२}बिचित्र^{१२} 'विपातु बनाया ।
 ३४४- २।२१८।१८०।८ 'प्रजा पवि^{१३}क्त करहु लहाई^{१३} ।

-
- | | |
|--|------------------------------------|
| १- अ, ब, स - गति | ८- क- मळ पितु छानि |
| २- अ - कुंवर कुसल, क- कुंवर लनहिं | ९- अ, ब, स - राग |
| ३- ब - प्रवेसु | १०- अ - जैनन्दक विज देव गुरु करहिं |
| ४- अ - हृदय मोह कस | मातु-पितु लीर |
| ५- अ - सिहराई, क- कुलार्थ, स-मुनि जारि | ११- अ, ब, स - बिभुल |
| ६- अ, ब, स - दशा | १२- ब - पवित्र |
| ७- ब - जी जमति कल मई न बांफा | १३- ब - प्रजापाल |
| स - जी जमहि मळ काहे न बांफा | |

- ३४५- २।२१८।१८२।३ 'राय रजायवु तब' ^१ कह नोका ।
 ३४६- २।२१८।१८२।७ 'अदिनु' ^२ पोर नहिं दुषान काह ।
 ३४७- २।२१८।१८२।५ 'उक' ^३ न मोहि का कहहि कि पोनु ।
 ३४८- २।२१८।१८३।७ तुम्ह पे पावि पोर' ^४ भल' मानो
 ३४९- २।२२०।१८७।६ (विप्र ^५ द भदि बाहन' जाना' ।
 (भले अकल तप 'तेव' ^६ निधाना ।
 ३५०- २।२२०।१८७।७ चित्रकूट 'क' ^७ को न्ह मयाना ।
 ३५१- २।२२३।१८५।दीहा ^८ भल' रजुवार पद का' विधि बंचित' ^९ जोठ (
 ३५२- २।२२८।२०७।८ 'करतेहु रागु त तुम्हहि' ^{१०} दोनु' ।
 ३५३- २।२२८।२०।५ तेहि' ^{११} फल' कर' ^{१२} फलु' दरस तुम्हारा ।
 ३५४- २।२२८।२१२।४ ('कोल कुठाट' ^{१३} कर को न्ह कुञ्ज ।
 ('गाड़ि अवध पदि' ^{१४} कठिन कुंज ।
 ३५५- २।२२८।२१२।५ घालेसि खु' ^{१५} कु' बारह' ^{१६} बाटा ।
 ३५६- २।२३०।२१३।४ भरत बचन' ^{१७} मुनिवर मन' ^{१८} मार ।

१- अ, स - राय राज सबहों

ब - लाम राज सबहों

२- अ, स - अदिनु ब - अहित

३- अ, ब, स - ठर

४- अ, ब, स - फल

५- अ, ब, स - नाना

६- अ, ब, स - पुंज

७- अ - काँ, ब - दिसि

८- अ, स - विधि बंचक, ब-बड़ बंचक

९- अ - करतेहु तुम्हहि रागु नहिं दोनु

ब - करतेहु रागु तुम्हहि नहिं दोनु

१०-अ, स- भल,

११- अ, ब, - भल, स-मा

१२- ब - कुल कुठार

१३- अ - पोरि अवधिति

१४- अ, स - बारह , ब- पार

१५- ब - मुनि मुनिवर

- ३५७- २।२७०।२१४।दीक्षा-रान बिह ब्याकुल भरतु वानु^१वसि^१ 'समाज ।
 ३५८- २।२३१।२१५।८ 'सुक^२ 'बंदा चित्तादिक मोगा ।
 ३५९- २।२३१।२१८।१ कवन सुनत सुरगुरु^३ 'मुखा^३नै^३ ।
 ३६०- २।२३२।२१६।७ वेद पुरान वापु सुर^४ 'माखो^४ ।
 ३६१- २।२३३।२२१।दीक्षा - दैवि^५ 'सकप^५ 'मनै^५ 'का^५ 'मुदित कन फलु पाश।
 ३६२- २।२३६।२३०।दीक्षा - 'सकय लोक सब^६ 'लोकपति बाह्य भभरि भान ।
 ३६३- २।२३८।२३२।२ मुदित 'तुष्टि^७ 'कु पाह^७ 'सुना^७ ।
 ३६४- २।२४४।२५२।६ 'कनि^८ 'कहि^८ 'जाति^८ 'कै^८ ।
 ३६५- २।२४६।२५७।७ दैवकाल कसर^९ 'बुहारो^९ ।
 ३६६- २।२४६।२५८।५ ली सब माति^{१०} 'घटि^{१०} 'वीकाई^{१०} ।
 ३६७- २।२४७।२५८।दीक्षा - भरत^{११} 'विनय^{११} 'सकदर^{११} 'सुमि^{११} 'करि^{११} 'विचा^{११} 'वीरि ।
 ३६८- २।२४७।२६०।१ गुरु साहिब^{१२} 'बुकुल^{१२} 'क्याहि^{१२} ।
 ३६९- २।२४८।२६३।५ तात^{१३} 'जाय^{१३} 'जिय^{१३} 'करहु^{१३} 'मस्तन^{१३} 'गलानो ।

१- अ - सकल

८- अ- सुधा

२- अ, व - मृग

९- अ - जब जिय नह

३- अ, व, - सुखानै

१०- अ, व - अनुसारो

४- अ, व, स - जातो

११- अ, व, त - करहिं

५- अ - सौह सकप सब

१२- अ - कवन

६- अ, स - सकहि लोक सब ,

१३- अ - बुहारो

व - सकहि बिलीकल

१४- अ - जाय अमु , व- बुधा अमु ,

७- अ - तुष्टित

स - जाय अमु

- ३००- २।२५४।२०७।दीक्षा- दीड सनाव 'निमिराडु रघुराडु' नहाने प्रात ।
 ३०१- २।२५५।२८०।७ 'कतु' रामगिरि बन तापस थल ।
 ३०२- २।२५५।२८०।८ सुत समेत 'संत' 'सुत' साता ।
 ३०३- २।२५६।२८३।९ सुत सुत बसु 'सैवसरि' 'बारो' ।
 ३०४- २।२५६।२८४।९ कनो 'मालि' 'कन' समुपकार ।
 ३०५- २।२५६।२८५।६ 'कन' कनसुर करिहरि राडु ।
 ३०६- २।२५७।२८७।दीक्षा- कनो समथ 'सिर' भारत गति राति सुकानिभयानि ।
 ३०७- २।२५८।२८८।दीक्षा- करिव न 'सोडु' 'सनेह' कस कलंड भूप बिलगाव ।
 ३०८- २।२५८।२८०।दीक्षा- 'सुम्ह' तनि तात सीहात गृह जिन्हहि तिन्हहि द्विषिवाग ।
 ३०९- २।२५९।२८९।७ राम कन 'गुर' 'नृपति' सुहाए ।
 ३१०- २।२५९।२९१।दीक्षा- ग्यान विधान सुवान सुवि 'काम' 'वीर' नरवात ।
 ३११- २।२५९।२९२।३ कीन्ह बाप प्रिय प्रेम 'प्रधाना' ।
 ३१२- २।२५९।२९२।५ तापस मुनि मज्जुर 'मुनि' 'सैलो' ।
 ३१३- २।२५९।२९३।५ 'मीन' मालि 'सै' 'मीन' बाडर ।

- १- व - मुनिराज मालि रघुराज , ६- क - सुम्ह तनि तात सीहात गृह जिन्हहि
 व - मुनिराज मालि राम , विधाता नाम
 स - सुमराज रघुराज १०- व - गुन
 २- व - कतुल ११- व - व वीर धरम
 ३- व - संगत १२- व - प्रधाना
 ४- व - विविध सरि १३- व, व, स - गन
 ५- व, व, - बात, १४- व, स- मन मलीन
 ६- व - बाह १५- व - मन
 ७- व - सम
 ८- व, व, - सौक

- ३८४- २।२६०।२६४।५ पुनि^१पुनि^१ सेवक विकल सब लीगा ।
 ३८५- २।२६०।२६४।७ पुर स्वाखी^२हरि^२ धियं हारी ।
 ३८६- २।२६२।२६६।८ पुन^३गति^३ नट पाठक जाचीना ।
 ३८७- २।२६२।३००।९ सीक सीक^४ कि बात^४ सुभार्ह ।
 ३८८- २।२६२।३००।३ जाकी^५स्वामि^५ सख^५ कुकुता ।
 ३८९- २।२६३।३०२।३ सी उबाटु सबकी^६सिर^६ पैता ।
 ३९०- २।३६३।३०३।२ भारत भाति सब कै^७मति^७ जंत्री ।
 ३९१- २।२६३।३०४।१ लु मति बावला^८कवि^८ समई ।
 ३९२- २।२६४।३०५।५ तात^९बात^९ बिनु बात समारी ।
 ३९३- २।२६४।३०५।६ समहि सखि सबु हीत^{१०}बहुवार^{१०} ।
 ३९४- २।२६४।३०५।८ तस^{११}उत्पात तात बिधि^{११}कीन्हा ।
 ३९५- २।२६५।३०८।६-पूर स्वाखी सराहि कुत^{१२}बरणात^{१२} सुरवरु फूस ।
 ३९६- २।२६७।३२५।५ बल्लु^{१३}कुल^{१३} फा परहि न^{१४}बाते^{१४} ।
 ३९७- २।२६८।३२७।६-मय मन^{१५}मन^{१५} तन^{१६}कवन सखि विराग बिभार ।

१- व - पुनि

२- व - हरिणि

३- व - गन

४- व, व - कुपास

५- व - राम

६- व, व, - उर

७- व, व, व - मन

८- व - करि, व- कत

९- व - बात, व- बात

१० - व - पुलारु

११- व - ज्ञ

१२- व, व- हरणात

१३- व - सुमम

१४- व, व - बाते

१५- व, व, व - तन

१६- व, व, व - मन

- ३६८- २।२८६।३२६।३ कीन्ह घोर यरि गवनु^१ महीषा^१ ।
 ३६९- २।२६६।३२६।दीहा - भरत पापु^२ पद^२ बंदि प्रभु पुनि वीर^३ मिति मैटि ।
 ४००- २।२६६।३२०।५ बार बार^४ हित मित^४ दीऊ भाई ।
 ४०१- २।२६६।३२०।८ कसर^५ बाजि गव पशु छिय हार^५ ।
 ४०२- २।२७०।३२१।८ चले मुवित मन डर^६ न तरीछी ।
 ४०३- २।२७०।३२३।१ निय निय काय पाछ सित^७ जीये^७ ।
 ४०४- २।२७०।३२३।५ समाधान^८ कारि मुक्त कसार ।
 ४०५- २।२७१।३२३।दीहा- पुनि^९ सि पाछ क्योस बड़ि मनक बोलि विनु साधि ।
 ४०६- २।२७१।३२४।४ कसन कसन^९ बासन^९ कृत नैमा ।
 ४०७- २।२७१।३२४।६ वसरथ पशु पुनि^{१०} पद तमाई ।

-
- १- व - कुम्हिल मुनीषा
 २- व - पद
 ३- व - मिति - मिति
 ४- व, व - व - सबहि
 ५- व - डर
 ६- व - धीये, व - बीये
 ७- व - सावधान
 ८- व - पुनि
 ९- व - बासन
 १०- व, व, व - लवि

- ४२२- ३।२८७।१४।६ आयुष कीक ^१प्रकार^१ ।
- ४२३- ३।२८७।१४।१५ वेताल बोर^२कपाल^२ तास ब्याह गीणि नैवहीं ।
- ४२४- ३।२८८।१४।दोहा- हरणित बरघत पुमन ^३पुर^३ वाजहि गगन निषान ।
- ४२५- ३।२८८।१५।७ करसि^४ पान^४ सीबसि^४ दिन रातो ।
- ४२६- ३।२८९।१७।८ बर्हा राम^५ जसि^५ अमुति बनाई ।
- ४२७- ३।२८९।१८।४ तैल सीत रूप^६ सुविनोता^६ ।
- ४२८- ३।२९०।२०।दोहा - भी जसि अज सपैत^७ कुमानिकै^७ पय मन लाहर्ही ।
- ४२९- ३।२९१।२१।दोहा- बिपुल पुमन पुर बरणाहि^८ गावहि^८ प्रमु^८ बख गुन नाथ^८ ।
- ४३०- ३।२९३।२४।१ बाहिय^९ चिन्ता कोन्ह कियेती ।
- ४३१- ३।२९४।२५।दोहा- जी वै^{१०} राम^{१०} कुल जसि कसिहि^{१०} कसानन बाह ।
- ४३२- ३।२९७।२२।६ मयुकर^{११} मुडर पैरि^{११} सज्जाई ।
- ४३३- ३।२९८।२४।७ नय पल्लव^{१२} कुमुदित^{१२} तल्ल नाना ।

१- व - प्रकार, व, स- प्रकार

२- व - कपाल

३- व - पुम

४- व - करहि

५- - सीबसि

६- व, स - जसि

७- व - पुम नोता

८- व - कुमानिषान के

९- व - पुर

१०- व - बहु बिधि

११- रामन

१२- व - मुडर मौर

१३- मुकुंद

राजपरिचयानुस

अनुसरी संयोजन

क्रम सं०	संयोजन सं०	नागरी प्रचारिण सभा का पाठ
४३४-	४।३०५।१।२	जह कस संसु म्मानि सी कासी सेवक कसन ^१ ।
४३५-	४।३०५।१।४	तैहि न ^२ भवहि ^३ मन ^३ पद की कृपात संकर सरिष ।
४३६-	४।३०६।२।८	मीर म्याड मै पूछा साई ^४ । तुम्ह ^५ पूछहु कस ^५ नर की नाई ^६ ।
४३७-	४।३०६।४।५	तिर दुवी ^७ ज ^७ पीठि बढाई ।
४३८-	४।३०७।४।८	कपि कर मन बिबाह ^८ होहि ^८ रीती ^९ ।
४३९-	४।३०७।४।बीडा	तब अनुमंत उमय विधि ^{१०} की ^{१०} सब क्या पुनाई ^{११} ।
४४०-	४।३०७।५।५	कहाहि ^{१२} वैति की ^{१२} पट डारी ।
४४१-	४।३०७।५।बीडा	सखा कवन सुनि ^{१३} हरणी ^{१३} कृपासिंधु बलीव ।
४४२-	४। . . .	कारन कवन कसहु ^{१४} जन पीछि कसहु ^{१४} सुगीव ।
४४३-	४।३०७।६।११	रिपु ^{१५} सने ^{१५} मोहि ^{१५} मारीसि ^{१५} अति भारी ।
४४४-	४।३०८।७।१०	सकल विधि ^{१६} पेटव ^{१६} काज मै तारी ।
४४५-	४।३०८।७।१७	कहाहि ^{१७} संत तब पद ^{१७} , अवराक ^{१७} ।
४४६-	४।३०८।८।२	मुठिका ^{१८} मारि नहा सुनि गया ।

१- व - सेह रहि न कस,

२- व - भवहि

३- व, व, स - मति

४- व --- कस-पूछहु

व - मीर नाम पूछहि गीसाई,

व - मै कजान होहि पूछहु साई

५- व - कस पूछहु

६- त - म्याड

७- व - निव

८- स - तैहि

१०- व, व, स - कहि

११- व - बुझाई

१२- व - मन विधि वैति कीन्ह

स - हम विधि वैति कीन्ह

१३- व, व - हरणि उर

१४- व - मोहि सन कहु (हसी पांडुलिपि मै
'कारन' कवन के पश्चात् 'व' का पाठ
अधिक मिलता है),

१५- व - समान

१६- व - मारि अति, व - मारीसि अति

१७- व - करव, स- कसहु (व मै यह बीसाई
नहीं है)

१८- व व अवराक (व मै यह बीसाई नहीं है)

- ४४७- ४।३०६।६। दोहा सुनहु राम स्वामी ^१ 'सन' चत न बातुरी पीरि ।
 ४४८- प्रभु बखुं मैं ^२ 'पापी' अंतकास गति तीरि ।
 ४४९- ४।३१०।११७७ उपादारु ^३ 'जीभित' को नाह ।
 ४५०- ४।३१०।११। दोहा लखिफा सुरत ^४ 'बीलार' पुरज बिप्र सपाव ।
 ४५१- ४।३११।१२।१० 'जब' सुगोव ^५ 'मन' फिरि आर ।
 ४५२- ४।३११।१३।१ 'गुंज' ^६ 'मकुनिकर' बहु तोभा ।
 ४५३- ४।३११।१४।२ दाभिनि दमकि ^७ 'रह न' फन माही ।
 ४५४- ४।३११।१४।५ कस पीरिहु फन सत ^८ 'हतराह' ।
 ४५५- ४।३१२।१५। दोहा कबहुं प्रवत ^९ 'बत मारुत' जहं तहं मैष बिलाहि ।
 ४५६- ४।३१२।१५। दोहा बिनि कपूत ^{१०} 'के उपवे कुल सपुम' न ^{११} 'साराहि' ।
 ४५७- ४।३१६।२४। दोहा दीत जाह उपवन ^{१२} 'सर बिकसित बहु' कंज ।
 ४५८- ४।३१६।२६।५ रासा राम ^{१३} 'निहीरि न' बीशी ।
 ४५९- ४।३१७।२६।६ हम सोता के ^{१४} 'सुधि लोन्ही' जिना ।
 ४६०- ४।३१७।२६।१० कस कहि ^{१५} 'लखन' सिंगु तट बाह ।

१- क. स - कवन, क- सुभा

१०- ब - बीराह

२- क. ब, स - पातको

११- क. ब, - मारुत बत

३- ब - पीकित

१२- क - के उपवे कुल की कपी,

४- क - बीलाहड, क- बीलाह तव

ब - कुल उपवे संपति वरम

५- क. ब, - तव

१३- क - सबाह नसाह

६- स - गुह

१४- ब - सुभा सर बिकसित बहु

७- क - गुंजहि

स - सर बिकसित बहु तह

८- क - निकर मकुम, ब - बंधरीक,

१५- ब - निहीरा

स - निकर मकुम

१६- क. ब, - बिन लोना (कुहरी पंक्ति मैं मो

९- क. स - रहत, क- रही

दीनी पांडुलिपियां मैं तुकांत

'प्रबोना' मिलता है जो कुछ है)

१७- ब - कवन, स- सकत

- ४६१- ४।३१७।२८।१ बाब^१भ्रिया^१ ' करि सागर तीरा ।
 ४६२- ४।३१७।२८।४ जरी पैल 'जति'^२ ' तीव्र अपारा ।
 ४६३- ४।३१८।२८।दीहा में बैसत^३ तुम'नाही ' गोथहि दुष्टि अपार ।
 ४६४-४।३१८।३०।२ 'पठव^४ किमि ' सबही कर नायक ।
 ४६५- ४।३१८।३०।३ 'सुनवहि^५ ' भयैउ पक्ताकारा ।
 ४६६- ४।३१९।३०।दीहा तित्कर सकल मनोरथ सिद्ध करहि^६त्रिपुरारि^६।
-

१- ब - कुपा

२- ब - रवि

३- ब - दैत नहि

४- ब - किमि पठवहुं ('ब' में यह भीपाई नहीं मिलती)

५- ब - सुन कपि ('स' में इस भीपाई का भी आतीप है ।

६- ब, व, स - त्रिपुरारि

राजपरिचयानुस

पंचम सर्गान

क्रम सं०	संदर्भ सं०	नागरी प्रचारिणी सभा का पाठ
४६७-	५।३२४।२।११	'मागो' ^१ विधा ^२ 'साहि' सिरु नावा ।
४६८-	५।३२४।२।११	राम काहु ^३ सब करि ^४ सुप बत बुद्धि विधान' ।
४६९-	००	जासिण'के गह ^५ ही'रणि बसि सुमान ।
४७०-	५।३२४।३।१२	'बहु'दुट ^६ दुट ^७ बुद्धट' बीथी नारु पुरु बहु विधि बना ।
४७१-	५।३२५।४।४	'मुठिका' ^८ इक'महाकपि' स्त्री ।
४७२-	००	रुधिर ^९ 'बसत' धरनी डनपनी ।
४७३-	५।३२५।४।७	तब ^{१०} 'बाने' निधिबर संघार ।
४७४-	५।३२५।५।८	हरि' ^{११} मधिर' ^{१२} तह' ^{१३} मिन्न' बनाया ।
४७५-	५।३२५।५।१०	रावायुब ^{१४} अंकित'गुह' सीमा बरनि न जाह ।
४७६-	५।३२६।६।७	मोरे ^{१५} हुड्डय प्रोति ^{१६} 'बसि' सीह ।
४७७-	५।३२६।६।८	बी ^{१७} सुन्द'रायदीन' ^{१८} सुरागी ।
४७८-	५।३२६।६।१०	सुनत ^{१९} जुस तन पुस्तक मन मान सुमिरि'गुन ग्राम' ।
४७९-	५।३२६।८।१	'फिरहि' ^{२०} तै काहे न' ^{२१} हीहि' बुझारी ।
४८०-	५।३२६।८।२	पावा' ^{२२} वनिवाध' ^{२३} 'विधरकमा' ।
४८१-	५।३२६।८।३	'धुनि' ^{२४} सब कथा विमीचन कही ।

१- व - पागिसि, ब - पागि, स-पांगो

२- व - तीहि कीठ

३- क- काहु सुत, स- काहु सुम

४- स - बुधि बत रूप

५- व - वैह बसै सुरसा, ब, स- वै सुरसा गर

६- व- बहुदुट सुन्दर सुमान, क-बहुदुट बाट विविध

स- बहुदुट हाट बुबाट

७- व, ब, - मुष्टक

१०-व, ब, - जानैठ

११-व - सुन्दर

१२- व- मन्न, क- विपन्न

१३-व, ब, स - सुगुह

१४- व - का

१५-व - दीनबन्धु

१६- क- श्रीराम, स- गुन राम

१७- व - काहे न वै नर, क-तीहि नर

- ५।३२६।८।३ वैरि बिधि जनसुता^१तह^२ रहीं ।
 ४८३- ५।३२६।८।६ 'करि^३' सीरु रूप गछे पुनि तरवा^४ ।
 ४८४- ५।३२७।८।बीर परम बु पुछी भा पवनसुत^५'देहि^६' मानकी दीन ।
 ४८५- ५।३२७।९।२ संग नारि बहु 'किर^७' बनावा ।
 ४८६- ५।३२७।९।८ सल सुधि नहिं रूखीर^८'बान^९' को ।
 ४८७- ५।३२७।१०।२ नाहि स^{१०}सपादि^{११} 'मानु मम बानो ।
 ४८८- ५।३२७।१०।५ रघुपति बिरह कल^{१२}'संजात^{१३} ।
 ४८९- ५।३२७।१०।८ सीतहि^{१४}'बहु बिधि ब्रासहु^{१५} 'जाई ।
 ४९०- ५।३२७।१०।बीर- मवन गछे^{१६} 'सकंधर^{१७} कलापिआधिनि^{१८} 'वृंद ।
 ४९१- ५।३२८।११।२ कुवह बिरहु क^{१९}'नहि सहि^{२०} 'जाई ।
 ४९२- ५।३२८।११।७ अवनामुत^{२१}'जैहि^{२२} 'क्या सुहाई^{२३} ।
 ४९३- ५।३२८।११।७ बरह नाय^{२४}'हो^{२५} निपट कियारो ।
 ४९४- ५।३२८।११।१० 'जनि मनो^{२६} 'मानहु^{२७} 'जिय^{२८} 'ऊना ।
 ४९५- ५।३२८।११।१ 'कछेड राम कियोग^{२९} 'तव^{३०} 'सीता ।

४९६०

- | | |
|-----------------------------|------------------------------|
| १- क, व, - जहं | १०- व - जति सहेड न |
| २- क, स - करि | व - क्य सहा न, स- क्य सहेड न |
| ३- व - निरसि | ११- स - बिधि |
| ४- क, स - मेरा | १२- क, व, स - सुनाई |
| ५- व, स- मानु | १३- उ - मम, क- मोहि |
| ६- व, स - सत्य | १४- व - मनो जनि |
| ७- क, व, स - संतापं | १५- स मानेहि |
| ८- क, व, - ब्रास के देलावहु | १६- क, व, - मन |
| ९- उ - सकंधरहि कहा बिसिधरी | १७- व - राम कियोग कहा |
| व - सकंध तव कहा निहावर | १८- क, व, - पुन |

४६६	५।३२६।१५।६	तत्त्व ^१ ' प्रेम कर मम जल तौरा ।
४६७	५।३३०।१६।३	कवर्षि मातु मै जाउं ^२ ' लताई ।
४६८	५।३३०।१६।५	नितिवर नारि ^३ ' तोहि ^३ ' ते अहहि ।
४६९	५।३३०।१६।५	तिहुं पुर नारदास ^४ ' जसु ^५ ' नैहहि ।
५००-	५।३३०।१७।३	कारहुं ' बहुत ' रघुनायक कीहुं ।
५०१-	५।३३०।१७।५	' बार बार नादेसि ' पद सीसा ।
५०२-	५।३३०।१८।४	' रज्जक ^६ ' मदि मदि मदि डारै ' ।
५०३-	५।३३१।१६।१	' पठेसि ^७ ' मैघनाद बल्लाना ।
५०४-	५।३३१।१६।३	' बंधु ^८ निषा ^९ ' सुनि उपवा क्रोधा ।
५०५-	५।३३१।१६।८	' मुठिका ^{१०} ' मारि बड़ा तरा जाई ।
५०६-	५।३३१।२०।१	ब्रह्मबान ^{११} ' कपि कहुं तेहि ^{१२} ' मारा ।
५०७-	५।३३१।२०।४	तापु कुत ^{१३} ' कि बंध तर ^{१३} ' बावा ।
५०८-	५।३३१।२०।४	प्रभु कारज लगे ^{१४} ' कपिहि ^{१४} ' बंधावा ।
५०९-	५।३३२।२२।३	बाके ^{१५} ' प्रभु ^{१५} ' फल प्रभु ^{१५} ' लागो भूला ।
५१०-	५।३३२।२२।६	मोहि न कहु बांधे ^{१६} ' क ^{१६} ' लाजा ।
५११-	५।३३२।२२।८	देखहु तुम निज ^{१७} ' कुलहि ^{१७} ' बिचारो ।

१- व - सत्य

२- अ - जाहु , व - जात

३- व, स - तुम्हहि

४- व - तोनि लोक नारद

५- अ - गुन

६- व, स - उदा

७- व - बार बारनाइ

८- व - अहं तहं पटकि पटकि भट पारै

९- अ, व, पठवा

१०- अ - मनुज बंधहि , व-स- बंधु बंध

११- अ, व, - मुष्टक

१२- अ, व, तै कपि कहुं

१३- अ - बंध तर , व-किम बंध

स - बंध तर

१४- अ, व, स- बापु

१५- अ - अति , व, स- मोहि

१६- व, स - कर

१७- अ, व, - हुदय

× 'व' मै रज्जक के स्थान पर 'राधास' का पाठ मिलता है ।

- ५१२ ५।३३२।२३।५ 'बाह' ^१ रही पाह' निन पाह' ।
 ५१३ ५।३३३।२३।६ 'सरित' ^२ 'मूल' ^३ 'विन्ह' ^३ 'सरित' नह नाहो' ।
 ५१४ ५।३३३।२४।४ मति प्रम' ^४ 'तोहि' ^४ 'प्रगट' मै जाना ।
 ५१५- ५।३३३।२४।८ 'सबही' कहा मैत्र भुल भाई' ^५ ।
 ५१६- ५।३३३।२५।१ पूंछो न 'बानर' ^६ 'तह' ^६ जाहहि ।
 ५१७- ५।३३४।२६।१ 'मंदिर' ते मंदिर' ^७ 'बहु' ^७ 'बाह' ^७ ।
 ५१८- ५।३३४।२६।८ उलटि पलटि लंका 'सब' ^८ 'जारी' ।
 ५१९- ५।३३४।२७।८ पुनि' ^९ 'मो' कहु सौ दिन सौ' ^९ 'रातो' ।
 ५२०- ५।३३४।२८।५ तलफत मीज पाव 'जिमि' ^{१०} 'बारा' ।
 ५२१- ५।३३४।२८।७ आद' ^{११} 'संपत' मधुमल' ^{११} 'साए' ।
 ५२२- ५।३३५।२८।१० दोहा - जाह पुकारे' ^{१२} 'ते सब' ^{१२} 'वन उबार उबारा-व' ।
 ५२३- ५।३३५।२९।१ मधुवन के फल सकहि' ^{१३} 'कि' ^{१३} 'साह' ।
 ५२४- ५।३३५।२९।२ यैहि जिमि' ^{१४} 'मन' ^{१४} 'बिचार' ^{१४} 'कर' ^{१४} 'राजा' ।
 ५२५- ५।३३५।२९।६ पुनि सुगोव बहुरि' ^{१५} 'तोहि' ^{१५} 'मिलेऊ' ^{१५} 'हिं' ।
 ५२६- कपिन्ह सलित रघुपति पहि बसेऊ ।

१- व - गह

१०-व,स - कपि

२- अ,व,स - सजल

११- अ - हमको सौउदिन , व-मो कहु सोऊ

३- स - रोहि

दिन, स- मो कहु रोहि दिन

४- अ,व - तोरि

१२- व,स - सु

५- व - सविम कहा यैहि मैत्र भलाई

१३- अ,व,स - सलित मधुर फल

६- व - सबहो कहा मैत्र भल न्यायो

१४- अ,व, - सबहिं, व- सकल तब

स - सबहिं कहा रहि मैत्र भलाई

१५- अ,व,स - न

७- अ,व, - बंदर । ८- बांदर

१६- अ - कर

७- अ,व, - अब

१७- अ,वन ,व - कपि

८- अ - ते मंदिर मंदिर

१८- व - उठि

९- अ,व,स - जाह

* 'स' मै वन उद्यालियाँ का पाठ इस प्रकार है -

- ५२७- ५।३३५।२६। दोहा - प्रीति वसित 'उठ' ^१ 'रघुपति' कहना पुन ।
 ५२८- ५।३३५।३०।७ 'पुनत' कुमानिधि मन जति बार ^२ ।
 ५२९- .. 'पुनि' सुमान हरणि धिय तार ^३ ॥
 ५३०- ५।३३५।३०। दोहा - नाम पाहूँ ^४ 'राति' दिनु 'ध्यान' तुम्ह कपाट ।
 ५३१- ५।३३५।३१।५ अगुन एक चोरु मैं 'माना' ।
 ५३२- ५।३३५।३१।७ बिरह 'बगिनि' तन तुल समोरा ।
 ५३३- ५।३३५।३२। दोहा - सुन प्रभु बचन बिलौकि मुल 'गात' हरणि ^५ 'सुर्मत' ।
 ५३४- ५।३३५।३३।२ प्रभु 'कर' पंकज कपि के 'सोसा' ।
 ५३५- ५।३३५।३३।४ रघुपति बरन भाति 'गोह' ^६ 'पाषा' ।
 ५३६- ५।३३५।३५।६ 'करकि' बाम की 'सु' कहि देखो ^{१०} ।
 ५३७- ५।३३५।३५। दोहा - यहि बिधि आह 'कुमानिधि' ^{११} 'उतरे' सागर तीर ।
 ५३८- ५।३३५।३६।४ 'दुतिन्ह' सन ^{१२} 'पुनि' पुरजन बानी ।
 ५३९- .. 'पैदीपरो' 'बाधक' 'जुलानी' ।
 ५४०- ५।३३५।३७।२ 'मंगल' महुं मय 'मन' जति ^{१४} 'कांथा' ।

१- उ.व. - बैठ सकल

६- उ - सुख, व.स- तीह

२- व - पुनि कुमात उठि हूय लारा

१०- उ - करकि बाम की कहि देखो

३- व - जानि सुमर रघुपति मन बार

११- व - करके बाम की सुभ तेरी

४- उ.व.स - दिवस निधि

स - करकि की सुभ सु देखो

५- उ.व. - जाना रैव मैं इस अहील का
(आलीप है)

१२- व - कुमायतन

६- व - जल

१३- उ - दुतिन्ह सौ व - जति समोत

७- उ - हरी तन, व- हूय हरणि

१४- व - हूय

८- उ - पद कंप कपि के , व- पद

१५- स - जति मन रैव मैं इस अहील का
का पाठ 'मंगल' पाह अंगल राखी

पंकज जपि कर

है)

- ५४१- ५।३३८।३०।७ सिंधु पार सेना सब^१ बाह^१ ।
 ५४२- ५।३३९।३८।६ तजी^२ चौथि के चंद कि नाह^२ ।
 ५४३- ५।३३९।३८।६।६।६ - सब परिहरि^३ रघुवीरहि भजहु भजहि जेहि संत^३ ।
 ५४४- ५।३३९।३९।४ वेद की रक्षा^४ सुनु प्राता^४ ।
 ५४५- ५।३३९।४०।७ रहि^५ अस्ति मनुहु रिपु प्रीता ।
 ५४६- ५।३४०।४२।१ वायुहीन^६ भर^६ सब^६ तबहों ।
 ५४७- ५।३४०।४३।३ ताहि राति^७ कपोत^७ पहि बाए ।
 ५४८- ५।३४१।४४।६।६।६ - उम्य भाति तेहि वानहु^८ हति^८ कह^८ कृपा निवेत^{१०} ।
 ५४९- ५।३४१।४५।१३ अ^९ कृपालु कहि कपि नले^९ बाद हनु समेत^{११} ।
 ५५०- ५।३४१।४५।१३ रहु^{१२} टठुकि^{१२} टठुकि^{१३} टक^{१३} पल^{१३} रीकी ।
 ५५१- ५।३४१।४५।१४ वानन^{१४} जमित^{१४} पवन^{१४} मन^{१५} मोहा ।
 ५५२- ५।३४२।४६।६ अतिनय^{१६} निपुन^{१६} न भाव^{१६} अनोतो ।
 ५५३- ५।३४२।४७।३ समता^{१७} तरु^{१७} तपो^{१७} अधियारी ।
 ५५४- ५।३४२।४७।४ तब^{१८} लंगि कृत^{१८} जोव^{१८} मन^{१८} माहो ।
 ६५५०

१- ब - बहु (बे में अदाली का पाठ)

सिंधु पार नलो रघुवीर^१ अविमत्ता है)

२- अ, ब, स - चौथि वेदा के न्याह

३- अ - रघुवीर मनु भजे निराय सुरसंत,

ब - रघुवीर पद भज कहहिं सद ग्रंथ,

स - रघुवीर पद भजहु भजहि जेहि संत

४- ब - सुर प्राता

५- ब - तेहि

६- अ, ब, स - वायुहीन

७- अ, ब, स - तिमिर

८- अ, ब, स - कपोत

९- अ - अ

१०-क- कृपा निधान

११-क- अदादिदि हनुमान

१२-अ - रक्षा ठाढ़

१३- ब - पद

१४- स - बदन

१५- अ, ब, स - इति

१६- अ, ब, अतिनय

१७- ब, स - तिमिर तरुन

१८-क- ब - उर

५५५-	५।३४२।४७।८	‘तेहि ^१ ’ प्रमु ^२ हर ^३ णि ^४ हुक्य ^५ मोहि ^६ लावा ।
५५६-	५।३४२।४८।३	कर ^७ ि ^८ स ^९ ‘तेहि ^{१०} ’ मायु ^{११} समाना ।
५५७-	५।३४३।४८।६	सगुन ^{१२} उपायक ^{१३} ‘पर ^{१४} हित ^{१५} ’ निरत ^{१६} नीति ^{१७} फुट ^{१८} नैप ।
५५८-	५।३४४।५२।२	‘सकल ^{१९} बार्धि ^{२०} ’ ‘कपोस ^{२१} ’ तहि ^{२२} जानै ।
५५९-	५।३४४।५२।७	सुनि ^{२३} लखि ^{२४} न ^{२५} ‘तब ^{२६} ’ निकट ^{२७} बीलार ।
५६०-	५।३४४।५३।३	‘कहसि ^{२८} न कय ^{२९} बापन ^{३०} ’ दुख ^{३१} लाता ।
५६१-	५।३४४।५३।४	पुनि ^{३२} कहु ^{३३} ‘सवरि ^{३४} ’ बिभो ^{३५} भान ^{३६} कैरा ।
५६२-	..	‘जाहि ^{३७} ’ नृत्य ^{३८} वाई ^{३९} बति ^{४०} नेरा ।
५६३-	५।३४५।५४।१	मानसु ^{४१} ‘कहा ^{४२} ’ क्रीड ^{४३} तावि ^{४४} तैथी ।
५६४-	५।३४५।५४।४	राम ^{४५} अपरा ^{४६} दो ^{४७} न्है ^{४८} ‘हम ^{४९} ’ तपी ^{५०} गी ।
५६५-	५।३४५।५४।८	‘अमित ^{५१} नाग ^{५२} बहु ^{५३} बिभु ^{५४} त ^{५५} ’ क्खि ^{५६} लाला ^{५७} ।
५६६-	५।३४५।५६।२	‘सक ^{५८} सर ^{५९} ’ एक ^{६०} नीति ^{६१} नल ^{६२} सागर ।
५६७-	५।३४५।५६।७	बिजय ^{६३} बिभूति ^{६४} कहा ^{६५} ‘जा ^{६६} ’ ताके ।
५६८-	५।३४६।५७।१	सुनत ^{६७} सम ^{६८} ‘मन ^{६९} पुख ^{७०} ’ मुमु ^{७१} कार ^{७२} ।

१- व - तै

२- अ, ब, स - लता

३- अ, ब, स - परमहित

४- अ - बार्धि सकल

५- अ, ब, स - कपिपति

६- व - तैरि, न-हंसि

७- व - कहि न सकहि आपन

८- व - कहसि न काहे निज

९- व - कुसल

१०- व - जातु

११- व - बचन

१२- व - तब

१३- व - बिभुस बरन ता तैव

१४- व - प्रमु सर

व - उपायक

१५- अ, ब, स - ल

१६- व - स मुत

५।३४५।५४।८ ‘उ’ ई इस ज्वालि का जालीप हो गया है ।

- ५६६- ५१३४७१५६१४ प्रभु आर्यु गैहिकर^१ का बर्णन ।
 ५७०- ५१३४७१५६१५ मरवावा पुनि^२ तुम्हारिअ कीन्हो ।
-

१- अ, स - कहें

२- क - कह

२- न - सब

रामचरित-मान

षष्ठ सर्ग

क्रम सं०	संदर्भ सं०	नागरी प्रचारिणा समा का पाठ
५७१-	६। ३५२। २। ७	सकल पुनहु ^१ 'विकला' फु ^१ 'भीरो' ।
५७२-	६। ३५२। २। दोहा-	अति उत्तम ^२ 'गिरि पावन' लोलहि तेहि उठार ।
५७३-	६। ३५२। २। १	कन्दुक डव नल नोल ^३ 'ते' ^३ 'तेहों' ।
५७४-	६। ३५२। २। ८	'जो नारको नूद मति धीरो' ^४ ।
५७५-	६। ३५२। २। दोहा-	'पंकर प्रिय प्रम द्रोहा' ^५ 'सिव द्रोहा प्रम दास' ।
५७६-	६। ३५२। ३। ५	राम वसन तकौ ^६ 'किय' भार ।
५७७-	६। ३५२। ४। १	बाँधि वेतु अति ^७ 'पुद्ग' ^७ 'जनावा' ।
५७८-	६। ३५२। ४। ६	बला फटकु ^८ 'प्रभु आये' पाई ^८ ।
५७९-	६। ३५२। ५। ६	'तिन्ह' ^९ 'रावनहि' जलो अब बाता ।
५८०-	६। ३५२। ५। दोहा-	वत्स ^{१०} 'जीवननिधि' कंसाति ^{११} 'पयोधि' ^{११} 'पयोधि' न दोष ।
५८१-	६। ३५२। ६। १	'निज विकलता विचारि' ^{१२} 'बहीरो' ।
५८२-	..	बिहसि ^{१३} 'गळे' ^{१३} 'गुह' और ^{१४} 'भय' भीरो ।
५८३-	६। ३५४। ६। ६	'साहु विरोधि' ^{१५} 'न काजिब' नाथा ।
५८४-	६। ३५४। ७। दोहा	आ कहि ^{१६} 'नयन' नीर ^{१६} 'भरि' गहि पद कोपत गात ।
५८५-	..	नाथ भव ^{१७} 'रघुनाथहि' जल होइ ^{१७} 'जहिवात' ।

१- व - एक विनती, उ-विनती एक

२- व, उ - तरा सेल गा

३- व - जी

४- व - जो नर मंद नूद मति धीरो

व - जो नर नूद ~~तेहि~~ नूदि तेहि धीरो

५- व - प्रम द्रोहा पंकर नाति

६- व, उ - हिय

७- व - रुचिर

८- व, उ - फु जरन न पाई

९- व, उ, स - तिन्हहि

१०- व, स - पयोनिधि जलनाति

११- उ, व, उ - उदधि

१२- व, स - व्याकुलता निज समुझ

१३- व, उ - दहा

१४- व - मति

१५- व - ता सन बैर

१६- व, उ - लीन बाति

१७- व, उ - रघुनाथ पद प्र जहिवात न

जात

- ५८६- ६। ३५४। ८। ५ नाना विधि तैहि कहैति तुम्हार^१ ।
 ५८७- ६। ३५५। ६। ४ सचिवन अ मत्त प्रमुहि तुनावा^२ ।
 ५८८- ६। ३५५। ६। ५ दोहा- नारि पाइ फिरि जाहिं जो तो न^३ कहाव^३ रारि ।
 ५८९- ६। ३५५। १०। ८ लागीं किन्तु^४ गुन मन^४ गावन ।
 ५९०- ६। ३५५। १०। १ दोहा- परन प्रबल रिपु सोय पर^५ तथपि वृत्ति न^५ जाय ।
 ५९१- ६। ३५५। ११। १ उतरी सैन^६ सखि^६ जति भोरा^६ ।
 ५९२- ६। ३५५। ११। २ सितर एक उतंग^७ जति^७ दैतो ।
 ५९३- ६। ३५५। ११। ३ परम रम्य^८ सभ भुप्र^८ कोला ।
 ५९४- ६। ३५६। ११। १ दोहा - रवि बिधि^९ कृपा रूप^९ गुन धाम रामु असीन ।
 ५९५- ६। ३५६। १२। १ दोहा - कहै^{१०} हनुम^{१०} तुनहु प्रमु वसि तुम्हार प्रिय दास ।
 ५९६- ६। ३५६। १३। ४ लंका सितर^{११} उमर^{११} जागारा ।
 ५९७- ६। ३५७। १३। ७ सोइ रव^{१२} मधुर^{१२} पुनहु पुरभूषा ।
 ५९८- ६। ३५७। १४। ८ नाति मनुज जन^{१३} छठ उर^{१३} बरहू ।
 ५९९- ६। ३५७। १५। १ अपर लोक^{१४} जौ^{१४} जौ^{१४} किरामा ।
 ६००- ६। ३५८। १६। २ नारि तुभाव सत्य^{१५} सव^{१५} कहहो^{१५} ।

- | | |
|-------------------------------|---------------------|
| १- व - कश्चि समुक्ताः | ६- व, स - करुणा सोल |
| २- व - तीर्हि सिखाया | १०- व- स- मारुत सुत |
| ३- व - कश्चि बहु रागि | ११- व, स - रुचिर |
| ४- व, स - गन्धर्व | १२- व, स - शरित |
| ५- व, स - तदपि न क्कु मन | १३- व, स - मन शठ |
| ६- व - मति थोरा | १४- व - ज्ञान |
| ७- व, स - सैल पुंग राग सुन्दर | १५- व, स, स - कव |
| ८- व, स - ज्ञात उर्तग | |

- ६०१- ६। ३५८। १६। ७ तब^१ तबकहो गूढ^१ पुगलीवन ।
 ६०२- ६। ३५८। १६। दीहा - एहि विधि करत विनोद बहु प्रात पुगट दसकंध^२ ।
 ६०३- .. एहज आंक^३ लंकापति^३ सभा गयेउ^३ नद^३ अंध^३ ।
 ६०४- ६। ३५८। १७। १ इहाँ प्रात जागी^४ रघुराई ।
 ६०५- ६। ३५८। १७। ३ पुनु सबी सकल उर बाधा^५ ।
 ६०६- .. बुधि बल तैब धनी गुन राखी^६ ।
 ६०७- ६। ३५८। २०। ४ जोसेहु लीकाल तब^७ राजा ।
 ६०८- ६। ३५८। २०। ७ परिक^८ महिस्त संग निब नारो ।
 ६०९- ६। ३५८। २०। दीहा - भारत गिरा पुनत^{१०} प्रभु अम्य करीगो तोहि ।
 ६१०- ६। ३६०। २१। १ री कपि^{११} पाति^{११} बोलु संभारो ।
 ६११- ६। ३६०। २१। ५ अंद^{१२} तयो^{१२} बालि कर बालक ।
 ६१२- ६। ३६०। २१। ६ गर्भ^{१३} गच्छे^{१३} तुम्ह जायेहु ।
 ६१३- ६। ३६०। २२। ४ तल तब जवन कठिन^{१४} तब^{१४} सहज^{१४} ।
 ६१४- .. नाति धर्म^{१५} म^{१५} ग्रात अहज^{१५} ।
 ६१५- ६। ३६०। २२। ८ पावा दरत^{१६} महु^{१६} बहु भागी ।

१- क- तब गूढ महा,

८- पुर

२- अ - बहु विधि उत्पत सकल निशि प्रात ६- ब - पुरज

उठळ दसकंध, क- बहु विधि चित्तपत

१०- व, उ- पुनतहि भारत जवन

सकल निशि प्रात भर दसकंध,

११- अ, ब, स- पांच

उ - बहु विधि उत्पत सकल निशि

१ - अ, ब, - तोहि। स- नाम

प्रात भर दसकंध

१३- अ, ब, स - कृथा

३- व, स- पुल्लपति

१४- व - म, स-तब

४- व, स - पाति

१५- व, स- सब

५- अ, स - विचार कीन्ह

१६- जात - हमहुं

६- अ, ब, उ - गुन राखी

७- अ, ब, स - सत्य सिंधु प्रभु सब उरबाधा

६१६	६।३६०।२२।दीहा	लोकपाल बल विपुल ससि ग्रसन हेतु ^१ सब राहु।
६१७	६।३६०।२३३३	^२ कुन हमार मोरु जति सोऊ ।
६१८	६।३६१।२३।५	^३ सिलिकी ^४ वानहि नल नो जा ।
६१९-	६।३६१।२३।६	^५ पुनत बचन कह ^६ बालि कुमारा ।
६२०-	६।३६१।२३।८	^७ पुन जा बचन सत्य ^८ को कह ^९ को ।
६२१-	६।३६१।२४।२	^{१०} पति छि ^{११} को धर्म निपुनाई ।
६२२-	६।३६१।२४।४	तब ^{१२} रटनि ^{१३} करहु नहि काना ।
६२३-	६।३६१।२४।१०	^{१४} पितहि ^{१५} साह ^{१६} साह पुनि तोहो ।
६२४-	..	^{१७} जवहा ^{१८} समुझि परा कह मोहो ।
६२५-	६।३६२।२४।१२	^{१९} कहु ^{२०} रावन रावन जा कै ।
६२७-	६।३६३।२७।४	^{२१} परिहरि ^{२२} परनि राम सर लागे ।
६२८-	६।३६३।२८।दीहा-	भूर कवन रावन सरिस ^{२३} स्वकर काटि ^{२४} जेहि तोस ।
६२९-	..	हुी जल ^{२५} जति हरल बहु बार ^{२६} साहि गीरोज ।
६३०-	६।३६३।२९।५	^{२७} रावन ^{२८} तोहि ^{२९} उमान कोउ नाहो ।
६३१-	६।३६४।२९।१०	^{३०} हनुमान ^{३१} करु कहिव न बोरा ।

६३७-

१७ अ.स - सम, व - बल

११-अ - पितहुं

२- अ.व.स - बंधु

१२- अ.व. - सावहुं

३- स - सिलाकमी

१३- व - अब जिय

४- व - करिहरि

१४- व.स - धनु

५- अ.व.स - पुनि सँसि बोलि

१५- अ.स - परिह, व - पड़हि

६- अ.व. = को जा मुड़ पुनाहि, स- को
जा फूठ कलौ

१६- व - कर काटो

१७- व.स - पड़ि ^{बार}बहु हरनात

७- स - पुन

१८- व - तुम

८- अ - प्रभु छि

१९- व, स - बागोगर

९- व - धरे परम

१०-अ.व.स - वचन

- ६३२- ६।३६४।२६।दीहा-^१‘अहिं’^२पलंग^३‘मोहि’^४कस भार सल्ल तरबंद ।
 ६३३- .. ‘तै नहिं^५ घूर कहावहिं^६’ समुझि^७ वैलु मति मंद ।
 ६३४- ६।३६४।३०।१ अब जाँ ‘वतकड़ाव सल करलौ’^८ ।
 ६३५- .. पुनु मम कवन मान^९ परिहरलौ^{१०} ।
 ६३६- ६।३६४।३०।दीहा-‘तव जुमतोन्ह’^{११} समेत सट जनक पुताहिं^{१२} ते जाउं ।
 ६३७- ६।३६४।३१।७ रै कपि^{१३}अधम^{१४} ‘मरन अब बल्लो’^{१५} ।
 ६३८- ६।३६४।३१।दीहा-‘जुन जमान’^{१६}‘जानि तैहि’^{१७} दोन्ह पिता बनवान ।
 ६३९- ६।३६४।३२।१ श्रावन्त^{१८} ‘वति’^{१९} ‘मखै कपिपदा’^{२०} ।
 ६४०- ६।३६५।३२।५ ‘गिरत संभारि उठा दसकंधर’^{२१} ।
 ६४१- .. भूतल परी मुकट^{२२}‘वति सुन्दर’^{२३} ।
 ६४२- ६।३६५।३२।६ ‘कह प्रभु’^{२४} ‘हसि जनि हृदय डेराऊ’^{२५} ।
 ६४३- ६।३६५।३२।दीहा-‘तरकि पवनसुत कर गल्लै’^{२६} ‘जानि धरै प्रभु पाछ ।
 ६४४- ६।३६६।३४।४ मैं जानर फल सात न^{२७} ‘बारा’^{२८} ।
 ६४५- ६।३६६।३४।८ ‘समुझि^{२९} राव प्रताप’^{३०} कपि कीपा ।

१- व - अरत

६- व, स - तव

२- व, स - बिपीह

१०- व, स - गिरत दखानन उठा संभारो

३- व - तै किमि घूर उराखिज,

११- व, स - मटवारो

स - तिन्हहि न घूर उराखिज

१२- व, स - प्रभु कह

४- व - बात कड़ावन करहु

१३- कूपि गल्लै कर पवन सुत

५- व - परिहरहु

१४- व - हारा

६- व, स - मन्दीदरो

१५- व, स- राव प्रताप सुनिरि

७- व, स- पीच

८- व, स - । बवारतैहि

६४६-	६।३६६।३४।दोहा-	‘कोटि ^१ न्ह वैमनाद ^२ ’ सम ‘सुभट ^३ उठे’ ‘हरणाइ ^४ ’ ।
६४७-	६।३६६।३५।दोहा-	कोटि बिघ्न ^५ ते संत कर ‘मन जिमि ^६ ’ नोति ^७ न ^८ त्याग ।
६४८-	६।३६७।३५।१३	भय व्याकुल सब भय ^९ कियोतो ।
६४९-	६।३६७।३५	‘पुलक सरोर नयन जल ^{१०} ’ गहै राम पद कंज ।
६५०-	६।३६७।३५	नंदोदरो ^{११} ‘रावनहि बहुरि कहा समफाह ।
६५१-	६।३६७।३६।३	‘जा कै दूत कर ^{१२} ’ येह ^{१३} कामा ।
६५२-	६।३६८।३८	‘तहि परिहरि गुन जार ^{१४} ’ सुनहु कोसलाधोत ।
६५३-	६।३६८।३६।१	राम सचिव ^{१५} ‘तब ^{१६} ’ निकट बोलार ।
६५४-	६।३६८।३६	अति राम ^{१७} ‘अय लक्ष्मि ^{१८} ’ ‘अय कपोस जुगोष ।
६५५-	६।३६८।४०।५	धरि धरि भाजु ^{१९} ‘कोस सब ^{२०} ’ लाहू ।
६५६-	६।३६८।४०।६	जिमि टिटिटिमि ^{२१} ‘सग सुत ^{२२} ’ उताना ।
६५७-	६।३६८।४०।८	तौनर जुदगर ^{२३} ‘परस ^{२४} ’ प्रचंडा ।
६५८-	..	सुल कृपान ^{२५} ‘परिष ^{२६} ’ गिर संडा ।
६५९-	६।३६८।४१।३	सुनि कादर ^{२७} ‘उर ^{२८} ’ जाहि दरारा ।

१- व - कोटि कोटि का नाद

२- स - जीधा रहे

३- स - उठाइ

४- न - जिमि

५- व - तदपि

६- व - नहि

७- व - हृदय

८- व, उ - सजल सलिलिन पुलक तन

९- व, उ - निखावरहि

१०- व - जाके दूतन के अस,

उ - जाके दूत कैर अस ,

११- व, उ - जार गुन तजि रावनहि

१२- व - तब

१३- व। स - प्राप्ता सहित

१४- व - कपोसन

१५- व - सल सुतहि

१६- व, उ - परिष

१७- आस - वरसु न - परसु

१८- व - मन

६६०	६।३६६।४१।४	अति बिबाल ^१ तनु ^१ भातु पुष्टटा ।
६६१-	६।३६६।४१।६	कट्टाहिं कीटि ^२ ह ^२ भट ^२ गजिहिं ।
६६२-	६।३७०।४२।६	निब दल बिबल सुगो ^३ तेहि ^३ काता ।
६६३-	६।३७०।४२।७	सी मै हतव ^४ कराल कूपाना ।
६६४-	६।३७०।४२।८	चले ^५ क्राव करि पुष्ट ^५ लगाने ।
६६५-	६।३७०।४३।९	अप ^६ जातुर ^६ कपि भागन लागे ।
६६६-	६।३७०।४३।दोहा-	रन ^७ बांजुरा बात्सुत तरकि चढ़ेउ कपि बैल ।
६६७-	६।३७०।४४।२	रावन भवन चढ़े ^८ दो ^८ धाई ।
६६८-	६।३७०।४४।३	कला सहित गहि ^{१०} भवनु ठहारा ।
६६९-	६।३७०।४४।४	नारि बंद ^{११} कर ^{११} पोटाहिं दातो ।
६७०-	६।३७०।४४।६	कहेहि ^{१२} करिअ ^{१२} उत्पात अरंभा ।
६७१-	६।३७१।४४।७	गवि ^{१३} परे रिपु कटक मकारो ।
६७२-	६।३७१।४५।४	अपर भाव सुमिरत ^{१४} मोहि ^{१४} निसिचर ।
६७३-	६।३७१।४५।४१	भजे निमिषा मह अति ^{१५} अंधियारा ^{१५} ।
६७४-	६।३७१।४५।४२	कर ^{१६} हरनि ^{१६} बिबल-बुल-बुलन ।
६७५-	६।३७१।४६।११	बुष्टि होइ रुधिरापल द्वारा ^{१६} ।
६७६-	६।३७२।४७।५	धार ^{१७} हरणि ^{१७} बिगत मृग प्रासा ।

१- अ, व - कपि

१०- व - सब

२- अ, व - कपि

११- व - सब

३- व, स - जव

स- कहि

४- व, स - तेहि परिहर्ष

१११- व - करन लाग

५- व, स - केश फिरे

११२- व, स - कूदि

६- व, स - बैर

११४- व - जेहि

७- व - व्याकुल

११५- व - अंधियारा

८- व, स - अनर

११६- व- काहु न बुझहि आपन पारा

९- व, स - तज्य

स - काहु न बुझहि आपु परारो

११७- व, स - कोपि

- ६७६- ६। ३७२। ४७। दोहा- 'कहु पारि कहु पायल' ^१ 'कहु गढ़ बले पराह ।
 ६७७- 'गरीहि' ^२ 'भालु बलोमुख' ^३ 'रिपु दल बल बिबलाह ।
 ६७८- ६। ३७२। ४८। दोहा- 'सिव विरवि गेहि लेवति तासी' ^४ 'कवा विरोध ।
 ६७९- ६। ३७२। ४९। ४ 'बध्या बहत रहि' ^५ 'कमानिधाना' ^६ ।
 ६८०- ६। ३७२। ४९। ६ 'करिहीं कहत' ^७ 'कहीं का' ^८ 'धोरा ।
 ६८१- ६। ३७२। ४९। ८ 'कोपि कपिन्ह' ^९ 'दुपैट' ^{१०} 'गढ़ घेरा ।
 ६८२- ६। ३७३। ४९। १० 'गढ़ ते पर्वत गिर' ^{११} 'टहाये' ^{१२} ।
 ६८३- ६। ३७३। ४९। दोहा 'उतरायी बोर' ^{१३} 'दुर्ग ते' ^{१४} 'सन्मुख बल्यो बजाइ ।
 ६८४- ६। ३७३। ५०। ३ 'बाव' ^{१५} 'बहि' ^{१६} 'हठ मारी बीहा ।
 ६८५- ६। ३७३। ५०। ४ 'बिषय' ^{१७} 'क्रोध' ^{१८} 'प्रवन लगि ताने ।
 ६८६- ६। ३७३। ५०। ७ 'कहं तहं मागि बले' ^{१९} 'कपि रोखा ।
 ६८७- ६। ३७३। ५१। १ 'क्रोध' ^{२०} 'कृत' ^{२१} 'मु पायो काला' ^{२२} ।
 ६८८- ६। ३७३। ५१। २ 'महावीर' ^{२३} 'रु' ^{२४} 'तुरत' ^{२५} 'उपारा ।
 ६८९- ६। ३७३। ५१। ५ 'रघुपति' ^{२६} 'निकट' ^{२७} 'गऊ घननादा ।
 ६९०- ६। ३७३। ५१। ७ 'देति' ^{२८} 'प्रताप' ^{२९} 'पूढ़ खिसिबाना ।

१- ब,स - कहु पायल कहु रा पर

६- ब,स - सठन

२- ब,स - मकट भालु भट

१०- ब,स - कोप

३- ब,स - गेहि लेवहि सिव कमल बहु

११- भागहिं भय व्याकुल

तेहि तन

१२- ब - केवल क्रोधं बालि विम व्याला

४- ब,स - धो भावाना

८ - धाऊ क्रोधं तु काला

५- ब - कहत ही

१३- ब,स - महापहो धरि तमकि

६- ब - दुर्गम

१४- ब,स - राम समोप

७- ब - गिरायै

१५- ब,स - प्रभाव

८- ब,स - उतरि दुर्ग ते बोरवर

- ६६१- ६।३७४।५१।दीहा- जायु प्रकल माया^१ 'ब' तिब बिर्नि बः शीट ।
 ६६२- .. ताहि देखावे^२ 'निसिचर' 'निज माया नति शीट ।
 ६६३- ६।३७४।५२।५ 'कपि कुलाने^३ 'माया देखे ।
 ६६४- ६।३७४।५२।दीहा- बाधे^४ 'माधि' 'राम पहि जंदादि कपि साथ ।
 ६६५- .. लक्ष्मि बले^५ 'हुद हो' 'बान सरासन साथ ।
 ६६६- ६।३७४।५३।२ 'उहाँ' 'दसानन गुप्त पटार ।
 ६६७- ६।३७४।५३।५ कपि^६ 'क्यसो ल' 'मारि पुनि 'डाटहि' ।
 ६६८- ६।३७५।५४।दीहा- मेघनाद स^७ 'कीटि' 'सल' 'जोधा रहे उठाइ ।
 ६६९- .. 'कादाथीर'^{१०} 'सेना'^{११} 'किपि उठइ बले तिसिवाइ ।
 ७००- ६।३७५।५५।३ यह^{१२} 'कीतुहल' 'जाने सीई ।
 ७०१- ६।३७५।५५।दीहा- 'रामपदारविंद'^{१३} 'सिर नाखे 'जाइ'^{१४} 'पुनीन ।
 ७०२- ६।३७५।५५।५ बाइहु साथ^{१५} 'मुखा' 'जलाना ।
 ७०३- ६।३७५।५६।७ 'मे ते नीर मूढ़ता'^{१६} 'त्यागू ।
 ७०४- ६।३७५।५७।१ अ कहि^{१७} 'बला' 'रक्षि मग माया ।
 ७०५- .. सर 'मंदिर'^{१८} 'बर बाग' 'बनाया'^{१९} ।

१- ब - दिवस , स - बिकस

२- ब, स - रजोचर

३- ब, स - कुलाने कपि

४- ब, स - मागीउ

५- ब - समीप तब , स- समीप अति,

६- ब - उहाँ

७- ब - ते तिला

८- ब - डारहिं

९- ब - मट

१०- ब, स - का आधार

११- ब, स - अंत

१२- ब- लोला (गाने के पश्चात् इसो

पांडुलिपि में 'मे' अतिरिक्त पाठ है)

१३- ब, स - रघुपति चरन सरीज

१४- स - बाँद

१५- ब - ख बूधा, स- कथा

१६- ब, स - बहंकार ममता पद

१७- ब- जाइ

१८- ब - समीप

१९- ब - बनाया

७०६	६।३७६।५७।६	इह ^१ मर ^२ देली मैं पाई ।
७०७	६।३७६।५७।८	सर मज्जन करि ^३ जातुर ^४ आवहु ।
७०८-	..	विजया ^५ देउ ^६ जान ^७ गहि ^८ पावहु ॥
७०९-	६।३७६।५८।७	सहसा कपि ^९ उपाहि ^{१०} गिरि ला ^{११} न्हा ।
७१०-	६।३७७।६०।२	कपि सब चरित ^{१२} समाध ^{१३} बताने ।
७११-	६।३७८।६१।२६	प्रभु ^{१४} प्रलाप ^{१५} सुनि जान विकल मर ^{१६} जानर ^{१७} निकर ^{१८} ।
७१२-	..	बाउ ^{१९} गछौ ^{२०} हनुमान जिनि करुना मंह कोर रख ॥
७१३-	६।३७८।६२।६	व्याकुल कुंभकरन पहि ^{२१} बावा ^{२२} ।
७१४-	..	विबिध जतन करि ताहि जाना ^{२३} ॥
७१५-	६।३७९।६३।३	देनि विघो ^{२४} णनु आगे ^{२५} जाऊँ ।
७१६-	..	परीउ ^{२६} चरन निज नाम सुनाऊँ ।
७१७-	६।३७९।६३।६	देनि दोन ^{२७} प्रभु के मन भाऊँ ।
७१८-	६।३७९।६६।१	तेल गल ^{२८} जिनि अहि गन मोला ^{२९} ।
७१९-	६।३८०।६७।३	कोटि ^{३०} न्ह मोज ^{३१} पिलस ^{३२} पहि ^{३३} गदा ^{३४} ।
७२०-	६।३८१।६८।८	बिला ^{३५} तवहि ^{३६} निकट ^{३७} कैपि ^{३८} आर ।

१- व - बैठ

२- व - तुरतहि

३- व, स - देहु, व - लेहु

४- व - जिनि

५- व, स - उठाइ

६- व, स - सँदीप

७- व, स - बिलाप

८- व - निकर

९- व - जाऊँ तब

१०- व, स - गछेउ

११- व, स - करि बहु जतन भरेऊ जावत मछेउ

१२- व, स - गछेउ,

१३- पद गहि नाम कहत निज मछेऊ

१४- व, स - दोन जानि

१५- व, स - सोला

१६- व, स - पिलावहि

१७- व - तवहि

१८- व, स - भट

- ७२१- द। ३८१।३६। दोहा- 'महानाद करि गम्भीर^१ कौटि कौटि गरिह कोय ।
 ७२२- द। ३८२।७२। ३ निम मुल कहै मुकुत^२ जेहि मांती ।
 ७२३- द। ३८२।७२। ६ कहि बहु^३ कया ' पिता समुभायैउ ।
 ७२४- द। ३८२।७२। ८ वृष्टदेव ' से बल रण^४ पावैउ ।
 ७२५- द। ३८२।७२। दोहा - नेपनाद^५ मायाक्य ' रथ चढ़ि गच्छेउ जकाय ।
 ७२६- .. गहै^६ वृष्टहास करि ' भू कनि कटकहि ज्ञाय ॥
 ७२७- द। ३८३।७३। ३ 'दस दिशि रहै बान नम द्वाइ^७ ' ।
 ७२८- द। ३८३।७३। १२ तदा स्वतंत्र^८ 'एक ' भाषाना ।
 ७२९- द। ३८४।७४। दोहा- 'रूपति बरन नाह तिरु^९ ' बलै तरन अंत ।
 ७३०- द। ३८४।७४। १३ दैविनि आकत 'पवि सम जाना^{१०} ' ।
 ७३१- द। ३८५।७५। दोहा- 'मुनि प्रभु^{११} कवन बिभोषान ' हरणि गहै पद कंज ।
 ७३२- द। ३८६।७६। ३ पठवहु^{१२} नाथ ' बैगि भट बंदर ।
 ७३३- द। ३८७।७७। ३ 'बली तमोचर^{१३} ' ज्ञा ज्ञारा ।
 ७३४- द। ३८७।७७। ३ गु^{१४} 'दह' दिशि दाविनी दमकहि ।

१- व, स - गहै धाजै बैगि अति

८- क, व, स - यदि राम पद कमल ज्ञा

२- व, स - धरम

(व' में 'बंदि' के स्थान पर 'बंदहि')

३- क - कवन

का पाठ है

४- व- सेवत बल, स- सेवन बल

१०- व, क - पवन समाना

५- क- माया रचित, स-माया चरित

११- व, व, स - मुनि विभोषान प्रभुक्वन

६- क- प्रत्य पयोधि सम सै 'पैसा' के

१२- व, व, - देव

प० स्थान पर 'विनि' है)

१३- व, व, - बली तमोचर

७- व - रहै दसव दिशि सायक झाड़

१४- वहुं

(व' में दसव के स्थान पर 'दसहुं' का

पाठ है)

८- व, स - राम

- ७३५- ६।३६१।८८।१० कौटिल्य रुंठ मुंठ बिनु चल्लहि^१ ।
 ७३६- ६।३६१।८८।दोहा 'रावन हृदय विचारा' भा निविचर तयारा ।
 ७३७- ६।३६१।८९।३ 'हरणि' चढ़े कोसलसुर भूषा ।
 ७३८- ६।३६२।८९।७ 'लक्ष्मिन कपिल' जी मानो 'संवि' ।
 ७३९- ६।३६२।८९।दोहा- 'बहु' राम लक्ष्मिन देखि परकट भातु मन जति अवडर^५ ।
 ७४०- ६।३६२।९०।९ 'विहसि' बचन कह 'कृपानिधाना' ।
 ७४१- ६।३६२।९०।दोहा- राम बचन सुनि 'विहसा' 'मोहि' प्रियावत जान ।
 ७४२- ६।३६२।९१।३ 'पावक' तर 'झाड़' रघुवीरा ।
 ७४३- ६।३६३।९१।दोहा- 'ताने' पाप 'पुवन' लागि झाड़ 'विहसि' करात ।
 ७४४- ६।३६३।९२।४ 'त्रिकत'^{१०} 'होहि' सब उपम ताके ।
 ७४५- ६।३६३।९२।१३ 'अपि' कौतुको^{११} 'कोसलायोशा' ।
 ७४६- ६।३६४।९३।दोहा- पुनि 'दतकंठ' कुट्ट होह झाड़ो^{१२} 'संक्तिप्रचंड' ।
 ७४७- .. 'बलो' विमोचन सन्मुख^{१३} 'मनु' कालकर दंड ।

१- अ, कस - डोलहि

८- अ, ब, - जल बान, स-अधिल बान

२- अ - हृदय विचारेउ दस वदन

९- अ, कस - तानि सरासन

३- अ, ब, - विहसि

१०-अ, ब, स - कृपा

४- अ, ब, - सब काहु माना करि

११- अ, स - कौतुक कोन,

५- अ, बहु जाति पुन लक्ष्मिन कपास
 विवलीति परकट जति क डर ।

१२- अ, स - राम जति कोप करि झाड़िसि
 (बे' मै' कोप' के स्थान पर 'क्रोध'

६- अ, कस - कहेउ विहसि सब

रघुद का पाठ है) रावन जति क्रोध
 करि झाड़िसि)

७- अ, कस - विहसि कह

१३- अ, ब, स - सन्मुख बलो विमोचनहि

७४८-	६। ३६४। ६४। १	बाबत दे ^१ सकि ^२ की घीरा ^३ ।
७४९-	..	प्रनतारित ^४ मंजा पन पीरा ^५ ।
७५०-	६। ३६४। ६४। ८	राम विमुक्त सठ ^६ चहसि ^७ संपदा ।
७५१-	६। ३६५। ६४। दोहा-	सो अब भिरत कास ज्या ^८ सो रघुवीर प्रभाउ ।
७५२-	६। ३६५। ६५। ५	पुन रामा ^९ कीप ^{१०} पतेउ प्रचारो ।
७५३-	६। ३६५। ६५। ८	हुपि अल निगिनर परे न ^{११} पारुयो ^{१२} ।
७५४-	..	तब भारतुल पुत ^{१३} प्रभु संभारुयो ^{१४} ।
७५५-	६। ३६५। ६५। १०	हुमंत संकट देखि मरि ^{१५} मालु ^{१६} फोपापुरे ^{१७} चले ।
७५६-	६। ३६५। ६५। दोहा-	तब रघुवीर ^{१८} पचारै ^{१९} पार काव संवह ।
७५७-	..	कपि दल प्रकल ^{२०} देखि ^{२१} तैहि को ^{२२} प्रगट पावै ^{२३} ॥
७५८-	६। ३६५। ६५। ३	कहं तहं मजे मालु ^{२४} अरु कोसा ^{२५} ।
७५९-	६। ३६५। ६५। ४	भागै जानर ^{२६} धरहिं न धोरा ।
७६०-	..	प्राणि जगहि लक्ष्मिना ^{२७} रघुवीरा ^{२८} ॥
७६१-	६। ३६६। ६७। ४	तरल तमकि ^{२९} संजुग महि जाए ।
७६२-	६। ३६६। ६७। ५	करुसुति करत देवतहि ^{३०} देखै ^{३१} ।

१- अ, ब, द - वर धारा

२- अ, ब, - हर विरदु संभारा

३- अ, ब - चरल

४- अ, ब, स - भिरत सो काल समान अब

५- अ, ब, स - तैहि

६- अ, ब, स - पारा

७- अ, ब, स - प्रभुहि संभारा

८- अ, ब, - अति जातुर

९- अ, ब, स - राम प्रचारै जोर तब,

१०- अ, ब, स - विलीकि

११- अ, ब, स - भागै मालु किकल भट कोसा

१२- अ, ब, स - चले जलो भुत

१३- अ, स - बल्लोरा

१४- अ, ब, स - तुरतहिं अब

१५- अ, ब, स - करत : प्रसंसा सुर

तैहि देखै ।

- ७६३- ६।३८६।६७।६ कस कहि कोपि गगन^१ पर घायत ।
 ७६४- ६।३८६।६७।दोहा तब रघुपात^२ रावन के सोस भुजा सर चाप ।
 ७६५- ६।३८६।६८।३ बनार राज दुविद^३ बल मोला ।
 ७६६- ६।३८६।६८।७ रुधिर दैत बिष्णाद उर भारी^४ ।
 ७६७- ६।३८७।६८।दोहा मुरुखा जित^५ भालु कपि सब जार प्रभु पास ।
 ७६८- ६।३८७।६८।१ तेहो निजि मोला पहि जाई^६ ।
 ७६९- ६।३८७।६८।दोहा तब रावगहि हृदय महुं मरिहहि^७ राम भुवान ।
 ७७०- ६।३८८।१०१।दोहा ताके गुन गन कहै^८ कृमति तुलसीदास ।
 ७७१- ६।३८८।१०२।७ अम^९ होन ली तब नाना ।
 ७७२- ६।३८८।१०२।८ दध दिशि दाह होन^{१०} जति लागी ।
 ७७३- ६।४००।१०३।३ तब^{११} सर जति प्रभु कृत दुह^{१२} बंटा ।
 ७७४- ६।४००।१०३।१३ सुर भुवन बरणाहि^{१३} हरण सकल^{१४} नाव दुंदुभि गणहो ।
 ७७५- ६।४००।१०३।१४ सु मोल गिरि पर तडित^{१५} फटल^{१६} समेत उगन भ्रमरी^{१७} ।
 ७७६- ६।४००।१०३।दोहा भालु कोस तब हरणी^{१८} ज्य सुतधाम मुकुंद ।

१- अ - पै , व, स- पय

२- अ, व, स - लोहा

३- अ, व, स - दुविद कपोस पास

४- अ, व, स - रुधिर जिलोकि अकोप मुरारी

५- अ, व, स- गड मुरुखा तब

६- अ, व, स - तेहि निजि मोला पहि जाई

७- अ, व, स - तब रावन के हृदय महुं मारहि

८- अ, व, स - कहै ताहु गुन गन कहै

९- अ, व, स - अम

१०- अ, व, स - तब

११- अ, व, स - प्रभु सर जति कृत गुा

१२- अ, व, स - सुर सिद्ध मुनि गंधर्व हरणी

१३- अ, का - विपुल

१४- हरणी बानर भालु सब

७७८-	६।४०१।१०४।१	पति ^१ सिर ^१ देखत मदीदरा ।
७७९-	६।४०१।१०४।८	मुन बल कियो ^२ काल ^२ 'मने' साई ^२ ।
७८०-	६।४०१।१०४।दीहा	जह ^३ ताय रमुनाथ सम कृपाविंधु ^३ नहि ^३ जान ।
७८१-	६।४०१।१०५।४	रुदनु करत ^४ 'देला' सन नारा ।
७८२-	६।४०१।१०५।५	बंधु दया ^५ 'विलोकि' दुल कोन्हा ।
७८३-	..	'तब प्रभु जुज ^६ हि' जाये ^६ दोन्हा ।
७८४-	६।४०१।१०५।६	'लक्ष्मन' तेहि बहु बिधि ^७ समुझायी ।
७८५-	६।४०१।१०५।७	करहु क्रिया ^८ 'परिहरि' सब वेला ।
७८६-	६।४०१।१०५।८	कोन्हि ^९ 'क्रिया' प्रभु जाये ^९ मानो ।
७८७-	६।४०१।१०६।४	पिता कवन मै नगर न ^{१०} जावो ^{१०} ।
७८८-	६।४०१।१०६।६	तिलक ^{११} 'सारि' अस्तुति ^{११} जुसारा ।
७८९-	६।४०३।१०८।३	'सुनि संदेशु भावु' ^{१२} कुल भूषण ।
७९०-	६।४०३।१०८।४	'प्रभुन कहु कहि ^{१३} अकत' न जाऊ ।
७९१-	६।४०३।१०८।६	'पावक प्रकल ^{१४} देखि' वेदेहो ।

१- व, स - मुन

६- अ, व, स - कृपा

२- अ - सम

१०- अ, व, स - जावो

३- अ, व, स - को

११- अ, व, स - कोन्हि

४- अ, व, स - विलोकि

१२- अ, स- सुनि जाना नयंक

५- अ, स - देखत, व-देखि

७- सुनि जानी पतंग

६- अ- राम जुज की

१३- अ, व, स - प्रभु उच्छुख कहु करत

व, स - राम जुज कह

१४- अ, व, स - प्रकल जगिल विलोकि

७- अ, व, स- जाइ ताहि

८- अ, व, स - कृपा

- ७६३- ६।४०५।११२।४ पुनि सुत बचन प्राप्ति^१ जति^१ बाढ़ी ।
 ७६४- .. नयन सलिल^२ रोषावलि^२ टाढ़ी ।
 ७६५- ६।४०७।११५।४ बाहु निरंतर^३ मन^३ कानन ।
 ७६६- ६।४०८।११६।४(दीहा तापस वैष्णव^४ गति^४ कृष्ण^४ अपत^४ निरंतर^४ मोह ।
 ७६७- ६।४०८।११७।५ गगन जाड़ बरबाहु^५ पट^५ भूषण ।
 ७६८- ६।४०८।११७।७ 'जोड़ जोड़ मन भावे लीय^६ लेहो^६ ।
 ७६९- .. 'मनि^७ मुख गेलि^७ डारि^७ 'कपि^७ 'देहो^७ ।
 ८००- ६।४०८।११७।४(दीहा)पुनि जेहि ध्यान न पावहि^८ नेति तेति कह वैद ।
 ८०१- ६।४०८।११८।४ तिलक विभोषण^९ कह^९ पुनि ताहूया^९ ।
 ८०२- ६।४०८।११६।४ 'ओ^{१०} उभै प्रभु जे तापर ।
 ८०३- ६।४१०।१२०।५ अनुना कलमल^{११} हरनि^{११} 'बुहार ।
 ८०४- ६।४१०।१२०।७ 'तोरणपति^{१२} पुनि देसु प्रयागा ।
 ८०५- ६।४१०।१२०।४(दीहा)तोता सलिल अवध^{१३} कह कोन्ह कृमिल प्रनाम^{१४} ।
 ८०६- ६।४१०।१२०।११०० पुनि प्रभु जाड़ त्रिवेनी^{१५} हरणित मज्जन कोन्ह ।
 ८०७- .. कविन्ह^{१६} सलिल विप्रन्ह^{१६} कह^{१६} दान विविध विविध दान्ह ॥

- १- अ, ब, स - उर
 २- अ, ब, गी- सजल नयन
 ३- अ- पुनि
 ४- अ, ब, स - सरार
 ५- अ, स - जर्व
 ६- अ, ब - मन
 ७- अ, ब, स - जोड़ मन भावे लीय कपि लेहो
 ८- अ - पुनि
 ९- अ, ब, स - तब
 १०- अ, ब, स - ध्यान न पावहि जाहि पुनि
 ११- अ, ब, स - को
 १२- अ, स - सिय
 १३- अ - बरन
 १४- अ - तोरथ पुनात
 १५- अ, ब, स - तब रघुनायक श्री सलिल
 अवधहि कोन्ह प्रनाम
 १६- अ, ब, स - बहुरि त्रिवेनी जाड़ प्रभु
 १७- अ- सलिल मल्लिख को, ब, स- समेत महोपुख

- ८०८- ६।४१०।१२१।२ तुरत पवन सुत^१ गवनत भजेऊ^१ ।
 ८०९- ६।४१०।१२१।७ तुरसरि^२ नांघि^२ जान^३ तब^३ जाती^४ ।
 ८१०- ६।४१०।१२१।१३ केठारि परम^५ समोप^५ वृक्षो कुतल ली कर बोनवा ।
 ८११- ६।४११।१२१।दोहा समर बिजय^६ रघुबोर कैवरित जे पुनहि पुजाने ।
 ८१२-

८१३-

१- अ, व, - तब चलि गयेउ

२- व, स - लांघि

३- अ, व, उ - अब

४- व - जाया (दूसरी जगति न भो लुकात पावा है)

५- अ - अहित ('वै' पांडुलिपि में पृष्ठ फट गया है)

६- अ, उ - रघुपति चरित पुनहि जे सदा पुजान ('वै' पांडुलिपि में पृष्ठ फट गया है)।

रामचरितमानस

सप्तम ओपान

क्रम सं० संदर्भ सं०

नागरी प्रचारिणी सभा का पाठ

८१२-	७।४१७।१३	राका ससि रघुपति 'पुर' ^१ सिंधु देखि हरणान ।
८१३-	७।४१८।५।१२	'धर' ^२ धुरंधर रघुकुल नाथा ।
८१४-	७।४१८।५।११	सुन सिवा सी 'सुत' ^३ कवन मन ते भिन्न जान जी पावई ।
८१५-	७।४२०।८।दीहा	सुपन कृष्टि 'नम' अंकुल ^४ भवन बलै सुख कंद ।
८१६-	७।४२०।१०।३	कृपासिंधु ^५ लेखे पंदिर गर ।
८१७-	७।४२१।११।३	सुनत कवन जे तहें ^६ को चार ।
८१८-	७।४२१।११।८	को जंग 'देति' ^७ 'सुत' ^८ लाजे ।
८१९-	७।४२१।११।दीहा	'सायु' ^९ सादर जानकिहि मन्त्रा सुरत कराइ (
८२०-	७।४२१।१२।६	'नम' ^{१०} दुंडुभी बाजहि विपुल शंख किन्कर गावहों ।
८२१-	७।४२४।१५।१	त्रिविधि ताप भव 'भय' ^{११} दासना ।
८२२-	७।४२४।१५।६	नित 'नेह' ^{१२} प्रीति राम पद पैत्र ।
८२३-	७।४२४।१५।दीहा	जात न जाने ^{१३} दिक्क तिन्ह ^{१३} गर मास षाट बाति ।
८२४-	७।४२७।२१।८	सब गुनज पंडित ^{१४} सब ^{१४} जाना ।
८२५-	७।४२८।२४।४	सेवत चरन ^{१५} कपल ^{१५} मन लाई ।
८२६-	७।४३०।२८।दीहा	उपर दिशि सरजू ^{१६} बह ^{१६} निमैल बल गंभोर ।

१- अ - पुरी

६- अ - सायुज

२- अ, ब, स - धरम

१०- अ - पुर

३- अ - सुत

११- अ, स - भोल

४- अ - गती मई

१२- अ, स - तव

५- अ, स - जब

१३- अ, ब, स - दिक्क निति

६- अ, स - सब

१४- अ - जरु

७- अ - कीटि

१५- अ - सकल

८- अ, ब, स - इति

१६- अ, ब, स - बह

- ८२७- ७।४३०।२६।दीहा रामनाथ कं^१ राजा^२ सी पुर बसि^३ १७ जाइ ।
 ८२८- ७।४३१।३१।दीहा यहि प्रताप रवि गके^४ उर^५ जव करि^६ प्रकाश ।
 ८२९- ७।४३१।३४।३ गुल मंदिर सुन्दर^७ जति^८ नागर ।
 ८३०- ७।४३२।३४।४ 'अनुपम' जव^९ जादि सौभाकर ।
 ८३१- ७।४३२।३६।३ जो सुनि होइ^{१०} एकल प्रता^{११} खानो ।
 ८३२- ७।४३२।३६।६ प्रजन करत मन सुकुवत^{१२} बहनों^{१३} ।
 ८३३- ७।४३३।३६।दीहा नाथ । मोहि नंदैह कहु सपनेहु^{१४} 'तोक' न मोह ।
 ८३४- ७।४३३।३७।४ 'मुना' बही प्रमु तिन^{१५} कर लखान ।
 ८३५- ७।४३३।३७।दीहा जल^{१६} दाहि पोटा^{१७} धनहि^{१८} परमु नदु यह दंड ।
 ८३६- ७।४३४।४०।८ विप्र डोह^{१९} 'पर' डोह^{२०} कियोणा ।
 ८३७- ७।४३४।४२।४ करहि^{२१} मोह^{२२} वस नर^{२३} 'अघ नाना' ।
 ८३८- ७।४३५।४१।दीहा 'गुन' यह^{२४} अमय न देखि^{२५} कीह^{२६} देखि^{२७} जो अविवेक ।
 ८३९- ७।४३५।४२।२ करहि^{२८} किमय जति^{२९} 'बारहिबारा' ।
 ८४०- ७।४३५।४२।७ अथनि ब्रह्म^{३०} निरत मुनि जाहनि^{३१} ।
 ८४१- ७।४३५।४३।२ 'कही' न कहु समता उर आनी ।

१- व - राजाहं

६- व - दाहिनी पोटा का

२- व - उर प्रमु करि, व-उर प्रमु करहि

१०- व - गुरु

३- व,स - गुन

११- व - अपमाना

४- व - जति अनुपम

१२- व,स - गुन कर

५- व - जाह

१३- व,स - बारम्बारा

६- व,स - रहनों

१४-व - रसलो न मोहई

७- व,स - सवि

१५-व- करी

८- व - मुनत

८४२-	७।४३६।४५।४	करत कष्ट ^१ 'बहु' पावे कोऊ ।
८४३-	७।४३६।४५।५	भक्ति पुत्र ^२ सकल 'बुल' साना ।
८४४-	७।४३६।४६।	ताकर पुत्र सोई जाने परानंद ^३ संदीह ।
८४५-	७।४३७।४७।५	'तुम्ह' ^४ तुम्हार देवक अुराहो ।
८४६-	७।४३७।४७।८	वरन प्रमु ^५ वतकहो 'बुहाई' ।
८४७-	७।४३७।४७	ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक 'जह' ^६ मूपा
८४८-	७।४३७।४८।७	कहा लाभ जागे बुत ^७ तोहो ।
८४९-	७।४३७।४८।१	'भुति' ^८ 'उंभस' नाना गुम कर्मा ^९ ।
८५०-	७।४३७।४८।३	आगत ^{१०} 'निगम' पुरान कीका ।
८५१-	७।४३८।५०।८	'सुमान' ^{११} सम गीह ^{१२} बड़ भागो ।
८५२-	७।४३८।५१।६	तुलसीदास प्रमु पाहि 'प्रनत' ^{१३} वा ।
८५३-	७।४४०।५५।१	कहहु कृपाल काग 'कह' ^{१४} पावा ।
८५४-	७।४४०।५५।८	बो पुनि सकल 'लोक' ^{१५} प्रम ^{१६} नासा ।
८५५-	७।४४१।५७।६	'जावे' ^{१७} 'हाह' कर मानस पूजा ।
८५६-	७।४४१।५७	सावर पुनि ^{१८} 'रघुपति' गुन पुनि जाखै कैलास ।

१- ब, स - सी

१०- व - वेद

२- ब, स - गुन

११- व - समान

३- ब, - विद्वानंद

१२- व - सरन

४- ब, स - रूप

१३- ब, स - निमि

५- व - अति कथा

१४- व - सीक

६- व - गीह

१५- व - प्रम

७- व - सी

१६- व - अम

८- व - अति

व, स - अम्बु

९- व - पुनिरत पुरान सब कर्मा

१७-व, स - रघुबीर

अष्टावक्राय



निष्कर्ष
परिशिष्ट

८५७-	७।४४१।५६।८	गोह करहु ^१ वैहि होह ^२ निवेसा ।
८५८-	७।४४२।६०।२	समुकि प्रताप प्रेव ^३ जति ^३ बावा ।
८५९-	७।४४२।६०	परमातुर ^४ विहापति बाके तब नो पास ।
८६०-	७।४४२।६१।१	पुनि आपन ^५ संवेहु ^५ सुनावा ।
८६१-	७।४४२।६१।२	पुनि ताकर ^६ विनीतो ^६ मूख बानो ।
८६२-	७।४४३।६२	ताहि मोह माया ^७ नर ^७ पावर करहि गुमान ।
८६३-	७।४४३।६४।८	पुन ^८ नारद कर मोह अपारा ।
८६४-	७।४४४।६५।२	कहेसि राम लखिना ^९ संवादा ।
८६५-	७।४४४।६५।४	चित्रकूट जिमि ^{१०} कहे ^{१०} भावाना ।
८६६-	७।४४४।६५।६	करि नृप ^{११} श्रिया ^{११} संग पुकारो ।
८६७-	७।४४४।६५	वरनि सुतोहन प्रोति पुनि प्रभु जास्ति ^{१२} सन संग ^{१२} ।
८६८-	७।४४४।६६।१	गोध ^{१३} कबो पुनि तेहि गार्ह ^{१३} ।
८६९-	७।४४४।६६	पुन सुगोव मिता ^{१४} बासि प्रज्ञ कर भंग ।
८७०-	७।४४४।६६	कपिहि तिलक करि ^{१५} प्रभु ^{१५} कृत सेत प्रवरणन नाम ।
८७१-	७।४४४।६७।१	सोता ^{१६} लीज सकल ^{१६} दिशि धार ।

१- व, स - जो वैहि

२- व, स - उर

३- व - प्रेमातुर

४- व - संवेस

५- व - विनीत

६- व, क - प्रबल

७- व, स - पुनि

८- व - कहिय राम लखन

९- व, स - कत

१०- व, स - कुमा

११- व, स - पुनि

१२- व - गोधराज कैत्रो पुनि गार्ह

१३- व, स - पुनि कैत्रो सुगोव कहि

१४- व, स - राम

१५- व, स - लीज सकल

८७२-	७।४४५।६७	निमित्त ^१ को ^२ त्तराई ^३ बनिधि विविध प्रकार ।
८७३-	७।४४५।६८।६	गङ्गे ^४ पीर ^५ सदैव पुनः ^६ सकल रघुपति ^७ बह्ति ।
८७४-	७।४४५।६९।८	तब प्रसाद ^८ सब ^९ संसय गङ्गे ^{१०} ।
८७५-	७।४४७।७२।३	जब विज्ञान रूप ^{११} जल ^{१२} धामा ।
८७६-	७।४४७।७२।६	निर्मल ^{१३} निराकार ^{१४} निरमोहा ।
८७७-	७।४४७।७३।१	जसि ^{१५} रघुपति ^{१६} लेला उरगारो ।
८७८-	७।४४७।७३।५	जल ^{१७} मोह ^{१८} कस जापुहि लेला ।
८७९-	७।४४७।७३	निगुन रूप ^{१९} सुलभ ^{२०} जति सगुन ^{२१} जान नहि ^{२२} कोई ।
८८०-	११	सुगम आम नाना बरित ^{२३} पुनि पुनि ^{२४} मन प्रप होइ ।
८८१-	७।४४९।७७।६	बरत ^{२५} मोहि ^{२६} होति जति ^{२७} मोड़ा ।
८८२-	७।४४९।७८।२	सौ माया न दुखद ^{२८} मोहि काखो ।
८८३-	७।४५१।८१।५	अंकुश ^{२९} प्रति प्रति निज रूपा ।
८८४-	७।४५१।८१।६	धरज ^{३०} भिन्न भिन्न ^{३१} खेन नरनारो ।
८८५-	७।४५१।८२।४	जहि विधि प्रथम ^{३२} कथा ^{३३} मैं गाई ।
८८६-	७।४५४।९०।१	बिपु संतोष ^{३४} काम न ^{३५} नखाहो ।
८८७-	७।४५७।९६।१	स्वारण ^{३६} साधि जीव ^{३७} कहुं रहा ।

१- व - कोसन अद्भुत पुनि

६४- न जानो

२- व, स - लीक

१०- व - पुनि पुनि

३- व, स - मन

११- व, स - बरित होइ मोहि

४- व - गुन

१२- व - तब नाना विधि दुःख

५- व, स - निर्मल

१३- व - इन्द्रलोक

६- व, स - जति

१४- व, स - धरज

७- अ - प्रबल

१५- व, स - कथा

८- व - न सुलभ

१६- न काम

१७- व, स - सब जीवन

८८८-	७।४५६।१००।१	‘मोहि डोहि ममता’ ^१ लपटानो ।
८८९-	७।४५६।१००।-	मरु वरन संकर ^२ कलि ^३ मिन्न वेतु सब लो ग ।
८९०-	७।४५७।१०१।-	पान मोहि ^३ मारादि ^३ मद क्यापि रहे ब्रह्मपांड ।
८९१-	७।४५७।१०६।८	पुनि पुनि मोहि ^४ सिखाव ^४ सुनोया ^४ ।
८९२-	७।४५७।१०६।१८	‘वति वय’ ^५ गुरु ^५ अमानता ^५ उहि ^५ छि नहि ^५ तके पसेव ।
८९३-	७।४५७।१०८।१८	‘पुनि मंदिर नम बानो भू’ ^६ दिक्कर बर पागु ।
८९४-	७।४५८।१०८।२१	संकर दोनदयाल ^७ ‘वव’ ^७ योहि पर होहु कुपाल ।
८९५-	..	याप अगुह ^८ होह ^८ ‘ओहि’ ^८ नाथ घोरीहो कात ।
८९६-	७।४५८।१०८।२३	ह ^९ अकुलि ^९ ‘मम’ ^९ भुल ^९ बिधावा ।
८९७-	७।४५८।११०।६	केवल रामचरन ^{१०} ‘त्य’ ^{१०} ‘जागो’ ^{१०} ।
८९८-	७।४५८।११०।६	मैं कन गवेई ^{११} मजन ^{११} ‘जात्राता’ ^{११} ।
८९९-	७।४५८।१११।१२	‘लंछि’ ^{१२} ‘सगुन पत अने निरुपा’ ^{१२} ।
९००-	७।४५८।१११।२४	पुनि ‘तन’ ^{१३} ‘मरु क्रीय’ ^{१३} ‘कै’ ^{१३} बोन्हा ।
९०१-	७।४५८।१११।२७	बारंबार ^{१४} ककीप ^{१४} पुनि कर ^{१४} निरुपन जान ^{१४} ।
९०२-	७।४५८।११२।५	भव कि परहिं ^{१५} परमात्मा ^{१५} बिंदक ।
९०३-	७।४५८।१२३।५	पुनि पुनि आधिष्ठा ^{१६} ‘पुनु’ ^{१६} मतिथारा ।

१- अ, व, - मोहि ममता माया

१०- अ, व, स - सन

२- अ, व, स - सकल

११- अ, व, स - अुरागो

३- अ, व, स - मायादि

१२- अ, व, - सुरक्षाता

४- अ, व, - प्रबोधा

१३- अ - निदि

५- अ, व, स - अतिसय

१४- अ, व, स - तव

६- अ, व, - अमानता

१५- अ - कर

७- अ, व, स - मंदिर नम बानो भई बहु

१६- अ - निरुप बतान

८- व - प्रनु

१७- अ - परमात्म

९- अ, स - जिपि

१८- अ, व, स - मन

६०४-	७।४६८।११४।७	'पुनि' ^१ नम गिरा हरण मोहि महेक ।
६०५-	७।४७३।१२१।३३	हरण बिधास भरह ^२ बहुताई ।
६०६-	७।४७५।१२३।-	वरित सिंधु ^३ रघुनायक ^३ याह कि पाव कोइ ।
६०७-	७।४७६।१२५।८	'पर दुख ड्रवहिं जंत पुपुनोता' ^४ ।
६०८-	७।४७६।१२६।७	तब कर 'कल' ^५ हरि ^६ भाति ^६ मानो ^७ ।
६०९-	७।४७७।१२७।५	बन्य नारि ^८ पति ब्रत ^८ सुखरो ।
६१०-	७।४७७।१२८।७	गुरु पद प्रीति मोहि ^९ रत ^९ वै ।
६११-	७।४७७।१२९।१	रामक्या गिरिजा ^{१०} सी ^{१०} बनो ।
६१२-	७।४७७।१२९।७	पुनि ^{११} सब ^{११} क्या हृदउ ^{११} अति भाई ।
६१३-	७।४७७।१२९।८	रामचरन उपजे ^{१२} नव ^{१२} नैहा ।

१- व. न. त - पुनि

२- व - गरब

३- व. त - रघुनायक

४- व - पर हित ड्रवहिं जंत पुपुनोता. क- पर दुख ड्रवहिं पुर्जंत पुनोता

५- व - मत

६- व - भाती

७- व - मानो

८- व - जी पति

९- व. त - अति

१०- व. - - वै

११- व. त - पुन

१२- व. त - अति

निष्कर्ष

किसी भी साहित्य - ग्रन्थ के पाठानुसंधान का कार्य एक गंभीर दायित्व की कड़ीय रक्ता है। तुलसीदास काव्य-साहित्य व्यङ्ग्यरहितः जस्य भाषा यै है। प्रत्येक भाषा के कुछ अपने संस्कार होते हैं, और उन संस्कारों का परिचय प्राप्त किसी बिना पाठानुसंधान की विद्या में कोई ठोस कार्य नहीं किया जा सकता। फिर पाण्डुलिपि की दृश्य रह कर ठोक - ठोक पढ़ना भी एक कष्ट-साध्य कार्य है। कभी - कभी एक एक शब्द पर कई दिन तक विचार करना पड़ता है। वैदनागरी कर्तारों ने लीले हुए ग्रन्थों का पाठानुसंधान ज्योत्सुक उरत है, किन्तु कर्तारों लिपि की दुर्बलताओं के कारण कर्तारों कर्तारों ने लिपिकर पाण्डुलिपियों की पढ़ने में पर्याप्त कठिनाई होती है। विशेष रूप से उच्च उच्च व्यक्ति उर्दू, कर्तारों के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा का साहित्य कर्तारों लिपि में लिखा गया हो। रामचरितमानस की विविध पाण्डुलिपियों पर कार्य करते समय मुझे भी पर्याप्त कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ा है। निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत अध्ययन की उपलब्धियों की इस प्रकार रखा जा सकता है -

- १- कर्तारों लिपि में प्राप्त रामचरितमानस की पाण्डुलिपियाँ तुलसी साहित्य के अध्ययन में विशेष महत्त्व रखती हैं।
- २- तुलसी-युगीन प्रचलित साहित्य-लिपि कर्तारों की थी। फलतः हिन्दो के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कर्तारों लिपि में तैयार किये गये।
- ३- कर्तारों लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियों का और से हिन्दो-विद्वानों को उदासीनता एक स्वस्थ विमूढ नहीं कहा जा सकता।
- ४- मानस की कर्तारों पाण्डुलिपियाँ में पाठ-संशोधन की अत्यन्त गुंजायश है। अनेक त्रुटियाँ और दोहरे से ही मिलती-जुलती वचन की प्रदिप्ति कहकर टाला नहीं जा सकता। तुलसी की खूदायसी, वैचारिकता, भाषा-ज्ञान एवं काव्यात्मक गुणों के प्रकाश में उत्तम प्रकार के पाठान्तरों की मूल्यवत्ता करने की आवश्यकता है।

- ५- कभी-कभी झटि-झटि सामान्य शब्दों में हर-फेर हो जाने से अवि-
शेष का न केवल हान होता है, अपितु कवि को सहज काव्यमय भाषा
बीर काव्यात्मक होनात्मकता की भी ठेस पहुँचती है। रामचरितमानस के
पाठों का निश्चय करते समय अनेक स्थलों पर ऐसा किया गया है। यही
अवधि की सहज प्रकृति की दृष्टि में रहती हुए अनेक ऐसे मान्य पाठों की
स्वीकार नहीं किया है।
- ६- मानस को फारसी पाण्डुलिपियाँ में सामान्यतः संस्कृत के काव्यांश
नहीं मिलती। तुलसी ने संस्कृत को जैसा भाषा में काव्य-रचना करने
लिए कैयक समझा था और अवधि में मानस लिखकर कबोर को संस्कारित
है रूप - वह भाषा क कहता होर ' को परम्परागत वैचारिकता का
निर्वाह किया था। मैं नहीं समझ पाता कि ग्रन्थ को जीवा बढ़ाने के
के लिए तुलसी की धी-भाषा का वाक्य लेना पड़ा ही। बहुत संभव है
कि तुलसी के प्रति बढ़ा रहने वाले संस्कृत वाचार्थों ने मानस की धी-ग्रन्थ
के रूप में स्वीकारते हुए उसे पवित्र, ग्राह्य एवं लौकिक धी-ग्रन्थ बनाने
की दृष्टि से, तुलसीके काव्य-ल्लाह पर संस्कृत काव्यांशों का चंदन
लाना अवहित समझा ही। इस प्रयोग में पुनर्विचार करने की आवश्यक-
कता है। कारण यह है कि तुलसी एक अनवादो कवि थे। उन्होंने अपने
साहित्य को रचना प्रबुद्ध नहीं के लिए नहीं की थी। वे मानस के माध्यम
से सम्पूर्ण देश की जी वंदित देना चाहते थे, वह बोधार्थ, अनभाषा में
ही संभव था।
- ७- प्रस्तुत अध्ययन में शब्द और अर्थ दोनों को ध्यान में रहती हुए इस निष्कर्ष
तक पहुँचा जा सकता है कि मानस को विविध पाण्डुलिपियाँ हैं तुलसी के
पाठानुसंधान को एक स्वस्थ दिशा निकलती है।

मैं समझता हूँ कि देश-विदेश में पुरातन रामचरित मानस की
फारसी पाण्डुलिपियों की मातृश्रीकृत जैसा गौरव प्रतियाँ संकलित
करके तुलसी-हृत इस महान ग्रन्थ की नई सिरी से संपादन करना अभी ठेका है।

अथ वक्ष्यामि



निष्कर्ष
परिशिष्ट

را باقی
دری داس



دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور

دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور
دری داس نام و درستی بکنی درستی زور

‘स’ पाठालिपि का प्रथम पृष्ठ

पाठान्तर - परिशिष्ट - अ

प्रथम सर्पन

१।२३।४३ - क, ख, घ -

परदाय विनि प्रश्न कोन्व जागवत्ति मुनि पाठ ।
प्रथम मुत्स्य संवाद एहि कहिहीं हेतु बुझाव ॥

१।३६।७८ - क, ख, घ -

तब रिणि तुरत गीरि पई गयेऊ ।
बैसि दशा मन विषय्य भयेऊ ॥

१। ख - संय -

मुनु गाव कस्यौ गिरीस कन्या बन्ध अधिकारी सही ।
निच प्रीति नूतन पुनत हरिगुन भक्ति कुपम ते सही ॥
रघुबोर पद कुराग जल लोभाणि बैनि बुझावई ।
बैहि जानि तुलसीदास मन प्रिय बन हरि गुन गावई ।

ख- छरिठा -

१। बाल परिव्र मुभाव बरनी तुलसीदास छित ।
कई मुने सुत पाठ परम पुनीत पवित्र वति ॥

द्वितीय सर्ग

- २।१५१- ब, स -
 एक बार जानकी समैता ।
 बैठे प्रभु निज रुखिर निकैता ॥
- .. मुख प्रतप्य उर न्यन कियाला ।
 पात बसन वन स्याम तमाशा ॥
- .. कीटि मनोब दैति ब्रवि मोहा ।
 साता-कर चामरवर सीहा ॥
- .. तैहि कसहर नररव तहँ बार ।
 सुरक्षित लागि बिरंवि पठार ॥
- .. तेज पुंज करतल बर बीना ।
 हरि गुन गावत बति लय लोना ॥
- .. दैति राम उच्छा उठि बार ।
 करि दँडवत पुन्य मुनि लार ॥
- .. सापर निज बासन बैठारै ।
 जनक गुता तब बरन पखारै ॥
- .. तैहि बहनीयक भसन सिंवार ।
 जा पावन प्रभु सीत बढार ॥
- .. गुन मुनि विनाय निरत वै प्रानो ।
 हम सारिलै देह बभिमानी ॥
- .. तिनकहुं सत संगत तब होई ।
 करहुं कृपा जापर प्रभु होई ॥

२।१५९ ब.स-तार्त नारद मै कह भागी ।

ज्यपि गृह कुटुम्ब कुरागी ॥

२।१५९ ताकी मुनि नार्हो मज जागी ।

जैहि भिनु हेतु संत प्रिय लागी ॥

.. सुन हरि कवन मधुर प्रिय करि बिचार मुनि धोर ।

प्रभु कृपास सद् लोकहित लागि कहत रघुबीर ॥

.. कहि मुनि तब महिमा रघुराया ।

मै जानी कहु तुम्हरी दाया ॥

.. कवन कही प्राकृत को न्यार्ह ।

तार्त नहिं कहु कट्यो गीधार्ह ॥

.. सहज सुभाव प्रनत कुरागी ।

नर तनु क्यो दास हित लागी ॥

.. माया गुन की ग्यान अतीता ।

अजित नाम सौ पावन जाता ॥

.. जैहि सम प्रभु अतिशय कीउ नार्हो ।

क्यापक अब समान सब बाही ।

.. उदर बराबर मैति जी पीवा ।

रुतन-मान लागि सोहि रीवा ॥

.. नाम रूप गुन बरन न कैदा ।

अजित अस्त नैति कह कैदा ॥

२।१५१ ब.स-निर्मल मुक्त निराश्रय जोई ।

दधरप मुत कह गार तौई ॥

०० रूप तप जज्ञ जोग ब्रत दाना ।
विमल विराग ग्यान विग्याना ॥

०० करहि कतन मुनि पाव न कीई ।
देता प्रगट भक्ति कह तौई ॥

०० प्रभु रहि बानि उदा बलि वाई ।
निब लुता का कैर कड़ाई ॥

०० छठ कह छठ साधन बहु करहो ।
भाति छीन भव चिंभु न तरहो ॥

०० जानि सकहु तौ जानहु निर्गुन सगुन सरूप ।
मम किय पैकय भ्रम हव क्यहु राम नर भूप ॥

०० ब्रह्म भवन भ रहै ज्ञयाला ।
नाथब तव गुन दोन-बयाला ॥

०० अधि रीझा उपजो मन नाहो ।
देखै भरन बहुत दिन नाहो ॥

०० कमपि प्रभु सबैत जुगना ।
सगुन रूप मोरै मन माना ॥

०० कथ बलत विरहि मोहि जाना ।
कोन्हो किय लागि मम काना ॥

०० प्रभु जानत सब कतर जायो ।
भात कलत नित्यो रहि स्वायो ॥

२।१५१. क. घ -

बैधि निमित्त लोभ्य मनुष्य क्यतारा ।
नाथ बैधि सी करिव क्यतारा ॥

.. धुनत कवन रघुमति मुमुकाने ।
मुनि अकहूँ बिरंनि मम माने ॥

.. कहेत तात ब्रह्महि समुकाई ।
कहु दिन बोले पैलहु आई ।

.. बार बार बरनन विरु नाई ।
ब्रह्मपानेन न हृदय समारई ॥

.. राम रूप मुनिवर बरु नारद ।
चले करत सुन गान क्यतारद ॥

.. तब रघुमति सोलहि समुकावा ।
बाधत करन सी चरित सीलवा ॥

.. सुरक्षित लागि सी करिव उपारई ।
जाइ क्यनि परिहरि ठकुराई ॥

.. का सम्पन्न अस्मिन्ति लय जाको प्रकृति बिलास ।
सी प्रमु कतन क्यतारत कैहि बिधि निधिबर नाथ ॥

२।१५२।३ क. घ. घ -

गुन खानर नागर भुति नार ।
कई भाग मीरे गृह बाए ॥

.. कै राम उकलै हितकारी ।
सकल सरासत पुर नरनारी ॥

१- पाण्डुलिपि 'व' में 'सकल' के स्थान पर 'कर्त' की पाठ मिलता है जो अधिक उपयुक्त जान पड़ता है क्योंकि दूसरी कड़ी में पुनः 'सकल' शब्द का जाना है। काव्य सौन्दर्य के दृष्टि को ध्यान में रखकर उत्पन्न ही जाती है।

२।२५४।८ व, व, स -

बार बार गनपतिहि निहारे ।
कोवे सकल मनोरथ मारे ॥

.. भुव भुव भुव प्रेरु जाहे ।
मति दुद हीनु मी जिय मंह जाहे ॥

.. 'बो कहु इच्छा हरि मन माही' ।
सो पै हीउ जान कहु नाही ।

२।२५६।१४ - व, व, स -

का सोवसि सोहाग अभिमानो ।
निकट महाभय तव न डरानो ॥

२।२५६।१५ - व, व, स -

वति प्रिय कवन तुम्हउ मोही ।
कहु मंथरा देहु का तोही ॥

२।२५६।१६ - व, व, स -

सुनत कवन मंथरा रिसानो ।
बीसा कवन कपट हत सानो ॥

२।२६१।२८ - व -

'देहु दान तजिहई न तु प्राना' ^२ ।
कवन सुनत भुमति मुमुकाना ॥

१- 'बे' में इस कदाती का पाठ 'जा कहि इच्छा हरि मन माही' तथा 'स' में 'बो कहु इच्छा जा मन माही' है। 'ब' तथा 'स' को जोड़कर 'बे' का पाठ अधिक उचित, सार्थक जान पड़ता है।

२- 'बे' में इस कदाती का पाठ 'देहु दान न तु तजिहई प्राना' तथा 'स' में 'देहु न तजिहई तजई न तु प्राना' है।

२।१६२।२६ - क, स -

संप्रम पुरुषि परा नृप कै ।
काटे पंख परेउ ला कै ॥

००

व -

पुरुषित मुनि परे नृप कै ।
काटेहि पंख परे ला कै ॥

००

क, क, स -

बति झुवाकुत तनु बिह्वल कैषा ।
परि बोरव उठि कैठ नरैषा ॥

००

क, स -

बानी सौं बाधिन जिमि ठाढ़ो ।
पुनि - पुनि सौं तैति बति गाढ़ो ॥

००

व -

बानी सौं बाधिन ज्यौं ठाढ़ो ।
पुनि- पुनि सौं तैति ज्यौं बाढ़ो ॥

२।२१३।२५० क, व, - ईव

भन कवन कर्न कुमायतन कर दास मै धुनु पाहु रो ।
उर कसत राम पुजान जानत प्रीति बस अरु बाहु रो ॥
कव कसत लीचन धवत तनु पुलक नख ललित मरो ।
छिय लास छि बहीरि कनो जानि प्रभु पद रति वही ॥

तृतीय धीपान

३।२७५।२ व, व, स -

बिनु पराच प्रमु छै न काहु ।

असर परी ग्रै छि राहु ॥

०० अब प्रमु लोन्ह रंग प्यु बाना ।

श्रीय जानि मा अस समाना ॥

३।२७६।२ व, व, स -

बिभि बिभि माजत सङ्ग पुत व्याकुल अति दुख दोन ।

तिभि तिभि बायत राम घर पाई परम प्रबोन ॥

०० कबहि उरग बरु ग्रै लीसा ।

रघुपति घर छुटि कब कैंसा ॥

०० दुरहि तै कहि प्रमु प्रमुतारि ॥

मै जात अहु बिभि समुझारि ॥

३।२७७।५ व, व, स -

देखि राम मुनि बिनय प्रनामा ।

झिझिभि माति पारुड बिहरामा ॥

०० व, व, -

जनम जनम प्रमु^१त्त पद^१ कैंदा ।

कहहि प्रेम बकीर बिभि बंदा ॥

१- 'स' वं 'त' पद' के स्थान पर 'पद' दुख' का पाठमिलता है । अर्थ
को दृष्टि से दोनों पाठों में विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता ।

३(२७६।१५ - ब.स -

बाधम विपुल दैति का माहो ।

देव-सदन तैहि पटतर नाहो ।

०० बहु तडुग पुन्दर किराई ।

माति माति बहु मुनिन्ह लाई ॥

०० तैहि दिन प्रभु तई कीन्ह निपासा ।

सकल मुनिन्ह निति दोन्ह सुपासा ॥

०० अरु सोय सब मोखु कीन्हा ।

जो तैहि भाव बुझा बरु दोन्हा ॥

०० तब रघुबीर मुनिन्ह धिरु नाथा ।

बाधिरबाद सबहिं सन पाथा ॥

१० धुमिरि उवा सिव सिद्धि मनेषा ।

पुनि प्रभु बसे धुनहु उरगेषा ॥

०० बन कीक पुन्दर गिरि नाना ।

नाथत बसे बाहिं परावाना ॥

०० रूप भयंकर मानहु काहा ।

बेगिर्वत बारठ जियि व्याहा ॥

०० गजन दैव मुनि किन्वर नाना ।

तैहि का हृष्य शरि कहु माना ॥

०० तरतहि सी सोतहि ते बसेउ ।

राम हृष्य कहु विषय बसेउ ॥

३।२७६।१क - व.स -

समुझा पुण्य^१ 'खुर' को करी ।

कहा खुश धन बहु बिधि बरती ॥

.. बहुरि ललन रघुवरहि प्रबोधा ।

पांच वाम हांडे करि प्रोवा ॥

.. भर कुह लक्ष्मन संधानि खु सर पारि तैहि व्याकुल किया ।

पुनि उठि निधिबर राखि सोतहि सुत ते हाडत मयो ॥

.. खु का कालंड करात पावा बिजल सब लल मुन भर ।

खु तानि भी रघुवर मने पुनि काटि तैहि रज समय किए ॥

.. बहुरि एक सर पारि परा पारि पुनि पाय ।

उठत प्रसन्न पुनि गरज बलै जहाँ रघुनाथ ॥

.. रैखै कहत निहावर पावा ॥

क्य नहि बचत पुनहि सम बावा ॥

.. बाव प्रबल रहि बिधि खु मुखर ।

हीरहि काह कहै व्याकुल धुर ॥

.. तासु तैव सत भरत समाना ।

दूटहि तरुवर उड़हि पानाना ॥

.. जीव जंतु जहं लागि रहं जैत ।

व्याकुल मागि बलै तहं तैत ॥

.. तासु जलिय गाड़ै प्रभु चरनी ।

देवन्द मुदित पुंजुमो बरनी ॥

१- 'स' 'ख' 'खुर' के स्थान पर 'कैयो' का पाठ है ।

३।२०६।१० - ब,घ -

सोता बाध बरन लपटानी ।
कुज ग्रहित पुनि बलै मरानो ॥

०० हर्षा सङ्ग जहं पुनि उरभेता ।
बाएउ सकल दैव निज संगेता ॥

०० गर कहन प्रभु दैव चिहावन ।
दिशि बल भेद कसत जहं रावन ॥

०० सुरपति संध्य तिभिरि सन रघुपति तेव विनैय ।
रावन जीवन निधा सम बोतै हुटहि कसैय ॥

०० सुनाधोर प्रभु तेहि जन देता ।
तेव निधान सुप्र अति बेगता ।

०० सुरम पास बल भरत समाना ।
रथ रवि सम नहिं जाह बलाना ॥

०० क्षिति न परस अन्तरक्षित रज्ज ।
स्वैत बल बापर धिर डरह ॥

०० कुजहिं प्रभुहि कहा समुक्तार्ह ।
सुरपति मरिमा गुन प्रमुक्तार्ह ॥

०० जैहि कारन बासव तहं बायैउ ।
तौ कहु बचन कहन नहिं ठोसी पायैउ ॥

चतुर्थ सर्पान

४।३०४।२ - अ, ब, स

रहिय बीसै रघुबीर कुमारा ।

बिधि कर लिता की पैटन चारा ॥

४।३०६।७ - अ - रघुबीर कृप्य मंह जानहु ।

ममता कीड़ि कहा मम मानहु ॥

४।३०६।९ - अ - राम कहा सब सत्य बुझाई ।

तब सकुमाहि रहा धिरु नहि ॥

४।३१०।२० - अ, ब, स

जौ रघुबीर चरन चित लावै ।

तौहि सम जान न कन्य कहावै ॥

४।३१८।२८ - अ

‘बैसि कहि मुनि बाहुन जौ गयेउ’^१ ॥

तौहि कन कृप्य ग्यान कहु भयेउ ॥

१ - ‘अ’ - उदा राम कर बुनिरन करज^२ ।

‘रहि बिधि’ का जीवत मै रह्य^३ ॥

४।३१८।२९ - अ, ब, स

जौ कीउ करहि राम कर काबु ।

तौहि सम कन्य जान नहि वाबु ॥

१-‘ब’ से मै प्रथम अंशिका का पाठ ‘अब कहि मुनि निब बाहुन गयेऊ’ है ।

२-‘अ’ से मै द्वितीय अंशिका का पाठ ‘रहि बिधि नित का जीवत रह्य’

है ।

पंचम सर्ग

५।३३६।३१ - न - चत्तहि बार कहा मोहि टरो ।

सुधि कराउह बुद्धु सुत कैरो ॥

५।३३७।३४ - व - सुनत कवन प्रभु बहु सुल माना ।

मन कृप कवन दास निजक जाना ॥

५।३४५।५६ - ब - बहु रूप जगिह कृप अति बल सैन बरनत नहि बने ।

स्यामादि मुल गौरादि मुल अरुनादि बरनो की गने ।

बरनादि वायुध मुष्टिका नल दंत कर मुथर धरा ।

रहि भाति प्रभु प्रताप रघुबर दोत ही दसकंधरा ॥

षष्ठ सर्ग

६।३५८।१६ - अ, ब, स -

पंचिन्ह रहित लेपाति कटोठ कवन पर जाह ।

तब सारन कणि राजसन देखे दल समुदाह ॥

आफ प्रशिक्षण :

स-१।३।०।१ राम राम दिस जानकी लखन दाहिनी और ।

ध्यान सकत कल्याण मय तुलसी सरवर तौर ॥

५।३२५।५ ब -

निरखत मंदिर का पुनि ठावा ।

कुम्भकरन धौवत रह ब्रह्मा ॥

बलि अंक तन चित नहि जाई ।

चाँसठ जीवन को चकराई ॥

जीवन लाग लोच के जाना ।

दाह्य जीवन बाहु बजाना ॥

सत्तर जीवन जाँच तेजाई ।

जीवन तीस उदर चकराई ॥

उदर घेर कोऊ निरि कैरा ।

जीवन बोल सोच कर फौरा ॥

दो जीवन भरि नाक जो बाँधी ।

जीवन रज मुँह रह ठाढ़ी ॥

काष्ट मासकी डिडा सीवा परन अंक ।

बाजना लाग जुम्माय तज जागत नहि सिंग ॥

सहायक ग्रन्थों की सूची

- १- मानस अनुसोत्ता (श्री शुम्भुनारायण बाबू) संपादक सुधाकर पाण्डेय,
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं० २०२४
- २- तुलसीदास (एक अनालीबनात्मक अध्ययन) डा० माता प्रसाद गुप्त,
सन् १९५३ ।
- ३- रामचरितमानस - संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, १९६२
- ४- श्री रामचरितमानस - संपादक माता प्रसाद गुप्त, हिन्दुस्तानी एडिटींग,
३० ग्रा० जलालाबाद, १९३६ ।
- ५- रामचरितमानस - संपादक स्वामी सुन्दरदास, संवत् १९८५ ।
- ६- मानस पोयुषा, सं० कंजनी नन्दन शर्मा, गोता प्रेस गोरखपुर,
सं० २०१७ ।
- ७- रामचरित-मानस - विजया, टीका सहित, सं० विजयानन्द त्रिपाठी,
बनारस, सं० २०११ ।
- ८- रामचरितमानस - (टी० रामनरेश त्रिपाठी) दिल्ली, प्र० सं० १९६२ ।
- ९- रामचरितमानस - सिद्धान्त-विलास सहित, सं० श्रीकान्त शर्मा, अटना,
सं० २०१६ ।
- १०- रामचरितमानस - टीका - महावीर प्रसाद आत्माराम, प्रयाग,
संवत् १९८२ ।
- ११- तुलसी ग्रन्थावली - दूसरा खण्ड, तीसरा संस्करण, सं० रामचन्द्र शुक्ल,
जादि नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं० २००४ ।